जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम
मध्यप्रदेश

# अवसर

## करियर मार्गदर्शिका

यू एन एफ पी ए, मध्यप्रदेश के सहयोग से भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इंदौर मध्यप्रदेश द्वारा निर्मित

# अवसर

## करियर मार्गदर्शिका

**© सर्वाधिकार सुरक्षित**

मार्गदर्शिका का पूर्ण/आंशिक उपयोग यू एन एफ पी ए मध्यप्रदेश की लिखित अनुमति प्राप्त करके किया जा सकता है।

**मार्गदर्शिका निर्माण में सहयोगी संस्थाएं -**

**यू एन एफ पी ए**
मध्यप्रदेश

**भारतीय ग्रामीण महिला संघ**
इंदौर, मध्यप्रदेश

# मार्गदर्शिका के बारे में

## भूमिका

प्रायः विद्यार्थियों के मन में कक्षा 9वीं से 12वीं तक की पढ़ाई के दौरान ही इस प्रकार के प्रश्न उठने लगते हैं कि वे अपना करियर बनाने के लिए किस विषय का चयन करें? स्कूली शिक्षा पूर्ण करने के बाद वे किस कॉलेज में प्रवेश लें? किस विषय की पढ़ाई उनकी रुचि के अनुरूप करियर बनाने में मददगार होगी? पढ़ाई में लगने वाला व्यय क्या उनकी आर्थिक क्षमताओं के अनुकूल होगा? क्या उस क्षेत्र के करियर चयन में उनका भविष्य सुरक्षित रहेगा? उन्हें किस तरह की नौकरियों के अवसर उपलब्ध होंगे? क्या उन्हें उस करियर चयन में सफलता और जॉब संतुष्टि मिल सकेगी?

प्रायः इस प्रकार के प्रश्नों पर विद्यार्थी समय-समय पर आपस में अपने मित्रों से, परिजनों से, जान-पहचान वालों से और अपने शिक्षकों से भी विचार-विमर्श करते रहते हैं। उन्हें हर व्यक्ति अपने अनुसार अलग-अलग राय देते हैं। ऐसे समय यह जानना भी बहुत जरूरी है कि विद्यार्थी की स्वयं की रुचि और रुझान किस क्षेत्र में अधिक है। यदि विद्यार्थी अपनी बौद्धिक क्षमताओं, अपनी रुचि, अपने व्यक्तित्व और अपने कौशल (एप्टीट्यूड) को ध्यान में रखकर इनके अनुरूप अपने करियर का चयन करे तो निश्चित ही भविष्य में उसे सफलता और संतोष (जॉब सेटिसफेक्शन) मिलने की संभावना रहती है। विद्यार्थी अपनी कक्षा 9वीं से 12वीं की पढ़ाई के दौरान जिस दौर से गुजर रहे होते हैं उस समय उनके भविष्य के लिए करियर चयन हेतु यह मार्गदर्शिका सहायक सिद्ध होगी।

## उद्देश्य

इस मार्गदर्शिका के निर्माण का मुख्य उद्देश्य कक्षा 9वीं से 12वीं के विद्यार्थियों को उनके करियर निर्माण हेतु विभिन्न क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक आवश्यक जानकारी और मार्गदर्शन उपलब्ध कराना है। इन जानकारियों को 16 अलग-अलग कार्यक्षेत्रों के माध्यम से विशेष रूप से तैयार किया गया है ताकि वे अपने लिए आवश्यक जानकारी सुगमता से पा सकें।

- **कार्यक्षेत्र (Sector)**: इस मार्गदर्शिका में 16 प्रकार के कार्यक्षेत्रों के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है। इन प्रत्येक कार्यक्षेत्र से जुड़े विभिन्न कोर्सेस, एवं कौन-कौन से संस्थान या कॉलेज या विश्वविद्यालयों में ये कोर्स उपलब्ध हैं इसकी जानकारी दी गई है (यद्यपि समस्त कॉलेजों की सूची इस मार्गदर्शिका में देना सम्भव नहीं था, अतः कुछ प्रमुख कॉलेजों के नाम उनके कोर्सेस के साथ दिए गए हैं।) कोर्स करने के बाद कार्य करने के अवसरों के बारे में भी पर्याप्त जानकारी दी गई है। मार्गदर्शिका का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल विभिन्न कोर्सेस की जानकारी देना मात्र नहीं है बल्कि इससे उन्हें बेहतर करियर विकल्प खोजने/चयन करने में भी मदद मिलेगी यह उद्देश्य महत्वपूर्ण है।
- **सफलता की कहानियाँ (Success Stories)**: इस मार्गदर्शिका में मध्यप्रदेश के ग्रामीण एवं शहरी अंचलों की कुछ प्रतिभाओं की सफलता की प्रेरक कहानियाँ भी दी गई हैं जिनसे प्रेरणा लेकर विद्यार्थी अपने करियर निर्माण की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं। इससे विद्यार्थी समझ सकेंगे कि किसी

भी कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए किन-किन प्रयासों की आवश्यकता होती है। इससे उनमें आत्मविश्वास पैदा होगा कि वे भी किसी भी विषम परिस्थिति में अपना करियर बना सकते हैं।

आशा है, विद्यार्थी इन जानकारियों का उपयोग अपने लिए करियर का चुनाव करते समय अवश्य करेंगे और अपने करियर निर्माण के दौरान इनसे लाभान्वित होंगे।

**करियर क्या है?**

करियर का तात्पर्य 'आत्मसंतुष्टि के साथ जीविकोपार्जन के साधन' से है। सामान्य रूप से इसी हेतु व्यक्ति कोई व्यवसाय, पेशा या नौकरी करता है।

**करियर चयन हेतु :**

करियर की ओर बढ़ने के लिए सबसे पहला कदम करियर का चयन होता है। करियर चयन के समय विद्यार्थी यह सोचते हैं कि उनके मित्र कौन सा विकल्प चुन रहे हैं, उनके माता-पिता या शिक्षक को कौन सा विकल्प सही लग रहा है या पढ़ाई में उनके अंक किस विषय में ज्यादा प्राप्त होते हैं, किन्तु इनसे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है स्वयं के बारे में निम्न बातें सोचना व समझना -

- **रुचि (Interest)** जिस विषय में विद्यार्थियों की रुचि या रुझान होगा उसमें ही वे ध्यान केन्द्रित कर लगन व मेहनत से कार्य करेंगे। रुचियाँ जन्मजात एवं अर्जित दोनों होती हैं तथा समय व आवश्यकता के साथ-साथ बदलती भी रहती हैं। यदि किसी विषय में रुचि है तो करियर के दौरान विद्यार्थी मन लगाकर कार्य करते हैं और आने वाली विभिन्न परिस्थितियों का सामना कुशलता से कर पाते हैं ।
- **क्षमता/कौशल (Aptitude):** विद्यार्थी में किसी विशेष कार्य को कर सकने की शारीरिक एवं मानसिक क्षमता या कौशल उसके करियर में सफलता पाने का एक आवश्यक अंग है। यह क्षमता और कौशल प्रायः जन्मजात होते हैं परन्तु शिक्षा और अभ्यास द्वारा उन्हे सुदृढ़ किया जा सकता है।
- **व्यक्तित्व (Personality):** प्रत्येक विद्यार्थी में कोई न कोई ऐसी विशेषता या गुण होते हैं जिनके कारण उनके व्यक्तित्व दूसरों से भिन्न होते हैं। किसी भी व्यक्ति के रूप, गुण, अभिरुचि, व्यवहार, सामर्थ्य व योग्यता के आधार पर ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। परिवेश के प्रभाव से व्यक्तित्व में बदलाव भी आ सकते हैं। हर व्यक्ति के आचार-विचार, व्यवहार, क्रियाएं और गतिविधियों के माध्यम से उसका व्यक्तित्व झलकता है जो उसके करियर के दौरान सफल होने की महत्वपूर्ण सीढ़ी है।
- **बौद्धिक क्षमता (Intelligence):** ज्ञान और कौशल प्राप्त करने और उनके उपयोग करने की क्षमता को बौद्धिक क्षमता कहते हैं। विद्यार्थी अपनी बौद्धिक क्षमताओं के आधार पर ही किसी भी विषय को समझने, उसके साथ आपसी तालमेल बैठाने एवं उसका तर्कपूर्ण विश्लेषण करने में समर्थ होते हैं। यह बौद्धिक क्षमता ही उनके करियर के दौरान नवीन परिस्थितियों को समझने और उसके साथ अनुकूल होने में उनकी मदद करती है।

विद्यार्थी उपरोक्त बातें समझ-बूझकर ही यह निर्णय लें कि उसे स्वयं के लिए कौन से करियर विकल्प ज्यादा उचित लग रहे है। इस हेतु, विद्यार्थी को यह पता लगाना चाहिए कि उनके पास कौन-कौन से

विकल्प उपलब्ध हैं। इसके लिए अखबार, पुस्तिकाएं, विभिन्न प्रकार के कार्य करने वाले व्यक्ति, इन्टरनेट किताबों आदि की सहायता ले सकते हैं।

विभिन्न विकल्पों की जानकारी लेने के बाद विद्यार्थी स्वयं के लिए अपनी रुचि, अभिक्षमता, अपने व्यक्तित्व और बौद्धिक क्षमता के आधार पर स्वयं के लिए एक करियर विकल्प और एक बैकअप करियर विकल्प चुनें।

**करियर की योजना बनाना (करियर प्लानिगं) :**

करियर विकल्प के चयन के बाद यह बहुत जरूरी है कि चयनित करियर के संदर्भ में निम्न प्रश्नों के उत्तर खोजे जाएं :

1. चयनित करियर से संबंधित कोर्स कौन-कौन से हैं व उनकी आर्थिक लागत कितनी होती है?
2. यह कोर्स कौन से कॉलेज में व कौन से शहरों में पढ़ाए जाते हैं?
3. इन कॉलेजों में प्रवेश कैसे लिया जाता है? प्रवेश हेतु, शैक्षणिक योग्यता क्या है?
4. चयनित करियर में वेतन व प्रगति की संभावनाएं क्या होंगी?
5. यदि चयनित करियर विकल्प में सफलतापूर्वक विकल्प नहीं बना पाएं तो दूसरा ऐसा कौन सा करियर विकल्प है जिसे विद्यार्थी चुन सकते हैं।

इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के लिए भी विद्यार्थी अपने अभिभावक, शिक्षक, इंटरनेट, अखबार, एवं पुस्तकों की सहायता ले सकते हैं। इन उत्तरों के बाद विद्यार्थी स्वयं के लिए करियर तक पहुँचने का एक मार्ग/मानचित्र तैयार करें। इससे वें अपने करियर की ओर बढ़ने हेतु (प्रवेश परीक्षा की तैयारी, विषयों का चयन आदि के रूप में) पहला कदम उठा सकते हैं व उस पर अमल करके वे उपयुक्त करियर की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

**मार्गदर्शिका का लाभ कैसे लें :**

मार्गदर्शिका में विद्यार्थियों को उनके करियर चयन में मार्गदर्शन के लिए विभिन्न 16 प्रकार के प्रमुख कार्यक्षेत्रों (Sectors) के विकल्प दिए गए हैं। विद्यार्थी अपनी रुचि के कार्यक्षेत्र के अध्याय में कोर्स से संबंधित आवश्यक जानकारी जैसे कोर्स का परिचय, कोर्स का पाठ्यक्रम कितने वर्ष का है, उसमें दाखिल होने या प्रवेश परीक्षा के लिए आवश्यक मापदण्ड क्या हैं, कोर्स प्रदेश में और प्रदेश के बाहर किन-किन संस्थानों में या यूनिवर्सिटी में उपलब्ध है तथा कोर्स के बाद जॉब के क्या अवसर उपलब्ध हो सकते हैं इस संबंध में जान सकते है। ये प्रमुख कार्यक्षेत्र हैं - कॉमर्स, विज्ञान, कृषि, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, मास कम्यूनिकेशन/जनसंचार, डिजाइन, कला, हॉस्पिटैलिटी एंड टूरिज्म, प्रबंधन, कानून, शिक्षा, सामाजिक विज्ञान और मानव विज्ञान, सोशल सर्विस, सिविल सर्विसेस, उद्यमिता। इससे विद्यार्थियों को अपने लिए उपयुक्त करियर चयन करने में सुविधा होगी।

यह उल्लेखनीय है कि दिए गए कार्यक्षेत्रों के अतिरिक्त भी कई अन्य कार्य क्षेत्र व कोर्सेस हो सकते हैं। कई तरह के व्यावसायिक और तकनीकी कोर्सेस भी उपलब्ध हैं किन्तु एक ही पुस्तिका में सभी का समावेश करना संभव नहीं था। अतः इनके बारे में जानकारी प्रस्तुत करियर मार्गदर्शिका 'अवसर' में उपलब्ध नहीं कराई जा सकी है।

# अभिभावकों व शिक्षकों से

प्रिय अभिभावक एवं शिक्षकगण,

इस पत्र के माध्यम से आपसे सहयोग की अपेक्षा है। जीवन के इस पड़ाव पर विद्यार्थी करियर चयन के लिए ऐसे दोराहे पर खड़े रहते हैं जहाँ वे यह निर्णय नहीं ले पाते कि वे किस दिशा में कदम बढ़ाएं, अपने करियर की कौन सी राह चुनें? इस मार्गदर्शिका में दी गई करियर संबंधित जानकारी आपको अपने बच्चे के लिए उसकी रुचि, रुझान, क्षमता और व्यक्तित्व के अनुरूप करियर चयन में मदद करेगी।

निश्चित रूप से इस मार्गदर्शिका का उद्देश्य तभी पूर्ण हो सकेगा जब इस दिशा में आपका भी सहयोग बच्चों को प्राप्त हो सके। अगर आप अपनी पसंद या इच्छा के अनुसार अपने बच्चे को उसके करियर का चुनाव करने के लिए बाध्य करते हैं तो हो सकता है वह उसके लिए अरुचिकर व जटिल साबित हो या उसकी शारीरिक व मानसिक क्षमता के अनुकूल न हो तो संभव है इस कारण उसे अपने करियर में असफल होने का भय सता सकता है। अतः अपनी पसंद या नापसंद बच्चों पर न थोपें।

करियर का चुनाव करते समय इस बात का भी ध्यान रखें कि जिस विषय या क्षेत्र का चुनाव आप करने जा रहे हैं उसमें आपके बच्चे की वास्तव में कोई रुचि है भी या आप उस कोर्स को सिर्फ इसलिए चुन रहे हैं कि आजकल उसी का प्रचलन है? या फिर आपके किसी परिचित ने/मित्र ने आपको अपने बच्चे के लिए वही करियर चुनने का सुझाव दिया है? जरूरत तो इस बात की है कि किसी भी विषय/क्षेत्र का चयन करने से पहले उसकी विस्तृत जानकारी एकत्र कर ली जाए और उसके बाद ही आप अपने बच्चे को करियर सम्बन्धी उचित सुझाव दें।

यदि आप शिक्षक हैं तो एक शिक्षक होने के नाते यहाँ आपकी भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी बन जाती है कि आप करियर सम्बन्धी विभिन्न क्षेत्रों पर अपने विद्यार्थियों से विचार-विमर्श करें, उन्हें अधिक से अधिक जानकारी जुटाने में मदद करें। हर विद्यार्थी को उसकी रुचि, सामर्थ्य, योग्यता और व्यक्तित्व के अनुकूल करियर चयन करने में और किसी एक निर्णय तक पहुँचने में उसकी यथासंभव मदद करें।

बच्चों के अभिभावकों एवं शिक्षकों से यही अपेक्षा है कि आप अपनी इस महती जिम्मेदारी का वहन अपने बच्चों के भविष्य को ध्यान में रखकर सफलतापूर्वक करेंगे। इसी आशा एवं विश्वास के साथ यह मार्गदर्शिका आपको सौंपी जा रही है...।


### अस्वीकरण (डिस्क्लेमर)

करियर मार्गदर्शिका '**अवसर**' में सम्मिलित समस्त करियर क्षेत्र व कोर्स के विषय में प्रमुख जानकारी को आपके संदर्भ हेतु, प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, किन्तु इनसे सम्बन्धित विस्तृत जानकारी आप वेबसाइट या अन्य माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। गाइडलाइन व निर्देशों में अक्सर परिवर्तन होते रहते हैं। अतः किसी भी कोर्स से सम्बन्धित नवीनतम गाइडलाइन व निर्देशों का अनुपालन अवश्य करें।

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 01 | वाणिज्य (कॉमर्स) | 08 |
| 02 | विज्ञान (साइंस) | 22 |
| 03 | कृषि (एग्रीकल्चर) | 47 |
| 04 | स्वास्थ्य (हेल्थ) | 61 |
| 05 | इंजीनियरिंग | 82 |
| 06 | जनसंचार (मास कम्युनिकेशन) | 107 |
| 07 | डिजाइन | 113 |
| 08 | परफार्मिंग आर्ट्स | 122 |
| 09 | हॉस्पिटैलिटी एण्ड टूरिज्म मैनेजमेंट | 130 |
| 10 | प्रबन्धन (मैनेजमेंट) | 141 |
| 11 | विधि (लॉ) | 149 |
| 12 | शिक्षा (एजुकेशन) | 155 |
| 13 | सामाजिक विज्ञान और मानव विज्ञान (ह्यूमेनिटीज़) | 165 |
| 14 | सोशल सर्विस | 178 |
| 15 | सिविल सर्विसेस व डिफेन्स सर्विसेस | 183 |
| 16 | उद्यमिता (एंटरप्रेन्योरशिप) | 200 |

# कामर्स

# वाणिज्य (कॉमर्स)

उत्पादों को बेचने और खरीदने से संबंधित सेवाएँ एवं गतिविधियाँ कॉमर्स (वाणिज्य) के अन्तर्गत आती हैं। इसमें इनसे जुड़ी कानूनी, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और तकनीकी प्रणालियाँ भी शामिल हैं। किसी भी वस्तु या सेवा को खरीदना/बेचना कॉमर्स के अन्तर्गत आता है।

कॉमर्स का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है, जिसके अन्तर्गत कई विषय जैसे बैंकिंग, टेक्सेशन, इंश्योरेंस, अकाउंटिंग, अर्थशास्त्र, मार्केटिंग, फोरम ट्रेड आदि आते हैं। आज के नवाचार के दौर में इन विषयों के विशेषज्ञों के लिए अनेक कार्यक्षेत्रों में करियर विकसित करने के अवसर उपलब्ध हैं। जो विद्यार्थी इन विषयों से संबंधित कार्यक्षेत्रों से जुड़ना चाहते हैं, उनके लिए कक्षा 10वीं के बाद कॉमर्स संकाय से जुड़े विषय लेना लाभदायी होगा।

### फायनेंस एडवाइज़र मोहित पाटीदार

मैं, मोहित पाटीदार, धार जिला म.प्र. के मनावर विकासखण्ड के एक छोटे से गाँव जोतपुर में पला-बढ़ा। प्रारंभिक शिक्षा वहीं हुई। हायर सेकेण्डरी की शिक्षा मनावर विकासखण्ड जाकर की। आगे की पढ़ाई के लिए परिवार ने उत्साहपूर्वक मुझे इंदौर भेजा। मैंने 12वीं कक्षा में कॉमर्स विषय लिया क्योंकि मेरी रुचि वित्तीय लेखन में थी। कक्षा 12वीं उत्तीर्ण करने के बाद मैंने इंदौर के ही श्री वैष्णव कॉलेज ऑफ कॉमर्स से बी कॉम किया। मैं कॉमर्स क्षेत्र में ही अपना करियर बनाना चाहता था इसलिए अपने प्रोफेसर्स से मार्गदर्शन पाकर मैंने सीएस की तैयारी शुरू कर दी और साथ ही एम कॉम भी पास कर लिया। इसके बाद मैंने आईसीआईसीआई बैंक की परीक्षा दी। आज मैं इसी बैंक में फायनेंस एडवाइज़र हूँ और सीएस भी कर रहा हूँ। मुझे खुशी है कि मैंने अपनी रुचि के क्षेत्र में ही अपना करियर बनाया है।

## कोर्स का नाम - बीकॉम ऑनर्स/जनरल

स्नातक स्तर पर वाणिज्य में बीकॉम एक डिग्री कोर्स है। इस कोर्स में कई विशेषज्ञताएं होती हैं जिन्हें विद्यार्थी अपनी रुचि/चयनित करियर अनुसार चुन सकते हैं। साथ ही यह कोर्स बिना किसी विशेषज्ञता लिए भी किया जा सकता है। इसमें विद्यार्थी वाणिज्य, लेखांकन, फाइनेंस, बिजनेस आदि के सिद्धांतों की समझ विकसित करते हैं। कई विद्यार्थी इस कोर्स को करने के साथ-साथ CA, CS जैसी परीक्षाओं की तैयारी भी करते हैं। इस कोर्स के बारे में जानकारी निम्नानुसार है -

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीकॉम ऑनर्स/जनरल |
| **कोर्स के बारे में** | यह एक स्नातक पाठ्यक्रम है जिसकी अवधि 3 वर्ष है। इसे नियमित या पत्राचार माध्यम से किया जा सकता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | इस क्षेत्र में प्रवेश लेने के लिए विद्यार्थी का वाणिज्य विषय में कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर सेंट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर<br>• एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना<br>• कॉस्मिक बिजनेस स्कूल, नई दिल्ली<br>• बिलासपुर विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स के बाद विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के कार्य कर सकते हैं, जैसे -<br>• विभिन्न प्रकार की कंपनियों में लेखापाल, बजट विश्लेषक, व्यापार परामर्शदाता, बजट विश्लेषक के रूप में।<br>• विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षक के रूप में<br>• कर सहायक के रूप में।<br>• फायनेंस टेक्सेशन, अकाउंटिंग से संबंधित प्रोफेशनल कोर्सेस भी कर सकते हैं।<br>• यह डिग्री प्राप्त करने के उपरान्त कई विद्यार्थी CA, CSऔर CFA जैसी परीक्षाएँ भी दे सकते हैं। |

# टेक्सेशन (कराधान)

जब भी हम किसी वस्तु या सेवा का उपभोग करते हैं, तो देय राशि का एक अंश सरकार को टैक्स के रूप में दिया जाता है। यह राशि सरकार देश के लिए कार्य करने (जैसे सड़कों का निर्माण, विद्युत और जल सेवाएँ, राष्ट्रीय सुरक्षा आदि) में इस्तेमाल करती है। जिस प्रणाली द्वारा सरकार जनता या संस्थानों से कर (टैक्स) लेती है उसे टेक्सेशन या कराधान कहा जाता है। कराधान की एक गहरी समझ प्रत्येक कम्पनी के लिए आवश्यक होती है; साथ ही कराधान विशेषज्ञ अपनी सेवाएँ विभिन्न कंपनियों अथवा व्यक्तियों को एक कर सलाहकार के रूप में भी प्रदान कर सकते हैं।

## कोर्स का नाम : बी कॉम टेक्सेशन (कराधान)

बी कॉम कराधान डिग्री कोर्स विद्यार्थी को कराधान, वित्त और लेखा में एक पेशेवर योग्यता के लिए तैयार करता है और कराधान, लेखा और वित्त के क्षेत्र में एक ठोस आधार प्रदान करता है। इस कोर्स में विद्यार्थियों को सीमा शुल्क, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क और धन कर इत्यादि जैसे अप्रत्यक्ष करों के विवरण से अवगत कराया जाता है। यह कोर्स विद्यार्थियों को लेखांकन, विपणन सेवाओं, बैंकिंग और वित्तीय संस्थानों में काम करने के लिए सक्षम बनाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बी कॉम टेक्सेशन |
| **कोर्स के बारे में** | यह एक स्नातक पाठ्यक्रम है, जिसकी अवधि 3 वर्ष है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | विद्यार्थी का वाणिज्य विषय या विज्ञान में कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर सेंट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर<br>• एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, आंध्रप्रदेश<br>• बिलासपुर विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स के बाद विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के कार्य कर सकते हैं, जैसे -<br>• विभिन्न प्रकार की कंपनियों में लेखापाल, बजट विश्लेषक, व्यापार परामर्शदाता आदि<br>• विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में अध्यापक के रूप में कर सहायक के रूप में |

| | |
|---|---|
| | • फाईनेंस टेक्सेशन, एकाउंटिंग से संबंधित प्रोफेशनल कोर्सेस भी कर सकते हैं<br>• यह डिग्री प्राप्त करने के उपरान्त कई विद्यार्थी CA, CS और CFA जैसी परीक्षाएँ भी दे सकते हैं। |

# एकाउंटेंसी (लेखांकन)

एकाउंटेंसी या लेखांकन आर्थिक संस्थाओं जैसे कि व्यवसायों और निगमों के बारे में वित्तीय जानकारी का माप, प्रसंस्करण और संचार है। प्रत्येक संस्था में एक लेखापाल होता है जो लेखांकन का विशेषज्ञ होता है। लेखापाल बनने के लिए 12वीं में कॉमर्स संकाय से पढ़ाई करके (एकाउंटेंसी विषय लेकर) बीकॉम से स्नातक करना अनिवार्य है। अधिकतर लेखापाल इसके बाद कुछ लघु अवधि के कोर्स या अकाउंटेंसी में एमकॉम भी करते हैं, जिससे उन्हें किसी एक क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त हो सके। लेखापाल न सिर्फ संस्थाओं में कार्यरत होते हैं, बल्कि वे अक्सर चार्टर्ड अकाउंटेंट के साथ भी कार्य करते हैं।

## कोर्स का नाम : चार्टर्ड अकाउंटेंट

चार्टर्ड अकाउंटेंट एक अन्तर्राष्ट्रीय लेखा पदनाम है, जो कुछ अकाउंटिंग प्रोफेशनल्स को उनके देश की सरकार द्वारा दिया जाता है। यह पदनाम मिलना यह दर्शाता है कि प्राप्तकर्ता टैक्स के रिटर्न फाइल करने में विभिन्न संस्थाओं के फाइनेंस स्टेटमेंट का अंकेक्षण करने में एवं संस्थाओं/व्यक्तियों को परामर्श देने में सक्षम है। भारत में यह पदनाम इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (ICAI) द्वारा दिया जाता है।

चार्टर्ड अकाउंटेंट बनने के लिए ICAI द्वारा कोर्स संचालित किए जाते हैं। चार्टर्ड अकाउंटेंट बनने के लिए ICAI दो प्रकार के कोर्स संचालित करता है, पहला जिसमें 12वीं के बाद ही दाखिला लिया जा सकता है और दूसरा, जिसे कॉमर्स में स्नातक या स्नातकोत्तर करने के बाद किया जा सकता है।

## चार्टर्ड एकाउंटेंसी : फाउंडेशन कोर्स रूट

यह कोर्स ICAI द्वारा कुछ ही वर्ष पहले शुरू किया गया है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थी दैनिक रूप से कक्षा में जाकर पढ़ाई नहीं करते। इसकी जगह पाठ्यक्रम की पढ़ाई स्वतंत्र रूप से करके परीक्षा देते हैं। इस प्रकार, विद्यार्थी को तीन स्तर पर परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के साथ ही 3 वर्ष का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | चार्टर्ड एकाउंटेंसी : फाउंडेशन कोर्स रूट |
| **शैक्षणिक योग्यता** | किसी भी मान्यता प्राप्त बोर्ड से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। |
| **कोर्स के चरण** | • 12वीं की परीक्षा के बाद बोर्ड ऑफ स्टडीज (BOS) में रजिस्टर करें। |

| | |
|---|---|
| | • चार महीने के स्टडी पीरियड के बाद परीक्षा के लिए रजिस्टर करें (अर्थात् 30 जून या 31 दिसम्बर तक) रजिस्टर करें।<br>• नवम्बर/मई में संचालित होने वाली फाउंडेशन कोर्स की परीक्षा दें।<br>• फाउंडेशन कोर्स की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इंटरमीडिएट कोर्स के लिए रजिस्टर करें।<br>• 8 माह के स्टडी पीरियड के बाद इंटरमीडिएट कोर्स की परीक्षा दें और दोनों या एक ग्रुप की परीक्षा में उत्तीर्ण हों।<br>• चार सप्ताह का इंटीग्रेटेड कोर्स ऑन इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड सॉफ्ट स्किल्स (ICITSS) को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रारंभ होने से पहले पूर्ण करें।<br>• तीन वर्ष का व्यावहारिक प्रशिक्षण लें।<br>• फाइनल कोर्स के लिए रजिस्टर करें। (फाइनल कोर्स के लिए रजिस्टर करने के लिए इंटरमीडिएट कोर्स की सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।)<br>• चार सप्ताह का एडवांस्ड इंटीग्रेटेड कोर्स ऑन इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड सॉफ्ट स्किल्स (AICITSS) को व्यावहारिक प्रशिक्षण के अंतिम 2 वर्षों में, फाइनल परीक्षा के पहले पूर्ण करें।<br>• व्यावहारिक प्रशिक्षण के अंतिम 6 माह में फाइनल परीक्षा दें।<br>• व्यावहारिक प्रशिक्षण पूर्ण करें।<br>• फाइनल कोर्स के दोनों ग्रुप्स की परीक्षा में उत्तीर्ण हों।<br>• ICAI के सदस्य बनें (CA बनें)। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | कोर्स के फॉर्म्स www.icai.org पर उपलब्ध हैं। साथ ही सेन्ट्रल इंडिया रीजनल काउंसिल ऑफ द इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट इंडिया (CIRC of ICAI) के ऑफिस मध्यप्रदेश के निम्न शहरों में स्थित है -<br>• भोपाल ब्रांच ऑफ CIRC, भोपाल<br>• ग्वालियर ब्रांच ऑफ CIRC, ग्वालियर<br>• इन्दौर ब्रांच ऑफ CIRC, इन्दौर<br>• जबलपुर ब्रांच ऑफ CIRC, जबलपुर<br>• रतलाम ब्रांच ऑफ CIRC, रतलाम<br>• उज्जैन ब्रांच ऑफ CIRC, उज्जैन |

| | |
|---|---|
| **ICAI के ऑफिस** | भारत में ICAI के ऑफिस विभिन्न शहरों में हैं। रीजनल ऑफिस -<br>• कानपुर (सेंट्रल रीजन), उत्तरप्रदेश<br>• दिल्ली (नार्दर्न रीजन)<br>• मुम्बई (वेस्टर्न रीजन), महाराष्ट्र<br>• कोलकाता (ईस्टर्न रीजन), पश्चिम बंगाल<br>• चेन्नई (सदर्न रीजन), तमिलनाडु में स्थित है। |
| **कोर्स के बाद अवसर** | • यह कोर्स करने के बाद विद्यार्थी CA के रूप में अपनी सेवाएँ विभिन्न कंपनियों और व्यक्तियों को देते हैं। अधिकतर विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से ही कार्य करते हैं।<br>• इसके अलावा ICAI और भी कुछ कोर्स संचालित करती है, जिन्हें CA बनने के बाद लोग विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए करते हैं। |

## चार्टर्ड एकाउंटेंसी : डायरेक्ट रूट

ICAI यह कोर्स कई वर्षों से संचालित कर रही है। इस कोर्स में दाखिला लेने के लिए विद्यार्थी के पास कॉमर्स में स्नातक या स्नातकोत्तर डिग्री होना अनिवार्य है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को दैनिक रूप से कक्षा में जाकर पढ़ाई नहीं करनी पड़ती है। इसकी जगह पाठ्यक्रम की पढ़ाई स्वतंत्र रूप से करके परीक्षा देते हैं। इस प्रकार विद्यार्थी को दो स्तर पर परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के साथ ही 3 वर्ष का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | चार्टर्ड एकाउंटेंसी : डायरेक्ट रूट |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • कॉमर्स संकाय से स्नातक या स्नातकोत्तर में मान्यता-प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण।<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया या इंस्टिट्यूट ऑफ कास्ट अकाउंटेंट ऑफ इंडिया से इंटरमीडिएट लेवल की परीक्षा में उत्तीर्ण। |
| **कोर्स के चरण** | • बोर्ड ऑफ स्टडीज (BOS), ICAI में इंटरमीडिएट कोर्स के लिए रजिस्टर करें।<br>• चार सप्ताह का इंटीग्रेटेड कोर्स ऑन इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड सॉफ्ट स्किल्स (ICITSS) को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रारंभ होने से पहले पूर्ण करें।<br>• तीन वर्ष का व्यावहारिक प्रशिक्षण लें। |

| | |
|---|---|
| | • व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रारंभ होने के 9 माह बाद इंटरमीडिएट कोर्स की परीक्षा दें।<br>• फाइनल कोर्स के लिए रजिस्टर करें। इसके लिए इंटरमीडिएट कोर्स की सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।<br>• चार सप्ताह का एडवांस्ड इंटीग्रेटेड कोर्स ऑन इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड सॉफ्ट स्किल्स (AICITSS) को व्यावहारिक प्रशिक्षण के अंतिम 2 वर्षों में फाइनल परीक्षा के पहले पूर्ण करें।<br>• व्यावहारिक प्रशिक्षण के अंतिम 6 माह में फाइनल परीक्षा दें।<br>• व्यावहारिक प्रशिक्षण पूर्ण करें।<br>• फाइनल कोर्स के दोनों ग्रुप्स की परीक्षा में उत्तीर्ण हों।<br>• ICAI के सदस्य बनें (CA बनें)। |
| **मध्यप्रदेश स्थित CIAI सेंटर** | कोर्स के फॉर्म्स www.icai.org पर उपलब्ध हैं। साथ ही सेन्ट्रल इंडिया रीजनल काउंसिल ऑफ द इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट इंडिया (CIRC of ICAI) के ऑफिस मध्यप्रदेश के निम्न शहरों में स्थित हैं -<br>• भोपाल ब्रांच ऑफ CIRC, भोपाल<br>• ग्वालियर ब्रांच ऑफ CIRC, ग्वालियर<br>• इन्दौर ब्रांच ऑफ CIRC, इन्दौर<br>• जबलपुर ब्रांच ऑफ CIRC, जबलपुर<br>• रतलाम ब्रांच ऑफ CIRC, रतलाम<br>• उज्जैन ब्रांच ऑफ CIRC, उज्जैन |
| **ICAI के ऑफिस** | भारत में ICAI के ऑफिस विभिन्न शहरों में हैं। रीजनल ऑफिस -<br>• कानपुर (सेंट्रल रीजन), उत्तरप्रदेश<br>• दिल्ली (नार्दर्न रीजन)<br>• मुम्बई (वेस्टर्न रीजन), महाराष्ट्र<br>• कोलकाता (ईस्टर्न रीजन), पश्चिम बंगाल<br>• चेन्नई (सदर्न रीजन), तमिलनाडु में स्थित है। |
| **कोर्स के बाद अवसर** | • यह कोर्स करने के बाद विद्यार्थी CA के रूप में अपनी सेवाएँ विभिन्न कंपनियों और व्यक्तियों को देते हैं। अधिकतर विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से ही कार्य करते हैं।<br>• इसके अलावा ICAI और भी कुछ कोर्स संचालित करती है जिन्हें CA बनने के बाद लोग विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए करते हैं। |

## कोर्स का नाम : कॉस्ट एंड मैनेजमेंट एकाउंटेंसी

कॉस्ट एंड मैनेजमेंट अकाउंटिंग किसी भी व्यवसाय के बजट की योजना और नियंत्रण की प्रक्रिया है। यह लेखांकन का एक रूप है जो किसी व्यवसाय को बजट के पार जाने की संभावना को कम करने में मदद करता है। इसके लिए आगामी समय में होने वाले व्यय का अनुमान लगाकर उसकी इस प्रकार योजना बनाई जाती है कि अधिकतम बचत हो और खर्च बजट के पार न जाए। यह डिग्री/पदनाम द इंस्टिट्यूट ऑफ कॉस्ट एकाउन्टेंटस् ऑफ इंडिया द्वारा दिया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | कॉस्ट एंड मैनेजमेंट अकाउंटेंसी |
| **कोर्स के बारे में** | इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को दैनिक रूप से कक्षा में जाकर पढ़ाई नहीं करनी पड़ती है। इसकी जगह पाठ्यक्रम की पढ़ाई स्वतंत्र रूप से करके परीक्षा देते हैं। इस प्रकार विद्यार्थी को तीन स्तर पर परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। इस दौरान ICMA द्वारा कोचिंग लेना अनिवार्य है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • फाउंडेशन कोर्स में रजिस्टर करने के लिए किसी भी मान्यता-प्राप्त बोर्ड से कक्षा 10वीं की परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकते हैं, किन्तु फाउंडेशन कोर्स की परीक्षा देने के लिए 12वीं की परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।<br>• जिन विद्यार्थियों ने 12वीं के बाद आर्ट्स के अलावा किसी भी संकाय से स्नातक किया है, वे विद्यार्थी सीधा इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए भी रजिस्टर कर सकते हैं। |
| **कोर्स के चरण** | • विद्यार्थी 10वीं या 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद फाउंडेशन कोर्स के लिए रजिस्टर कर सकते हैं।<br>• 12वीं की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद फाउंडेशन कोर्स की परीक्षा।<br>• फाउंडेशन कोर्स की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद इंटरमीडिएट कोर्स के लिए रजिस्ट्रेशन।<br>• कोचिंग प्राप्त करने के बाद परीक्षा में न्यूनतम 40 प्रतिशत अंक आवश्यक।<br>• कम्युनिकेशन एंड सॉफ्ट स्किल्स ट्रेनिंग और 100 घण्टों की कम्प्यूटर ट्रेनिंग।<br>• इंटरमीडिएट कोर्स के दोनों ग्रुप्स के विषयों की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद फाइनल कोर्स के लिए रजिस्ट्रेशन। |

| | |
|---|---|
| | • कोचिंग प्राप्त करने के बाद परीक्षा में न्यूनतम 40 प्रतिशत अंक आवश्यक।<br>• इंडस्ट्री-ओरिएंटेड ट्रेनिंग एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करना।<br>• फाइनल कोर्स की परीक्षा में उत्तीर्ण होना।<br>• 3 वर्षों का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करना।<br>**नोट :**<br>• फाउंडेशन कोर्स में रजिस्टर करने के बाद परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए 3 वर्ष का समय दिया जाता है, जिसके बाद रजिस्ट्रेशन निरस्त माना जाता है।<br>• इंटरमीडिएट कोर्स के लिए रजिस्टर करने के बाद विद्यार्थियों को 7 वर्षों की समयावधि में ही फाइनल कोर्स की परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। 7 वर्षों में ऐसा न कर पाने से, रजिस्ट्रेशन निरस्त कर दिया जाता है। कुछ विद्यार्थियों को इसके बाद भी 'डी-नोवो' रजिस्ट्रेशन दिया जाता है ऐसा केवल एक ही बार किया जाता है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित सेंटर** | • कोर्स के फॉर्म्स www.icmai.in पर उपलब्ध हैं। फॉर्म को भरकर और जरूरी दस्तावेजों की प्रति संलग्न करके इंस्टिट्यूट ऑफ कास्ट अकाउंटेंट ऑफ इंडिया के वेस्टर्न रीजनल काउंसिल के ऑफिस में पोस्ट करें। वेस्टर्न रीजनल काउंसिल का ऑफिस मुम्बई में स्थित है।<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ कास्ट अकाउंटेंट ऑफ इंडिया के चैप्टर्स इन्दौर-देवास और भोपाल में भी स्थित है। |
| **मध्यप्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | इंस्टिट्यूट ऑफ कास्ट अकाउंटेंट ऑफ इंडिया के काउंसिल के ऑफिस निम्न शहरों में हैं। विद्यार्थी अपने राज्य के अनुसार रीजनल काउंसिल के ऑफिस से सम्पर्क करें। इसकी जानकारी www.icmai.in पर उपलब्ध है।<br>• मुम्बई (वेस्टर्न इंडिया रीजनल काउंसिल), महाराष्ट्र<br>• चेन्नई (सदर्न इंडिया रीजनल काउंसिल), तमिलनाडु<br>• कोलकाता (ईस्टर्न इंडिया रीजनल काउंसिल), पश्चिम बंगाल<br>• दिल्ली (नार्दर्न इंडिया रीजनल काउंसिल) |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को करने के बाद विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकते हैं, साथ ही कई बड़ी कंपनियों में भी अच्छे पद पर कार्य कर सकते हैं। |

## फाइनेंस

सरकार, व्यवसाय या व्यवसाय द्वारा धन के प्रबन्धन करने की प्रक्रिया को फाइनेंस कहते हैं। इसके अन्तर्गत शामिल है - लोन या राशि के माध्यम से निधियों को प्राप्त करना और व्यवसाय में इस प्रकार उपयोग करना कि बिजनेस या संस्थान प्रभावी रूप से चल सके। प्रत्येक संस्थान या व्यवसाय का महत्वपूर्ण अंग फाइनेंस होता है।

फाइनेंस सेक्टर के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के फाइनेंस आते हैं, जैसे कॉर्पोरेट फाइनेंस, इन्वेस्टमेंट बैंकिंग, फाइनेंसियल प्लानिंग, इंश्योरेंस, पब्लिक अकाउटिंग आदि। जो विद्यार्थी इनमें से किसी भी सेक्टर में अपना करियर बनाना चाहते हैं, उनके लिए 10वीं कक्षा के बाद कॉमर्स संकाय के विषय पढ़ना बहुत लाभदायी होगा। विज्ञान विषय पढ़ने के बाद भी बी कॉम किया जा सकता है। विद्यार्थी अक्सर बीकॉम फाइनेंस करने के बाद फाइनेंस में अपने करियर की शुरुआत करते हैं। इसके बाद स्नातकोत्तर में विभिन्न प्रकार के फाइनेंस से जुड़े कोर्स होते हैं जो विद्यार्थी अपनी रुचि अनुसार चुन सकते हैं।

इस सेक्टर में कुछ वर्ष कार्य करने के बाद विद्यार्थी चार्टर्ड फाइनेंसियल एनालिस्ट (CFA) का कोर्स भी कर सकते हैं।

## बैंकिंग

संस्थानों और व्यक्तियों के धन को सुरक्षित रखने के साथ-साथ उसे अन्य व्यक्तियों/संस्थाओं को ब्याज पर देने की प्रक्रिया को बैंकिंग कहा जाता है। आज के दौर में इस प्रक्रिया के अनेक रूप और आयाम बन चुके हैं। बैंकिंग हम सभी के जीवन में एक अहम भूमिका निभाती है।

हम सभी अपना धन किसी न किसी बैंक में सुरक्षित रखते हैं और आवश्यकता पड़ने पर लोन के रूप में उधार भी बैंक से ही लेते हैं। ऐसा हम इसलिए कर सकते हैं क्योंकि सभी बैंक शासन के नियमों का पालन करते हुए यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारा जमा धन सदा सुरक्षित रहे, उसका हिसाब सदा हमारे पास उपलब्ध रहे और आवश्यकता पड़ने पर हमें लोन भी आसान शर्तों पर कानूनी तरीके से मिल सके।

बैंकिंग में निपुण विद्यार्थी अनेक प्रकार की बैंकिंग या धन निवेश सेवाएँ देने वाली कंपनियों आदि में कार्य कर सकते हैं। बैंकिंग सेक्टर में करियर बनाने के लिए बैंकिंग मैनेजमेंट/बैंकिंग और इंश्योरेंस में बीकॉम कर सकते हैं। बैंक में कई नौकरियों के लिए बैंक की परीक्षा देना भी अनिवार्य होता है।

# इंश्योरेंस

इंश्योरेंस (बीमा) वह व्यवस्था है जो व्यक्ति या संस्था के वित्तीय नुकसान या व्यक्तिगत/संस्थागत जोखिम को उस बीमा कम्पनी द्वारा वहन किया जाता है, जिसका इंश्योरेंस लिया जाता है अर्थात् यदि इंश्योरेंस लेने वाले व्यक्ति/संस्था को भविष्य में कभी अधिक वित्तीय नुकसान हो तो उसकी लागत बीमा कम्पनी उठाती है। इसके लिए व्यक्ति/संस्था एक निर्धारित समयावधि में कुछ राशि बीमा कम्पनी को देती है।

आजकल हम कई प्रकार के इंश्योरेंस लेते हैं, चाहे वह स्वास्थ्य के हों, गाड़ी के हों, यात्रा के हों या हमारे जीवन के ही हों। इसी तरह संस्थाएँ भी अनेक प्रकार के इंश्योरेंस लेती है।

इस सेक्टर में प्रवेश हेतु विद्यार्थी इंश्योरेंस विशेषज्ञता लेकर बीकॉम कर सकते हैं। इसके बाद स्नातकोत्तर में इंश्योरेंस संबंधित डिग्री लेना उनके लिए बहुत लाभदायी होगा। कई सर्टिफिकेट कोर्स भी स्नातक के बाद किए जा सकते हैं।

## कोर्स का नाम : बीए मैनेजमेंट एण्ड मार्केटिंग ऑफ इंश्योरेंस

यह एक स्नातक पाठ्यक्रम है जो विद्यार्थी को इंश्योरेंस से परिचित कराता है। यह विद्यार्थियों को इंश्योरेंस की बिक्री और खरीदारी के तरीकों से अवगत कराता है, साथ ही यह पाठ्यक्रम मार्केटिंग के सिद्धांत, लेखांकन, अर्थशास्त्र आदि से भी परिचित कराता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए मैनेजमेंट एण्ड मार्केटिंग ऑफ इंश्योरेंस |
| **कोर्स के बारे में** | यह एक स्नातक पाठ्यक्रम है जिसकी अवधि 3 वर्ष है। यह 6 सेमेस्टर में बँटा है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | इस कोर्स में प्रवेश लेने के लिए विद्यार्थी का वाणिज्य विषय में कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | कोई भी शासकीय कॉलेज नहीं है। |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स के बाद विद्यार्थी कई शासकीय और निजी बीमा कम्पनियों में अलग-अलग पद पर कार्य कर सकते हैं। विद्यार्थी इंश्योरेंस में स्नातकोत्तर भी कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : बीबीए बैंकिंग एण्ड इंश्योरेंस

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को न सिर्फ बैंकिंग और बीमा क्षेत्रों और बाजारों से जुड़ी बुनियादी समझ विकसित करने में सहायता करता है बल्कि उन्हें कुशल वित्तीय और बीमा योजनाएं बनाना भी सिखाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीबीए बैंकिंग एण्ड इंश्योरेंस |
| **कोर्स के बारे में** | यह एक स्नातक पाठ्यक्रम है जिसकी अवधि 3 वर्ष है। जिसे 6 सेमेस्टर में बांटा गया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • किसी भी मान्यता प्राप्त (बोर्ड) से बारहवीं कक्षा में वाणिज्य/विज्ञान/आर्ट्स (ललित कला के अलावा) विषयों में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक।<br>• चयन हेतु कुछ विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा भी संचालित करते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | कोई भी शासकीय कॉलेज नहीं है। |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान<br>• गुरू गोबिंदसिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स के बाद विद्यार्थी कई शासकीय और निजी बीमा कंपनियों में अलग-अलग पदों पर कार्य कर सकते हैं।<br>विद्यार्थी इंश्योरेंस में स्नातकोत्तर भी कर सकते हैं। |

# ई-कॉमर्स

ई-कॉमर्स के अन्तर्गत ऑन लाइन आधुनिक तकनीकों के माध्यम से व्यावसायिक प्रबन्धन, संचालन, ई-कॉमर्स मार्केटिंग, ई-ट्रेड में उद्यमिता आदि शामिल हैं। यह कॉमर्स की एक नवीन शाखा है किन्तु बहुत कम समय में ही बहुत प्रचलित हो चुकी है।

## कोर्स का नाम : बीबीए ई-कॉमर्स

इसमें इंटरनेट पर व्यापार को निर्देशित करने के लिए प्रोग्राम्ड डेटा फ्रेमवर्क, ई-कॉमर्स व्यवसायी को बनाना, सब्सिडी देना और उनकी देखरेख करना, व्यावसायिक योजनाएं लिखना, सामान और सेवाओं को ऑनलाइन खरीदना और बेचना, लाभदायक इनपुट और आउटपुट सुनिश्चित करने के लिए विपणन और व्यापार भागीदारों के साथ सहयोग करना जैसे विषयों को पढ़ाया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीबीए ई-कॉमर्स |
| **कोर्स के बारे में** | यह तीन वर्षीय पूर्णकालिक स्नातक पाठ्यक्रम है, जिसे 6 सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • छात्र कक्षा बारहवीं में कम से कम 50 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन भी करते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन<br>• एशियन कॉलेज ऑफ जर्नलिज्म<br>• मास मीडिया रिसर्च सेंटर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली<br>• जेवियर इंस्टिट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन<br>• सिम्बायोसिस इंस्टिट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन<br>• दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | डिजिटल मार्केटिंग सेक्टर, सोशल मीडिया मार्केटिंग, मोबाइल मार्केटिंग, ईमेल व्यापार, ई-कॉमर्स, कंटेंट मार्केटिंग, सर्च इंजन ओप्टीमाईजेशन, एसईओ, वेब डिजाइनिंग, डिस्प्ले एडवर्टाइजिंग, डेटा विश्लेषण में इंटरनेट डेवलपर, सॉफ्टवेयर इंजीनियर, वेब डिजाइनर, आईटी या तकनीकी सहायक, संचालन प्रबन्धक के रूप में छात्र अपना करियर बना सकते हैं। |

* * *

फोरेंसिक साइंस
रसायन शास्त्र
बायोटेक्नोलॉजी
बायोकेमेस्ट्री
इलेक्ट्रॉनिक्स
एंड कम्युनिकेशन
माइक्रोबायोलॉजी
आई.टी. साइंस
जूलॉजी
एनवायरनमेंट साइंस
मैथमेटिक्स साइंस
विज्ञान
बायोलॉजी
रेडियोलोजी

# विज्ञान

विज्ञान विषय लेने वाले 11वीं एवं 12वीं कक्षा के विद्यार्थी फिजिक्स एवं केमेस्ट्री का अध्ययन करते हैं। इसके अलावा गणित या बायोलॉजी विषय ऐच्छिक रहता है। वे कम्प्यूटर साइंस भी फाउंडेशन कोर्स के रूप में पढ़ सकते हैं। जो विद्यार्थी कक्षा 12वीं के बाद विज्ञान की पढ़ाई करना चाहते हैं उनके पास चयन करने वाले कोर्सेस तथा करियर विकल्पों की एक विस्तृत शृंखला होती है। साइंस विषय वाले विद्यार्थियों को सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि वे अंडर ग्रेजुएट या पोस्ट ग्रेजुएट में अन्य विषय अर्थात् आर्ट्स या कॉमर्स का भी चयन कर सकते हैं जबकि अन्य संकाय वाले विद्यार्थियों को यह सुविधा नहीं मिलती। साइंस विषय के विद्यार्थियों के लिए कुछ बेहतर करियर विकल्प का वर्णन नीचे किया गया है -

## मैथ्स ग्रुप के विद्यार्थियों के लिए अंडर ग्रेजुएट कोर्सेस

यदि विद्यार्थियों की रुचि इंजीनियरिंग में नहीं है तो वे तीन साल के स्नातक पाठ्यक्रम का चयन कर सकते हैं। ये कोर्स देश की लगभग सभी यूनिवर्सिटीज द्वारा संचालित किए जाते हैं। ये नियमित पाठ्यक्रम होते हैं तथा उनमें से किसी एक विषय में ऑनर्स करना पड़ता है। इसके अन्तर्गत विषय के सैद्धांतिक पहलुओं के साथ-साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण पर भी विशेष जोर दिया जाता है। मैथ्स ग्रुप के विद्यार्थियों के लिए कुछ लोकप्रिय स्नातक कोर्सेस इस प्रकार हैं -

• बीएससी आईटी • बीएससी कम्प्यूटर साइंस • बीएससी केमेस्ट्री • बीएससी मैथेमेटिक्स • बीएससी फिजिक्स • बीएससी नौटिकल साइंस • बीएससी इलेक्ट्रॉनिक्स • बीएससी इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन

## बायोलॉजी ग्रुप के विद्यार्थियों के लिए बैचलर डिग्री कोर्स

बायोलॉजी ग्रुप वाले छात्र अगर मेडिकल फील्ड में नहीं आना चाहते हैं तो वे बैचलर डिग्री के कोर्सेस का चयन कर सकते हैं। इसके लिए विद्यार्थियों को किसी एक विषय में विशेषज्ञता हासिल करने के उद्देश्य से उस विषय में ऑनर्स करना पड़ता है। इस कोर्स को करने के बाद छात्र रिसर्च फील्ड में जा सकते हैं या फिर वे टीचिंग को भी अपना करियर बना सकते हैं। बायोलॉजी ग्रुप वाले विद्यार्थियों के लिए लोकप्रिय बैचलर डिग्री कोर्स निम्नांकित हैं -

• बीएससी बायोकेमेस्ट्री • बीएससी बायोलॉजी • बीएससी एनवायरन्मेंट साइंस • बीएससी बायोटेक्नोलॉजी • बीएससी नर्सिंग • बीएससी ऑक्यूपेशनल थेरेपी • बीएससी बायो इन्फॉर्मेटिक्स • बीएससी एन्थ्रोपोलॉजी • बीएससी माइक्रोबायोलॉजी • बीएससी जूलॉजी • बीएससी फोरेंसिक साइंस • बीएससी एग्रीकल्चर आदि।

### आइये मिलते हैं इसी क्षेत्र में अपना करियर बनाने वाले प्रोफेसर श्री गिरीश सोनी से

रायसेन जिले के गैरतगंज विकास खण्ड के रहने वाले गिरीश सोनी ने कक्षा आठवीं तक की पढ़ाई वहीं रहकर की। आगे की पढ़ाई के लिए वे भोपाल आए और विज्ञान विषय लिया। गिरीश ने एसजीआईटीएस से फाईबर ऑप्टिक्स से एम एससी किया। वर्तमान में गिरीश एन आई टी सुरतकल से पीएचडी कर रहे हैं साथ ही साथ जीएसआईटीएस इन्दौर में भौतिक विभाग में अध्यापन का काम भी कर रहे हैं। उन्हें भौतिक शास्त्र पढ़ाना बहुत पसंद है। गिरीश का कहना है कि 'किसी भी विषय को बिना पढ़े पास नहीं हुआ जा सकता है। इसीलिए सभी विषयों में मन लगाकर पढ़ने की आवश्यकता होती है। जरूरी है कि उस विषय को पढ़ने में हमारी रुचि हो।'

## कम्प्यूटर साइंस

यह कोर्स उन विद्यार्थियों के लिए एक सही विकल्प साबित हो सकता है जो कम्प्यूटर साइंस विषय में रुचि रखते हैं और इसे एक्सप्लोर करना चाहते हैं। ऐसे लोग जो वर्ड प्रोसेसिंग स्किल्स, स्प्रेडशीट स्किल्स, वेब नेविगेशन स्किल्स से परिचित हैं और जिन्हें सीखने में आनंद आता है वे इस कोर्स का चयन कर सकते हैं।

### कोर्स का नाम : बीएससी आईटी

आईटी का तात्पर्य सूचना प्रौद्योगिकी से है जो अनिवार्य रूप से सूचना के भंडारण, प्रसंस्करण, सुरक्षा और प्रबन्धन के बारे में है। नेटवर्क, सॉफ्टवेयर विकास और परीक्षण, सूचना डेटाबेस और प्रोग्रामिंग आदि इसके अंतर्गत आते हैं। इस कोर्स को करने के दौरान विद्यार्थियों में आईटी विश्लेषण, नेटवर्किंग तकनीक सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट सम्बन्धी कौशल सिखाए जाते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी आईटी |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • छात्र किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |

| | |
|---|---|
| | • इस कोर्स में प्रवेश लेने के लिए विद्यार्थियों को कुछ प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी करनी होती है जैसे कि IISER entrance exam, GSAT, UP PAT, UPCATET, ICAR AIEEA, IIT Jam आदि। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर<br>• करियर कॉलेज, भोपाल<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर<br>• सरकारी नर्मदा पीजी कॉलेज, होशंगाबाद<br>• महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, सतना<br>• सैफिया कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सेंट जेवियर्स कॉलेज, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• एलफिंस्टन कॉलेज, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• जय हिन्द कॉलेज, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• VELS विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को करने के बाद छात्र व्यावसायिक रूप से आईटी और टेलीकॉम उद्योग क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं। छात्र इन क्षेत्रों में काम कर सकते हैं - आईटी सपोर्ट एनालिस्ट, नेटवर्क इंजीनियर, आईटी सलाहकार, तकनीकी बिक्री प्रतिनिधि, वेब डिजाइनर, |

## कोर्स का नाम : बीएससी कम्प्यूटर साइंस

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को कम्प्यूटर सिस्टम और अनुप्रयोगों से संबंधित मुद्दों को समझने, डिजाइन करने, निष्पादन और हल करने से संबंधित है। पाठ्यक्रम प्रोग्रामिंग और डेटाबेस की आवश्यकता के बारे में ज्ञान प्रदान करता है। कोर्स के दौरान विद्यार्थियों को कम्प्यूटर समस्याओं के समाधान और प्रोग्रामिंग कोड सिखाए जाते हैं। यह सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री में करियर बनाने के लिए विद्यार्थियों को तैयार करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी कम्प्यूटर साइंस |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • छात्र किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हो। |

| | |
|---|---|
| | • कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • नूतन कॉलेज, भोपाल<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ एक्सीलेंस इन हायर एजुकेशन, भोपाल<br>• शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई बालिका पीजी कॉलेज, इन्दौर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर<br>• महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोद्योग विश्वविद्यालय, सतना |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • लोयोला कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• सेंट जेवियर्स कॉलेज, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• बेंगलुरू विश्वविद्यालय, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• मिरांडा हाऊस कॉलेज, नई दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को करने के बाद छात्र सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर कंपनियों में अपना करियर बना सकते हैं। इसके अलावा बैंकों, स्कूलों और कॉलेज, तकनीकी सहायता, ट्रैफिक लाइट प्रबन्धन, सिस्टम की मरम्मत, सुरक्षा और निगरानी कंपनियाँ, कम्प्यूटर और संबंधित इलेक्ट्रॉनिक उपकरण विनिर्माण, सॉफ्टवेयर विकास कंपनियों में सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर सम्बन्धी कामों को छात्र अपने करियर के रूप में अपना सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन

क्षेत्र में इसका भविष्य उज्ज्वल है। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थियों को नेटवर्किंग कम्प्यूटर तकनीकों के बारे में विशेषज्ञता हासिल होती है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन |
| **कोर्स के बारे में** | बीसीए ऑनर्स 3 वर्षीय स्नातक डिग्री कार्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन भी करते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • भोज विश्वविद्यालय, भोपाल |

| | |
|---|---|
| | • देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर<br>• जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर<br>• डॉ हरिसिंह गौड़ विश्वविद्यालय, सागर<br>• शासकीय होल्कर महाविद्यालय, इंदौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर, महाराष्ट्र<br>• मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• भिलाई महाविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़<br>• दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को करने के बाद विद्यार्थियों को आई.टी. क्षेत्र में व कारपोरेट जगत में प्रयोगशाला तकनीशियन, वेब एप्लीकेशन डेवलपर, एप्लीकेशन आर्किटेक्ट, सिस्टम कंसल्टेंट, कंसल्टेंट, असिस्टेंट मैनेजर, एप्लीकेशन पैकेजिंग स्पेशलिस्ट, एप्लीकेशन कंसल्टेंट, मोबाइल एप्लीकेशन डेवलपर, एनर्जी मटेरियल एप्लीकेशन, बिजनेस एप्लीकेशन मैनेजर जैसे पदों पर करियर बनाने का अवसर मिलता है। |

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले विभिन्न कम्प्यूटर टूल्स के बारे में वैज्ञानिक, व्यावहारिक और तकनीकी ज्ञान प्रदान करता है, जिससे छात्र कम्प्यूटर एप्लीकेशन के कार्यों को आसानी से समझते हैं और उन्हें उपयोग में आसानी होती है। इस डिप्लोमा पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र बेसिक्स, एमएस ऑफिस, इंटरनेट की मूल बातें, ई- बिजनेस और आईटी सुरक्षा, पीसी असेंबली और समस्या निवारण जैसे क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन |
| **कोर्स के बारे में** | कम्प्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा एक साल का डिप्लोमा कोर्स है । |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • छात्र किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन भी करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • भोज विश्वविद्यालय, भोपाल<br>• स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा<br>• मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तरप्रदेश<br>• इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश<br>• मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• मास मीडिया रिसर्च सेंटर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली<br>• सिम्बायसिस सेंटर फॉर मीडिया एंड कम्युनिकेशन, पुणे, महाराष्ट्र<br>• दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | कम्प्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा (डीसीए) करने के बाद विद्यार्थियों के लिए करियर की संभावनाएं बढ़ जाती हैं जैसे नेटवर्किंग और इंटरनेट नेटवर्किंग क्षेत्र, डेटाबेस विकास और प्रशासन क्षेत्र, प्रोग्रामिंग - विकास उपकरण, तकनीकी लेखन, सॉफ्टवेयर डिजाइन और इंजीनियरिंग, ग्राफिक डिजाइन और एनीमेशन, वेब, कम्प्यूटर ऑपरेटर, वेब डिजाइनर, सॉफ्टवेयर डेवलपर जैसे लोकप्रिय करियर विकल्पों को चुनने के अवसर प्राप्त होते हैं। |

# रसायन शास्त्र (केमिस्ट्री)

रसायन शास्त्र अर्थात् केमिस्ट्री विज्ञान की वह शाखा है जो पदार्थों के निर्माण, उनके गुणों, प्रतिक्रियाओं की जांच व नए पदार्थ के निर्माण के लिए ऐसी प्रतिक्रियाओं के उपयोग से संबंधित है।

रसायन शास्त्र के उपयोग अनेक और बहुत विस्तृत हैं। कपड़ा, रंग, दवाइयों से लेकर परमाणु बम, विस्फोटक पदार्थ आदि बनाने में रसायन शास्त्र का उपयोग किया जाता है।

## कोर्स का नाम : बीएससी कैमेस्ट्री

बीएससी रसायन विज्ञान उन विद्यार्थियों के लिए एक विशेष पाठ्यक्रम है जो रसायन विज्ञान और रासायनिक विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के मूल सिद्धांतों को सीखना चाहते हैं। यह पाठ्यक्रम रासायनिक उद्योगों में चुनौतियों के लिए भी विद्यार्थियों को तैयार करता है।

यह पाठ्यक्रम रासायनिक उद्योगों में होने वाले तीव्र परिवर्तनों के साथ ही विद्यार्थियों को नए विकास और रसायन विज्ञान के क्षेत्र में बदलाव के लिए पर्याप्त अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है। साथ ही स्नातकोत्तर स्तर पर विद्यार्थी कई विषय जैसे न्यूक्लियर केमिस्ट्री, ऑर्गेनिक केमिस्ट्री, इंडस्ट्रीयल केमिस्ट्री आदि विषय भी पढ़ते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी कैमेस्ट्री |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है । |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • छात्र किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषय के रूप में भौतिकी रसायन विज्ञान और गणित के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर<br>• गीतांजली कॉलेज, भोपाल<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ एक्सीलेंस इन हायर एजुकेशन, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सेंट्रल यूनिवर्सिटी, दिल्ली<br>• बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश<br>• जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | रसायन विज्ञान में स्नातक की डिग्री निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में नौकरी की संभावनाओं को खोलती है। बीएससी रसायन विज्ञान करने के बाद छात्र निम्नलिखित क्षेत्रों में रोजगार पा सकते हैं - दवा कंपनियाँ, रासायनिक प्रयोगशालाएँ, क्लिनिकल प्रयोग शालाएँ, शैक्षिक संस्थान, स्वास्थ्य सेवा उद्योग, सौंदर्य प्रसाधन और इत्र उद्योग, केमिकल, पेट्रोकेमिकल और फार्मास्युटिकल उद्योग आदि। अक्सर विद्यार्थी किसी एक विशेषज्ञता के विषय में स्नातकोत्तर की पढ़ाई करते हैं। |

## गणित (मैथेमेटिक्स)

जिन विद्यार्थियों की रुचि ज्यामिति, त्रिकोणमिति, कैलक्यूलस और गणित के अन्य सिद्धांतों का गहन अध्ययन करने और कम्प्यूटर साइंस व सांख्यिकीय जैसे संबंधित विषयों में है और जो छात्र भविष्य में आगे इसी विषय में उच्च अध्ययन करना चाहते हैं वे गणित में स्नातक का कोर्स कर सकते हैं।

### कोर्स का नाम : बीएससी गणित (मैथेमेटिक्स)

इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को कम्प्यूटर और सांख्यिकी जैसे गणित और संबंधित विषयों में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए तैयार करना है। बीएससी गणित पाठ्यक्रम मुख्य रूप से विद्यार्थियों में गणित, कलन और

डेटा विश्लेषण में गणितीय कौशल विकसित करने पर केन्द्रित रहता है।

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक और तार्किक तरीके से समस्याओं को हल करने की क्षमता को विकसित करता है। साथ ही छात्र को उन्नत संख्यात्मक समस्याओं को हल करने, बड़ी मात्रा में डेटा को संभालने की क्षमता, सटीकता और स्पष्टता के साथ गणितीय तर्क प्रस्तुत करने में सक्षम बनाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी गणित (मैथेमेटिक्स) |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है । |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में विज्ञान या वाणिज्य स्ट्रीम (गणित के साथ) में कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर<br>• गीतांजली कॉलेज, भोपाल<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ एक्सीलेंस इन हायर एजुकेशन, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सेंट्रल यूनिवर्सिटी, दिल्ली<br>• लोयोला कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• क्रोइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• स्टेला मैरिस कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे, महाराष्ट्र |
| **कोर्स के बाद अवसर** | गणित में डिग्री लेने के बाद विद्यार्थियों को उनकी उत्कृष्ट मात्रात्मक और समस्या सुलझाने की क्षमताओं के आधार पर सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में करियर के अवसर मिलते हैं। छात्र विश्वविद्यालयों और वैज्ञानिक संस्थाओं के अलावा, बैंकिंग, वित्त, बीमा और जोखिम- प्रबन्धन में भी अपना करियर बना सकते हैं। |

## भौतिक शास्त्र (फिजिक्स)

भौतिक शास्त्र अर्थात् फिजिक्स विज्ञान की वह शाखा है जिसके अंतर्गत विद्यार्थी यह अध्ययन करते हैं कि पदार्थ व ऊर्जा की क्या प्रकृति है व उनकी अंतःक्रिया कैसी है। यह विज्ञान की सबसे प्राचीन शाखा है और आज भी इसके विस्तृत उपयोग हैं।

## कोर्स का नाम : बीएससी फिजिक्स

जो विद्यार्थी भौतिकी के मूल सिद्धांतों को सीखने में रुचि रखते हैं, गणितीय अवधारणाओं को आसानी से समझ सकते हैं, साथ ही जिन विद्यार्थियों में समस्या हल करने के लिए एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण है, वे इस विषय को चुन सकते हैं। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में रचनात्मक कौशल विकसित करने के साथ ही विद्यार्थियों को व्यापक शैक्षणिक अनुप्रयोग और अनुसंधान करने के अवसर देता है। यह कोर्स विद्यार्थियों को संसाधनों से जानकारी इकट्ठी करने और उन्हें उचित रूप से उपयोग करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करता है। स्नातकोत्तर स्तर पर विद्यार्थी विद्युत, इलेक्ट्रानिक्स, न्यूक्लीयर फिजिक्स, खगोल शास्त्र जैसे विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी फिजिक्स |
| **कोर्स के बारे में** | • यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है।<br>• शिक्षण पद्धति में कक्षा के व्याख्यान, मूल्यांकन, असाइनमेंट, सेमीनार, इंटर्नशीप और व्यावहारिक सत्र शामिल हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषय के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर<br>• गीताजंली कॉलेज, भोपाल<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ एक्सीलेंस इन हायर एजुकेशन, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सेंट्रल यूनिवर्सिटी, दिल्ली<br>• सेंट स्टीफन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• लोयोला कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• क्रोइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलुरू, कर्नाटक |
| **कोर्स के बाद अवसर** | एयरोस्पेस इंजीनियरिंग, विनिर्माण, तेल और गैस, दूरसंचार, अनुसंधान सेवाएँ और शिक्षण क्षेत्र आदि में नौकरियों की एक विस्तृत श्रृंखला है। रेलवे भर्ती बोर्ड भी बीएससी भौतिकी के डिग्री धारकों को लेता है। विद्यार्थी किसी एक विशेषज्ञता (खगोल शास्त्र, न्यूक्लीयर फिजिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स आदि) में स्नातकोत्तर भी करते हैं। |

# नॉटिकल साइंस

एक जहाज को संभालने और एक स्थान से दूसरे स्थान तक उसे सुरक्षित रूप से नेविगेट करने की तकनीकों का अध्ययन नॉटिकल साइंस कहलाता है।

## कोर्स का नाम : बीएससी नॉटिकल साइंस

इसके अन्तर्गत समुद्री अध्ययन से संबंधित सभी सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलू शामिल हैं। यह कोर्स शिपिंग महानिदेशालय द्वारा अनुमोदित है जो भारत सरकार के जहाजरानी मंत्रालय के अधीन आता है। इस कोर्स में समुद्री जहाज सुरक्षित रूप से नेवीगेट करने और संचालित करने के लिए आवश्यक शैक्षणिक और व्यावहारिक उपकरणों का अध्ययन करवाया जाता है। कार्यक्रम का उद्देश्य डेक ऑफिसर बनने में योग्य उम्मीदवारों को अनुप्रयोगों के माध्यम से प्रशिक्षित करना है और समुद्री प्रौद्योगिकी के बारे में सिखाना है। जिन विद्यार्थियों की रुचि समुद्री प्रौद्योगिकी, समुद्री अध्ययन, समुद्री सेवा, मर्चेन्ट नेवी, नेवीगेशन आदि में होती है वे इस कोर्स को करियर विकल्प के रूप में चयन कर सकते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी नॉटिकल साइंस |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • छात्र किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषय के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित के साथ कम से कम 60 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं।<br>• शैक्षिक योग्यता के साथ ही विद्यार्थी में चिकित्सा मानकों के आधार पर 6/6 दृष्टि आवश्यक होती है और विद्यार्थी दृष्टि दोष जैसे - रतौंधी और रंग अंधापन से पीड़ित नहीं होना चाहिए। कोर्स के लिए आवेदन करने के लिए उम्मीदवारों को शारीरिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • कोई शासकीय कॉलेज नहीं। |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • चाणक्य यूनिवर्सिटी, चेन्नई, तमिलनाडु |
| **कोर्स के बाद अवसर** | पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद छात्र मर्चेन्ट नेवी जहाजों पर नेवीगेशन अधिकारी के रूप में काम कर सकते हैं। उन्हें सालभर की समुद्री सेवा से गुजरना पड़ता है। समुद्री सेवा पूरी करने और बाद में होने वाली |

| | |
|---|---|
| | परीक्षा के आधार पर ही विद्यार्थियों को उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण घोषित किया जाता है। इस तरह 12 महीने की समुद्री सेवा के बाद मुख्य मेट के रूप में और लिखित और मौखिक दोनों परीक्षाओं को पास करने के बाद वे योग्यता के आधार पर मास्टर फॉरेन गोइंग सर्टिफिकेट प्राप्त कर सकते हैं। यह प्रमाण-पत्र ऐसे विद्यार्थियों को मर्चेन्ट नेवी जहाजों पर नेवीगेशन अधिकारी के पद को संभालने में सक्षम बनाता है।<br>इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद छात्र समुद्री विज्ञान से जुड़े पेशों में अपना करियर बना सकते है जैसे कि डेक कैडेट, द्वितीय अधिकारी, मुख्य अधिकारी, कप्तान, समुद्री अभियंता, रेडियो अधिकारी, नौटिकल सर्वेयर इत्यादि। |

# इलेक्ट्रॉनिक्स

इलेक्ट्रॉन के प्रवाह (करंट) को नियंत्रित करने के अध्ययन को इलेक्ट्रॉनिक्स कहते हैं। आज के समय में हमारे फोन, टीवी, कम्प्यूटर आदि इसी विषय के सिद्धांतों पर चलते हैं।

## कोर्स का नाम : बीएससी इलेक्ट्रॉनिक्स

इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को इंजीनियरिंग सामग्री, डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक्स, एनालॉग इलेक्ट्रॉनिक्स, डेटा संरचना, प्रोग्रामिंग भाषाओं, गणित, सांख्यिकी, नेटवर्क विश्लेषण, इलेक्ट्रॉनिक्स के साथ ही संचार कौशल से संबंधित ज्ञान दिया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी इलेक्ट्रॉनिक्स |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है । |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं में मुख्य विषय के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित या जीव विज्ञान के साथ कम से कम 60% अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल<br>• इग्नू, दिल्ली (दूरस्थ शिक्षा)<br>• डॉक्टर हरिसिंह गौर सेंट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश<br>• बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश<br>• फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे, महाराष्ट्र<br>• सेंट जेवियर्स कॉलेज, कोलकाता, पश्चिम बंगाल |
| **कोर्स के बाद अवसर** | बीएससी इलेक्ट्रॉनिक्स करने के बाद छात्र विभिन्न सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं जैसे वे सेवा इंजीनियर, प्रसारण तकनीशियन, वरिष्ठ इलेक्ट्रॉनिक्स बिक्री प्रबन्धक, टेलीविजन प्रोडक्शन मैनेजर, इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार सलाहकार आदि पदों पर या शिक्षा के क्षेत्र में भी काम कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : बीएससी इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन

जिन विद्यार्थियों की रुचि विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार प्रणालियों में प्रयुक्त किए जाने वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (जैसे मोबाइल, रेडियो आदि) के गहन अध्ययन में है वे करियर विकल्प के रूप में इस कोर्स का चयन कर सकते हैं। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार प्रणालियों में उपयोग किए जाने वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के अनुसंधान, डिजाइन, परीक्षण और विकास का अध्ययन कराया जाता है। यह कोर्स इंजीनियरिंग में जटिल गतिविधियों को हल करने के लिए आधुनिक इंजीनियरिंग उपकरणों के अभ्यास करने में भी मदद करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषय के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित में उत्तीर्ण हो। (विभिन्न कॉलेज के न्यूनतम अंक अलग-अलग होते हैं।)<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल<br>• इग्नू, दिल्ली (दूरस्थ शिक्षा)<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश<br>• बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश<br>• अंगूरचंद मन्मुल जैन कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• AJK कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोयंबटूर, तमिलनाडु<br>• श्री पीपटेल कॉलेज ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन एम.<br>• गुजरात एसआरएम आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज, कांचीपुरम, तमिलनाडु |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स के पूरा होने के बाद विद्यार्थी सरकारी क्षेत्र, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों, उद्यम और रक्षा सेवाओं, हार्डवेयर विनिर्माण कंपनियों, रेलवे, बिजली उद्योग, विमानन उद्योग, ऑटोमोबाइल क्षेत्र, रखरखाव क्षेत्र, सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग कंपनियों, सिविल सेवाओं जैसे विभागों में काम कर सकते हैं। विद्यार्थी तकनीशियन असिस्टेंट, एप्लीकेशन इंजीनियर, पावर इलेक्ट्रॉनिक्स डिजाइनर, सेल्स इंजीनियर, जैसे कई पदों पर भी काम कर सकते हैं। |

## बायोलॉजी (जीव विज्ञान)

जिन विद्यार्थियों की रुचि जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान आदि में है वे इस विषय को करियर विकल्प के रूप में चुन सकते हैं। जीव विज्ञान विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान के हर पहलू को समझने की दृष्टि देता है जो प्राकृतिक विज्ञान के साथ ही यह जीवित जीवों, जीवन विज्ञान की अवधारणाओं और कोशिका सिद्धांत के अध्ययन को भी शामिल करता है। यह मुख्य रूप से जीवों, जैविक प्रणालियों और उनसे प्राप्त चीजों पर केन्द्रित है।

### कोर्स का नाम : बीएससी बायोलॉजी

इसके अन्तर्गत विद्यार्थी जीव विज्ञान की अवधारणाओं, सिद्धांत, उनके कार्य, विकास, आनुवंशिकी और ऊर्जा का अध्ययन करते हैं। इस अध्ययन में पौधों और जानवरों की कोशिकाओं की संरचना और कार्यों को भी शामिल किया गया है। विभिन्न जीवित चीजों के बीच परस्पर सम्बन्ध, जानवरों के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन भी इस पाठ्यक्रम का हिस्सा है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी बायोलॉजी |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है । |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान व जीव विज्ञान के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल<br>• इग्नू, दिल्ली (दूरस्थ शिक्षा)<br>• डॉ. हरिसिंह गौर सेंट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश<br>• बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | जीव विज्ञान के बाद छात्र कृषि अनुसंधान सेवाएँ, वनस्पति उद्यान, वानस्पतिक सर्वेक्षण, जैविक तकनीशियन, संरक्षणवादी (कनजर्वेशनिस्ट), वनस्पति-वैज्ञानिक, जनन- वैज्ञानिक, आणविक जीव विज्ञानी, प्लांट एक्सप्लोरर, प्लांट बायोकेमिस्ट, खरपतवार वैज्ञानिक, विज्ञान सलाहकार, वन क्षेत्रपाल, खेती सलाहकार, अस्पताल, बागवानी, चिकित्सा अनुसंधान, चिकित्सा प्रयोगशालाएँ, वन्य जीवन और मत्स्य विभाग, विज्ञान केन्द्र, खाद्य संस्थान, स्कूलों, बीज और नर्सरी जैसी संस्थाओं में अपना करियर बना सकते हैं। |

## बायो इन्फॉर्मेटिक्स (जैव सूचना विज्ञान)

जैव सूचना विज्ञान एक ऐसा विषय है जिसके अंतर्गत विद्यार्थी जैविक डेटा को समझने के लिए विभिन्न तरीकों और सॉफ्टवेयर टूल को विकसित करने की प्रक्रिया का अध्ययन करता है। इस विषय में जैव विज्ञान, अनुवांशिकी, गणित व कम्प्यूटर विज्ञान का समावेश है।

### कोर्स का नाम : बीएससी बायो इन्फॉर्मेटिक्स

जिन विद्यार्थियों की रुचि जैव-सूचना विज्ञान, विशेष रूप से उप-परमाणु विज्ञान, डेटा नवाचार के साथ ही प्राकृतिक रसायन विज्ञान और उप-परमाणु विज्ञान में है वे करियर विकल्प के रूप में इस कोर्स का चयन कर सकते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी बायो इन्फॉर्मेटिक्स |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश<br>• बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद विद्यार्थी जैव प्रौद्योगिकी, जैव चिकित्सा विज्ञान और फार्मास्युटिकल संगठनों के क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं। साथ ही निजी और सरकारी उपचार केन्द्र, कॉलेज और विश्वविद्यालय, जैव-अनुसंधान प्रतिष्ठान, जैव-चिकित्सा आइटम बनाने वाले उद्योगों में भी प्रयास कर सकते हैं। |

# फोरेंसिक साइंस

अपराधों की जाँच हेतु विज्ञान के प्रयोग को फोरेंसिक साइंस कहते हैं। आज हर क्षेत्र में विज्ञान का उपयोग हो रहा है। अतः विज्ञान में कई शाखाएं और जुड़ती जा रही हैं। विज्ञान की एक शाखा फॉरेंसिक साइंस का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। अतः इस क्षेत्र में करियर की संभावनाएं बढ़ गई हैं। किसी अपराध की जांच के लिए वैज्ञानिक सिद्धांतों और नई तकनीकों का उपयोग फॉरेंसिक साइंस कहलाता है। इसमें भौतिक साक्ष्य की जाँच, मान्यता, निश्चयीकरण और मूल्यांकन किया जाता है। इसमें सबूतों की समीक्षा करना होता है। अपराध अनुसंधान के क्षेत्र में इसका बहुत महत्व है।

## कोर्स का नाम : बीएससी फोरेंसिक साइंस

इसके अन्तर्गत फोरेंसिक पैथोलॉजी, साइकोलॉजी, फोरेंसिक मेडिसिन और डेन्टॉलॉजी (दंत चिकित्सा) जैसे आवश्यक घटकों का अध्ययन किया जाता है। विद्यार्थी वैज्ञानिक आधार पर अपराधों की जाँच करने का प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी फोरेंसिक साइंस |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है । |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान या गणित के साथ कम से कम 55% अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर सेंट्रल यूनिवर्सिटी, सागर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • गुजरात फोरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी, गांधीनगर, गुजरात |
| **कोर्स के बाद अवसर** | फोरेंसिक विज्ञान में करियर काफी हद तक विशेषज्ञता के क्षेत्र पर निर्भर करता है। इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद विद्यार्थी सरकारी और निजी एजेंसियों, अस्पतालों और प्रयोगशालाओं में काम के लिए आवेदन कर सकते हैं। कुछ कॉर्पोरेट संगठन दस्तावेज विशेषज्ञों के रूप में इस क्षेत्र के विद्यार्थियों को नियुक्त करते हैं। कुछ अन्य क्षेत्रों में भी विद्यार्थी अपना करियर बना सकते हैं जैसे आतंकवाद विरोध अभियान, बड़े पैमाने पर आपदा प्रबन्धन, साइबर अपराध जाँच, मानव अधिकारों की सुरक्षा, पर्यावरण, उपभोक्ता और बौद्धिक संपदा। भारत भर में फोरेंसिक साइंस लेबोरेटरीज (FSL) फोरेंसिक वैज्ञानिकों को काम पर रखती हैं। केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (CBI), इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) और देश के पुलिस विभाग ऐसे स्नातकों को नियुक्त करते हैं। दिल्ली में CBI की फोरेंसिक प्रयोगशाला संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा के माध्यम से ऐसे उम्मीदवारों की भर्ती करती है। |

## बायोकेमेस्ट्री (जैव रसायन विज्ञान)

जैव रसायन विज्ञान जैविक प्रक्रियाओं और जीवित पदार्थ के अध्ययन रासायनिक प्रक्रियाओं और सिद्धांतों का उपयोग करने का अध्ययन है। यह विज्ञान की एक शाखा है, जो रसायन विज्ञान से संबंधित है, जो जीवित जीवों और परमाणुओं और अणुओं के अध्ययन पर लागू होता है जिसमें जीवों का समावेश होता है।

## कोर्स का नाम : बीएससी बायोकेमेस्ट्री (जैव रसायन विज्ञान)

इसके अन्तर्गत छात्र जैव रासायनिक अणुओं की संरचना और कार्य का अध्ययन करते हैं, जिसके बाद विद्यार्थियों में चिकित्सा उद्योग, कृषि, अनुसंधान लैब्स, दवा कंपनियों में और क्लिनिकल शोधकर्ता के रूप में किस तरह से प्रयोगशालाओं में काम किया जाता है इसकी समझ विकसित होती है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी बायोकेमेस्ट्री |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है । |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान या गणित के साथ कम से कम 55 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई गर्ल्स पीजी कॉलेज, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • ऑक्सफोर्ड कॉलेज ऑफ साइंस, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• श्री वैकटेश्वर कॉलेज, नई दिल्ली<br>• एथिराज कॉलेज फॉर विमेन, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• VELS विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• क्वीन मैरी कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव, महाराष्ट्र<br>• एमजी साइंस इंस्टिट्यूट, अहमदाबाद, गुजरात<br>• CMS कॉलेज ऑफ साइंस एंड कॉमर्स, कोयंबटूर, तमिलनाडु<br>• औरोरास डिग्री कॉलेज, हैदराबाद, तेलंगाना |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स के बाद छात्र मेडिकल इंडस्ट्री, रीसर्च, लैब, एग्रीकल्चर, फार्मास्युटिकल कंपनियों, अकादमिक संस्थानों आदि में अपना करियर बना सकते हैं। |

## कृषि

कृषि सम्बन्धी इस कोर्स को भारत सरकार द्वारा एक प्रोफेशनल डिग्री के रूप में माना जाता है। यह कोर्स विद्यार्थियों के बीच बहुत लोकप्रिय नहीं है, परन्तु कृषि में प्रशिक्षित प्रोफेशनल्स की मांग बहुत ज्यादा रहती है। इस हेतु अधिक जानकारी के लिए एग्रीकल्चर पर चैप्टर पढ़ें।

## कोर्स का नाम : बीएससी एग्रीकल्चर

इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कृषि विज्ञान, कृषि में आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों और तकनीकों का उपयोग किस तरह किया जा सकता है, इसका अध्ययन करवाया जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ क्षेत्र और भी हैं जिन्हें पाठ्यक्रम में जोड़ा गया है। वे हैं - भूमि सर्वेक्षण, मृदा विज्ञान, जल संसाधन प्रबन्धन, पशु और कुक्कुट प्रबन्धन, जैव प्रौद्योगिकी। कृषि उत्पादकता में सुधार करने के लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जाता है। इस पाठ्यक्रम की मदद से विद्यार्थी कृषि और इसके संबंधित सभी विषयों का समग्र ज्ञान प्राप्त कर पाते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी एग्रीकल्चर |
| **कोर्स के बारे में** | यह 4 वर्षीय स्नातक डिग्री है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता-प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान या गणित के साथ कम से कम 55 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा KEAM, EAMCT के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • कृषि महाविद्यालय, इंदौर<br>• जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय/जबलपुर/चित्रकूट/रीवा/टीकमगढ़/गंजबासोदा/वारासिवनी/पवारखेड़ा, होशंगाबाद/इन्दौर/सीहोर/ग्वालियर/खण्डवा |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंदिरा गांधी एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, रायपुर, छत्तीसगढ़<br>• गोविंद वल्लभ पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, पंतनगर, उत्तराखंड<br>• पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, लुधियाना, पंजाब<br>• राजस्थान एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, बीकानेर, राजस्थान<br>• राजेन्द्र एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, पूसा, समस्तीपुर, बिहार<br>• तमिलनाडु एग्रीकल्चरल रीसर्च इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली<br>• इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, खडगपुर, पश्चिमी बंगाल |
| **कोर्स के बाद अवसर** | बीएससी कृषि पास करने के बाद छात्र सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में नौकरी पा सकते हैं और अपना करियर बना सकते हैं। ये विद्यार्थी भारत सरकार के कृषि अधिकारी (एग्रोनॉमिस्ट) के रूप में राजपत्रित पद पर भी काम करने के लिए आवेदन कर |

| | |
|---|---|
| | सकते हैं। इस क्षेत्र में करियर बनाने के कुछ अन्य विकल्प हैं - एग्रीकल्चर ऑफिसर, असिस्टेंट प्लांटेशन मैनेजर, एग्रीकल्चरल रीसर्च साइंटिस्ट, एग्रीकल्चर डेवलपमेंट ऑफिसर्स, एग्रीकल्चर टेक्नीशियन, कृषक आदि। |

## माइक्रोबायोलॉजी

सूक्ष्म जीव विज्ञान एक महत्वपूर्ण जैविक विज्ञान है, जो आणविक जीव विज्ञान में सूक्ष्म जीव के उपयोग के लिए अनुसंधान करने के अवसर देता है।

### कोर्स का नामः बीएससी माइक्रोबायोलॉजी

इसके अन्तर्गत बैक्टीरिया, वायरस, प्रोटोजोआ और कवक के जीव विज्ञान का अध्ययन करवाया जाता है। इस पाठ्यक्रम में जैव रसायन, शरीर विज्ञान और सूक्ष्मजीवों के अनुवंशिकी के पहलुओं का भी अध्ययन करवाया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी माइक्रोबायोलॉजी |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पूर्णकालिक पाठ्यक्रम है जिसे 6 सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • छात्र किसी भी मान्यता-प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के साथ कम से कम 60 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल<br>• इग्नू, दिल्ली (दूरस्थ शिक्षा)<br>• डॉक्टर हरिसिंह गौर सेंट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश<br>• बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | माइक्रोबायोलॉजी कोर्स करने के बाद विद्यार्थी चिकित्सा अनुसंधान, गुणवत्ता नियंत्रण और जैव प्रौद्योगिकी उद्योग में अपना करियर बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त छात्र विश्वविद्यालयों, फार्मास्युटिकल और बायोसाइंस कंपनियों और संस्थानों में शोधकर्ता के रूप में भी काम कर सकते हैं। |

# जूलॉजी

जूलॉजी, जिसे एनिमल बायोलॉजी के रूप में भी जाना जाता है, जीव विज्ञान की एक शाखा है, जो जीवित व विलुप्त जानवरों और उनके पारिस्थितिक तंत्र के बारे में समझने का अवसर देती है।

## कोर्स का नाम : बीएससी जूलॉजी

जो विद्यार्थी अपना करियर पशु जैव विविधता सर्वेक्षण, जैव सूचना विज्ञान, पारिस्थितिकी तंत्र निगरानी, वन्यजीव संरक्षण और पर्यावरण प्रबन्धन जैसे विविध क्षेत्रों में बनाना चाहते हैं, वे इस कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं। इसके अन्तर्गत पर्यावरण, जीव विज्ञान और पारिस्थितिकी तंत्र जैसे क्षेत्रों में कुछ विषय के रूप में पढ़े जाते हैं। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को जानवरों के रूप, कार्य और व्यवहार को समझने में मदद करता है। साथ ही सुव्यवस्थित प्रयोगात्मक रूप से सामान्य जैविक सिद्धांतों को स्पष्ट करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी जूलॉजी |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता-प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल<br>• इग्नू दिल्ली दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से<br>• डॉक्टर हरिसिंह गौर सेंट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश |

| | |
|---|---|
| | • बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश<br>• वाइल्डलाइफ कंजरवेशन सोसायटी, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवांस साइंटिफिक रीसर्च, बेंगलुरू, कर्नाटक |
| **कोर्स के बाद अवसर** | जूलॉजी कोर्स करने के बाद विद्यार्थी अपना करियर जू कीपर, फोरेंसिक विशेषज्ञ, पशु पुनर्वासक, पशु देखभालकर्ता, क्यूरेटर वन्यजीव, जीव विज्ञानी, अनुसंधान सहयोगी, वृत्तचित्र निर्माता, पशु प्रजनक, शोधकर्ता, पशु चिकित्सा, चिकित्सा प्रतिनिधि, पशु व्यवहार, लैब तकनीशियन, जीव विज्ञानी, संरक्षणवादी, पशु और वन्यजीव शिक्षक, पशु प्रशिक्षक, पर्यावरण सलाहकार, फील्ड ट्रायल अधिकारी, प्रकृति संरक्षण अधिकारी, पर्यावरण शिक्षा अधिकारी, पर्यावरण प्रबन्धक के रूप में बना सकते हैं। |

## एनवायरनमेंटल साइंस

एनवायरनमेंटल साइंस एक ऐसा विषय है जो पर्यावरण के अध्ययन, पर्यावरण की समस्याओं के समाधान के लिए भौतिक शास्त्र, जैव विज्ञान, गणित आदि के सिद्धांतों का उपयोग करता है।

### कोर्स का नाम : बीएससी एनवायरनमेंट साइंस

बीएससी एनवायरनमेंट साइंस में निर्धारित पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को जीव विज्ञान पारिस्थितिकी, भूगोल, रसायन विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सामाजिक विज्ञान के पहलुओं को समझने का अवसर देता है। यह विद्यार्थियों को पर्यावरण के पैटर्न और प्रक्रियाओं को समझने पारिस्थितिक तंत्रों की जाँच करने, स्थानीय और वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दों के समाधान के लिए आवश्यक वैज्ञानिक ज्ञान और तकनीकों को विकसित करने में मदद करता है। इसके अतिरिक्त यह कोर्स विद्यार्थियों को यह भी समझाता है कि कैसे पर्यावरण विज्ञान का सम्बन्ध मानव समाज से है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी एनवायरनमेंट साइंस |
| **कोर्स के बारे में** | बीएससी एनवायरनमेंट साइंस 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है। इस कोर्स को 6 सेमेस्टर में विभाजित किया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता-प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और |

| | |
|---|---|
| | जीव विज्ञान या गणित के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • इग्नू, दिल्ली (दूरस्थ शिक्षा)<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी |
| **कोर्स के बाद अवसर** | पर्यावरण वैज्ञानिक रूप में विद्यार्थी निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में काम कर सकते हैं। इस कोर्स के बाद विद्यार्थी पर्यावरण पत्रकार के रूप में अनुसंधान की गतिविधियों, अपशिष्ट प्रबन्धन और रीसाइक्लिंग का काम, पर्यावरण फोटोग्राफर, जल संरक्षण विज्ञानी जैसे महत्वपूर्ण कामों में अपना करियर बना सकते हैं। |

## खाद्य विज्ञान

पोषण सम्बन्धी मामलों और खाद्य आदतों के बारे में सीखने में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को पोषण एवं आहार विज्ञान में बीएससी में प्रवेश के लिए प्रयास करना चाहिए। इस कोर्स के दौरान पोषण और आहार विज्ञान में अनिवार्य रूप से स्वस्थ आहार व्यवहार को बढ़ावा देने और स्वस्थ आहार सम्बन्धी संशोधन की खोज द्वारा जीवन की गुणवत्ता और समग्र कल्याण को बढ़ाने के तरीकों सम्बन्धी शिक्षा प्रदान की जाती है।

इस कार्यक्रम में एक विस्तृत पाठ्यक्रम शामिल है जो समुदाय और पर्यावरण के व्यापक दृष्टिकोण के साथ पोषण विज्ञान को जोड़ता है, साथ ही अस्वास्थ्यकर खाने के व्यवहार के कारणों और इसे सुधारने के तरीकों से भी अवगत कराता है।

### कोर्स का नाम : बीएससी इन न्यूट्रीशन एंड डाईटेटिक्स

इसमें खाद्य प्रबन्धन का अध्ययन, स्वस्थ भोजन के माध्यम से स्वास्थ्य को बढ़ावा देना और मुख्य रूप से शरीर और भोजन के बीच सम्बन्धों को केन्द्रित कर पढ़ाया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी इन न्यूट्रीशन एंड डाईटेटिक्स |
| **कोर्स के बारे में** | बीएससी पोषण और आहार विज्ञान 3 साल का पूर्णकालिक स्नातक पाठ्यक्रम है। यह पाठ्यक्रम 6 सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। |

| | |
|---|---|
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक के साथ बारहवीं पास होना चाहिए। बारहवीं में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान मुख्य विषय होने चाहिए।<br>• कुछ विश्वविद्यालय/कॉलेज जीव विज्ञान के बजाय बॉटनी/ प्राणी शास्त्र/कम्प्यूटर विज्ञान/जैव रसायन शास्त्र को कक्षा बारहवीं में पढ़े गए मुख्य विषयों में से एक के रूप में भी स्वीकार करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • गवर्नमेंट एमए कॉलेज ऑफ होम साइंस एंड साइंस फॉर वुमेन, जबलपुर<br>• गवर्नमेंट पीजी कॉलेज, भेल, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • AIMAN कॉलेज ऑपफ आर्ट्स एंड साइंस फॉर वुमेन, तिरूचिरापल्ली, केरल<br>• इंस्टिट्यूट मानव रचना इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ रीसर्च एंड स्टडीज़, फरीदाबाद, हरियाणा<br>• माउंट कार्मल कॉलेज, बैंगलुरू, कर्नाटक |
| **कोर्स के बाद अवसर** | भारत और विदेशों में पोषण और आहार विज्ञान में तेजी से करियर के अवसर बढ़ रहे हैं। जो विद्यार्थी इस उद्योग में काम करने में रुचि रखते हैं वे निजी क्षेत्र के क्लीनिकों और अस्पतालों में रोजगार के अवसर पाते हैं। कुछ छात्र इसी क्षेत्र में स्वयं-नियोजित भी होते हैं। इस क्षेत्र से स्नातक करने वाले विद्यार्थी इसे एक पेशे के रूप में भी स्वीकार कर सकते हैं। जिन विद्यार्थियों की रुचि अपनी पढ़ाई को आगे बढ़ाने में होती है वे एमएससी, एमफिल और पीएचडी भी करते हैं। उन्हें डायरेक्टर ऑफ होटल ऑपरेशन, मैनेजर ऑफ होटल शेफ, फ्लोर सुपरवाईजर बनने के अवसर भी मिलते हैं। यह कोर्स रोजगार के अन्य क्षेत्र में जैसे क्रूज कंपनियों और निजी नर्सिंग होम जैसे निजी क्षेत्र में भी करियर की संभावनाओं को बढ़ाता है। |

# बायोटेक्नोलॉजी (जैव प्रौद्योगिकी)

जैव प्रौद्योगिकी, यह क्षेत्र एप्लाइड साइंस का एक अंग है। यह अनिवार्य रूप से एक अनुसंधान-उन्मुख और चिकित्सा विज्ञान से जुड़ा क्षेत्र है, जिसमें प्रौद्योगिकी के साथ जीवन विज्ञान का संयोजन है।

## कोर्स का नाम - बीएससी बायोटेक्नोलॉजी

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और अन्य जैव उत्पादों के क्षेत्र में रहने वाले जीवों और जैव प्रक्रियाओं के उपयोग के बारे में परिचित करवाता है। यह अध्ययन विद्यार्थियों को लोगों के जीवन और स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में योगदान करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी बायोटेक्नोलॉजी |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता-प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान या गणित के साथ कम से कम 55% अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इंदौर/भोपाल<br>• बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल<br>• गवर्नमेंट ऑटोनॉमस पी.जी. कॉलेज, सतना |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश<br>• दिल्ली तकनीकी विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली<br>• इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को करने के बाद विद्यार्थियों के पास करियर बनाने के लिए कई विकल्प मिलते हैं जैसे फार्मास्यूटिकल कंपनियाँ, उद्योग जगत, मेडिकल और शिक्षण संस्थान, लैब तकनीशियन, रीसर्चर, वैज्ञानिक, रीसर्च एसोसिएट, मार्केटिंग पर्सनल, बिजनेस डेवलपमेंट अधिकारी, सेल्स रिप्रजेंटेटिव, बायोटेक इंजीनियर, बायोटेक्नोलॉजिस्ट व प्रोफेसर जैसे पद पर काम कर छात्र अपना |

कृषि
कृषिकल्चर
एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी
हॉर्टिकल्चर
BUSINESS
ZOO
फॉरेस्ट्री
डेयरी टेक्नोलॉजी
फ़ूड टेक्नोलॉजी

# कृषि (एग्रीकल्चर)

भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि (एग्रीकल्चर) भारत की अर्थव्यवस्था का एक अहम अंग है। यहाँ की लगभग 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या एग्रीकल्चर से जुड़ी है। मिट्टी को उपजाऊ बनाने का कार्य, खेती एवं पशुपालन से जुड़ी गतिविधियाँ एग्रीकल्चर के अन्तर्गत आती हैं। भारत में अनेक प्रकार की फसलें जैसे - अनाज, सब्जियाँ, फल-फूल, मसाले, चाय, कॉटन आदि की खेती होती है। वहीं कई प्रकार के पशु जैसे - गाय, भैंस, बकरी, रेशम का कीड़ा (सिल्क वर्म) मधुमक्खी, मुर्गी आदि का पालन भी किया जाता है।

जो व्यक्ति एग्रीकल्चर कार्यक्षेत्र से जुड़ते हैं, वे या तो पशुपालन से जुड़ी गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं या बीज, खाद इत्यादि के उत्पादन, खेती/पशुपालन में उपयोग में होने वाले यंत्रों के उत्पादन व देखरेख, खेती, बागवानी, शोध कार्य इत्यादि जैसे कामों में भाग लेते हैं। यह कार्यक्षेत्र हर संस्कृति या देश का अहम हिस्सा हमेशा से रहा है और भविष्य में भी रहेगा। एग्रीकल्चर में आज भी कई नवाचार हो रहे हैं।

## होनहार किशन पदम

किशन का बचपन कठिनाइयों से भरा था। वह होनहार था। पढ़ना चाहता था। स्कूल की फीस भरने के लिए उसने मजदूरी की। साथ ही छोटे भाई-बहनों की देखभाल करते हुए, घर के कामकाज करते हुए पढ़ाई भी जारी रखी। पढ़ाई में उसकी रुचि थी परन्तु आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण वह सोचता था कि बारहवीं के बाद कहीं भी उसकी नौकरी लग जाए। दसवीं पास करने के बाद उसने एग्रीकल्चर विषय चुना। वह इसी क्षेत्र में आगे भी पढ़ना चाहता था। परन्तु किसी कारणवश पढ़ाई को बीच में ही छोड़ना पड़ा। तभी उसे फॉरेस्ट्री के कोर्स के बारे में पता चला। पढ़ाई में लगने वाले कुल खर्च की जानकारी इकट्ठी की और पता लगाया कि यह कोर्स सरकारी सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी द्वारा संचालित है। उसने कोर्स में दाखिला लिया और कोर्स पूरा किया। आज किशन टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान के एमएससी इन सस्टेनेबल लाइवलीहुड और नेचरल रिसोर्स मैनेजमेंट कोर्स की पढ़ाई पूरी कर नेशनल लाइवलीहुड मिशन, (राष्ट्रीय आजीविका मिशन) में प्रोग्राम ऑफिसर के रूप में कार्य कर रहा है। किशन के अनुसार पढ़ाई में होने वाला खर्च कभी भी ज्यादा नहीं होता। बस, ज्यादा लगती है तो वह है मेहनत।

# कृषि

पौधों या पशुओं से संबंधित उत्पादों की खेती करना या उत्पादन करना एग्रीकल्चर/कृषि कहलाता है। इस विषय के अन्तर्गत बीज बोना, पौधारोपण, खेती की सिंचाई, देखरेख, कटाई के प्रकार और उनसे जुड़ी विभिन्न तकनीकें शामिल हैं। इस क्षेत्र में कई नई-नई तकनीकें उपयोग में आने लगी हैं और भविष्य में भी आती रहेंगी। निम्न तालिका में कृषि से जुड़े कुछ कोर्स पर चर्चा की गई है -

## कोर्स का नाम : बीएससी- एग्रीकल्चर

इस कोर्स के माध्यम से विद्यार्थी कृषि, मिट्टी, वानिकी, एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स जैसे विषयों का अध्ययन कर इन विषयों पर अपनी गहरी समझ विकसित करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी- एग्रीकल्चर |
| **कोर्स के बारे में** | यह एक स्नातक कोर्स है जिसकी अवधि 4 वर्ष होती है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बायोलॉजी + भौतिकी + रसायन शास्त्र/एग्रीकल्चर संकाय/गणित + भौतिकी + रसायन शास्त्र विषय से कक्षा बारहवीं उत्तीर्ण।<br>कई विश्वविद्यालय MPPAT या ALEEA परीक्षा में प्राप्त अंकों को भी चयन प्रक्रिया में शामिल करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर<br>• राजमाता सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • तमिलनाडु एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी*, लुधियाना, पंजाब<br>• इंदिरा गांधी एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी*, रायपुर, छत्तीसगढ़<br>• गोविंद वल्लभ पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, पंतनगर, उत्तरप्रदेश<br>*इन यूनिवर्सिटी/विश्वविद्यालयों में दाखिले के लिए उनके राज्यों का डोमिसाइल सर्टिफिकेट अनिवार्य है। |
| **कोर्स के बाद अवसर** | यह एक प्रोफेशनल डिग्री है। इस डिग्री को पूर्ण करने के बाद विद्यार्थियों को शासकीय परियोजनाओं एवं निजी कंपनियों में नौकरी के अवसर मिल सकते हैं।<br>राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर शासन द्वारा संचालित परियोजनाओं में अथवा कई शासकीय रीसर्च संस्थानों में भी कार्य करने के अवसर मिल सकते हैं जैसे - |

| | |
|---|---|
| | • इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टिट्यूट<br>• नेशनल सीड्स कारपोरेशन<br>• स्टेट फर्म्स कारपोरेशन<br>• नाबार्ड (NABARD) आदि<br><br>विद्यार्थी कई निजी कंपनियों (जो खेती/कृषि के क्षेत्र में कार्य करती हैं) में भी कार्य करने के अवसर प्राप्त कर सकते हैं। विद्यार्थी इसमें स्नातकोत्तर कोर्स भी कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : बीटेक/बीई एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग

इंजीनियरिंग की यह शाखा कृषि और खाद्य प्रसंस्करण की तकनीकों के अध्ययन एवं उपयोग से संबंधित है। इस कोर्स में विद्यार्थी कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण से जुड़ी तकनीकों और मशीनों के बारे में पढ़ते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीटेक/बीई एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | यह एक स्नातक कोर्स है जिसकी अवधि 4 वर्ष होती है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • गणित/जीव विज्ञान + भौतिक शास्त्र + रसायन शास्त्र विषय से 12वीं उत्तीर्ण।<br>• JEEMains/ JEEAdvanced/MP-PET नामक प्रवेश परीक्षाएँ उत्तीर्ण। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर<br>• महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, सतना |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान, खड़गपुर, पश्चिम बंगाल<br>• गोविंद वल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तराखण्ड<br>• ओडिसा यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, भुवनेश्वर, ओडिसा<br>• महाराणा प्रताप यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, उदयपुर, राजस्थान<br>• स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान<br>• इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | यह कोर्स करने के बाद विद्यार्थियों को शासकीय संस्थानों एवं निजी कम्पनियों में कार्य करने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। विद्यार्थी निम्नलिखित शासकीय संस्थानों में भी कार्य कर सकते हैं-<br>• विभिन्न राज्यों के कृषि विपणन बोर्ड<br>• खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग<br>• शासकीय अनुसंधान (रीसर्च) संस्थान<br>• राज्य के डेयरी बोर्ड<br>• कॉयर बोर्ड<br>• सिल्क बोर्ड आदि।<br>कुछ निजी कंपनियाँ भी इन विद्यार्थियों को नियुक्त करती हैं जैसे-<br>• एग्रो-प्रोसेसिंग कंपनियाँ<br>• एग्रीकल्चर संबंधित मशीनें बनाने वाली कंपनियाँ<br>• फूड प्रोसेसिंग एवं मेन्युफैक्चरिंग कंपनियाँ आदि। |

# फॉरेस्ट्री/वानिकी

पर्यावरण, पशुपक्षियों एवं मानव के हित में जंगलों, वनभूमि एवं संबंधित संसाधनों का निर्माण, प्रबन्धन, उपयोग, संरक्षण या उसे पुनर्जीवित करने के कार्य को फॉरेस्ट्री (वानिकी) कहा जाता है।

देश की अर्थव्यवस्था के लिए भी यह बहुत जरूरी है। आज भी हमारे देश में कई गाँव ऐसे हैं जो अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं जैसे - लकड़ी, जड़ी-बूटी, गोंद, शहद व अन्य वनोपज आदि के लिए वनों पर ही निर्भर हैं। कई उद्योग अपने लिए कच्चे माल (रॉ मटेरियल) के लिए तथा कई पर्यटन उद्योग भी वनों पर निर्भर हैं। इस दृष्टिकोण से वनों का संरक्षण, उनका सीमित उपयोग और उन्हें पुनर्जीवित करना बहुत महत्वपूर्ण है।

मध्यप्रदेश का लगभग 25 प्रतिशत हिस्सा वनों से ढ़का हुआ है। इस स्थिति में फॉरेस्ट्री के विशेषज्ञ विभिन्न तरीकों से अपनी सेवाएं वनों और मानव समुदाय को दे सकते हैं। वे अधिकतर वनों में या प्लांटेशन में काम करते हैं। उनके कार्यों में वन संरक्षण या प्रबन्धन, वन्य जीवों का संरक्षण, पौधारोपण की योजना बनाना, वनों में शोध आदि शामिल होते हैं। इस कार्यक्षेत्र से संबंधित कोर्स के बारे में आगे दिया गया है -

## कोर्स का नाम : बीएससी फॉरेस्ट्री

विद्यार्थी इस कोर्स में जैव विविधता, वृक्ष विज्ञान, वन अर्थशास्त्र, वन प्रबन्धन, वन के उपयोग, नर्सरी प्रबन्धन जैसे विषय पढ़ते हैं और वन प्लांटेशन आदि पर एक गहरी समझ विकसित करते

हैं। इस कोर्स को पढ़ाने के कई उद्देश्य हैं, जिनमें वन संसाधनों का संतुलित उपयोग, वन संरक्षण को सुनिश्चित करना कुछ मुख्य उद्देश्य हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी फॉरेस्ट्री |
| **कोर्स के बारे में** | यह 4 वर्षीय स्नातक कोर्स है जिसे आठ बराबर सेमेस्टर में बाँटा गया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • इस कोर्स में दाखिला लेने के लिए एग्रीकल्चर संकाय/गणित. रसायनशास्त्र + भौतिकी/जीवविज्ञान + रसायनशास्त्र + भौतिकी से 12वीं और ICAR नामक प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होना जरूरी है।<br>• मध्यप्रदेश स्थित जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर VYAPAM, भोपाल से भी दाखिला देती है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंदिरा गांधी एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, रायपुर, छत्तीसगढ़<br>• गोविंद वल्लभ पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, पंतनगर, उत्तरप्रदेश<br>• पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, लुधियाना, पंजाब<br>• राजस्थान एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, बीकानेर, राजस्थान<br>• राजेन्द्र एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, पूसा, समस्तीपुर, बिहार<br>• तमिलनाडू एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, कोयंबटूर, तमिलनाडु<br>• इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली<br>• इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, खड़गपुर, पश्चिमी बंगाल |
| **कोर्स के बाद अवसर** | यह कोर्स करने के बाद विद्यार्थी कई विभागों या संस्थानों में काम कर सकते हैं जैसे -<br>• वन विभाग<br>• जूलॉजिकल पार्क<br>• बागवानी विभाग<br>• वन्यजीव अनुसंधान संस्थान<br>• वन्यजीवन विभाग<br>• राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य |

| | |
|---|---|
| | • वन्यजीवन रेंज<br>• वन नर्सरी<br>• कॉलेज और विश्वविद्यालय<br>• वन संरक्षण से जुड़ी संस्थाएँ आदि। |

# फूड टेक्नोलॉजी

फूड टेक्नोलॉजी खाद्य पदार्थों के प्रसंस्करण और संरक्षण के सिद्धांतों और तकनीकों से संबंधित विज्ञान है। फूड टेक्नोलॉजी के विशेषज्ञों को फूड टेक्नोलॉजिस्ट कहा जाता है। जो संगठन या संस्थाएं खाद्य पदार्थों के प्रसंस्करण, संरक्षण, पैकेजिंग, लेबलिंग, गुणवत्ता प्रबन्धन व डेयरी उत्पादों, कन्फेक्शनरी उत्पादों, मछली उत्पादों, मांस और पोल्ट्री उत्पादों, फल और सब्जी उत्पादों के विकास में कार्य करती हैं, वहाँ फूड टेक्नोलॉजी का उपयोग किया जाता है। इसलिए फूड टेक्नोलॉजिस्ट खाद्य उत्पादन एवं संरक्षण से जुड़ी इंडस्ट्रीज, खाद्य पदार्थों की क्वालिटी नियंत्रण बोर्ड्स, होस्टल, हॉस्पिटल, कोल्ड ड्रिंक या जूस की फैक्ट्री आदि में कार्यरत होते हैं। फूड टेक्नोलॉजिस्ट बनने के लिए 12वीं कक्षा के बाद निम्न कोर्स किए जा सकते हैं -

## कोर्स का नाम : बीटेक फूड टेक्नोलॉजी

इस कोर्स के माध्यम से विद्यार्थी खाद्य प्रसंस्करण, खाद्य पैकेजिंग, पोषण भंडारण इत्यादि जैसे विषयों सम्बन्धी गहन ज्ञान अर्जित करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीटेक फूड टेक्नोलॉजी |
| **कोर्स के बारे में** | यह चार वर्षीय स्नातक कोर्स है जो आठ सेमेस्टर में बाँटा गया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विज्ञान विषय से 12वीं कक्षा उत्तीर्ण।<br>• प्रत्येक विश्वविद्यालय के 12वीं में प्राप्त अंकों के कट-ऑफ अलग होते हैं।<br>• कई विश्वविद्यालय JEE, परीक्षा के माध्यम से भी चयन करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • महात्मा गांधी चित्रकूट विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना, म.प्र.<br>• AKS विश्वविद्यालय, सतना, म.प्र. |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सीएमजे विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय<br>• डीवाई पाटिल विश्वविद्यालय, नवीं मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब<br>• बीआईटीएस, हैदराबाद, तेलंगाना |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स से स्नातक करने के बाद विद्यार्थी निम्न प्रकार के संस्थानों में कार्य कर सकते हैं -<br>• राष्ट्र एवं राज्य सरकार के खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग<br>• राज्य प्रायोजित खाद्य उत्पादन/संधारण संस्थान<br>• निजी कंपनियाँ जहाँ खाद्य पदार्थ बनाए या संरक्षित किए जाते हैं<br>• खाद्य संरक्षण या प्रोसेसिंग की मशीनें बनाने वाली कंपनियाँ<br>• होटल इंडस्ट्री आदि।<br>इन सभी जगहों पर वे फूड टेक्नोलॉजिस्ट, फूड इंस्पेक्टर, क्वालिटी अश्योरेंस ऑफिसर, लैब तकनीशियन इत्यादि के रूप में कार्य कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा - फूड बेवरेजेस

इस कोर्स में विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के पेय पदार्थ जैसे - जूस, दूध, कोल्ड ड्रिंक्स आदि के बारे में पढ़ते हैं। साथ ही वे इनके उत्पादन और संरक्षण से जुड़ी मशीनों के विषय में भी पढ़ते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा - फूड बेवरेजेस |
| **कोर्स के बारे में** | इस डिप्लोमा की कुल अवधि 6 माह से 1 वर्ष की है । इस कोर्स में थ्योरी के साथ-साथ प्रैक्टिकल कार्य पर भी बहुत जोर दिया जाता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • 10वीं कक्षा उत्तीर्ण। बोर्ड परीक्षा में प्राप्त अंकों में मेरिट के आधार पर। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • विभिन्न शासकीय एवं निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (Industrial Training Institutes) |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • प्रदेश के बाहर स्थित विभिन्न ITI में भी दाखिला लिया जा सकता है। |
| **कोर्स के बाद अवसर** | • फूड एवं बेवरेज से जुड़ी कंपनियों में क्वालिटी एनालिस्ट, सुपरवाइजर, पैकेजिंग सुपरवाईजर या प्रशिक्षित कर्मचारी के रूप में कार्य कर सकते हैं।<br>• इसके अलावा यह डिप्लोमा लेकर विद्यार्थी स्वयं का व्यवसाय भी शुरू कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा - एग्रो प्रोसेसिंग

इस कोर्स के माध्यम से विद्यार्थी अनाज, मसालों, तेल एवं उनके उत्पाद, संरक्षण, प्रोसेसिंग आदि के विषय में गहरी समझ बनाते हैं। साथ ही वे भारत में खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता से जुड़े नियम और उनकी आवश्यकताओं के बारे में भी पढ़ते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा - एग्रो प्रोसेसिंग |
| **कोर्स के बारे में** | इस डिप्लोमा की कुल अवधि एक वर्ष की है। कोर्स में विद्यार्थी को थ्योरेटिकल के साथ-साथ प्रैक्टिकल पर ध्यान दिया जाता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • 10वीं कक्षा उत्तीर्ण।<br>• चयन बोर्ड परीक्षा में प्राप्त अंकों में मेरिट के आधार पर। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • विभिन्न शासकीय एवं निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (Industrial Training Institutes) |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • प्रदेश के बाहर स्थित विभिन्न आईटीआई में भी दाखिला लिया जा सकता है। |
| **कोर्स के बाद अवसर** | कृषि से जुड़ी विभिन्न कंपनियों एवं शासकीय संस्थानों में कुशल कार्यकर्ता, सुपरवाइजर, क्वालिटी एनालिस्ट, पैकेजिंग सुपरवाइजर आदि के रूप में कार्य कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा - मिल्क एंड मिल्क प्रोसेसिंग

इस कोर्स के माध्यम से विद्यार्थी डेयरी, दूध के उत्पादन, संरक्षण, उपयोग, क्वालिटी मेनेजमेंट तथा इससे संबंधित अधिनियम आदि के विषय में गहरी जानकारी व कुशलता विकसित करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा - मिल्क एंड मिल्क प्रोसेसिंग |
| **कोर्स के बारे में** | यह एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स है जो दो सेमेस्टर में बाँटा गया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • 10वीं कक्षा उत्तीर्ण।<br>• चयन बोर्ड परीक्षा में प्राप्त अंकों में मेरिट के आधार पर। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • विभिन्न शासकीय एवं निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (Industrial Training Institutes) |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • प्रदेश के बाहर स्थित विभिन्न ITI में भी दाखिला लिया जा सकता है। |
| **कोर्स के बाद अवसर** | डेयरी व्यवसाय से जुड़ी विभिन्न कंपनियों एवं शासकीय संस्थानों में कुशल कार्यकर्ता, सुपरवाइजर, क्वालिटी एनालिस्ट, पैकेजिंग सुपरवाइजर आदि के रूप में कार्य कर सकते हैं। |

## हॉर्टिकल्चर

फल, सब्जियों, फूल और सजावटी पौधों का उत्पादन, सुधार, विपणन और उपयोग करने के विज्ञान या कला को हॉर्टिकल्चर कहा जाता है। यह बॉटनी या अन्य पौधों के विज्ञान से अलग इसलिए है क्योंकि हॉर्टिकल्चर में बागबानी के विज्ञान के साथ-साथ पौधों के सौंदर्य का भी अध्ययन किया जाता है। हॉर्टिकल्चर के विशेषज्ञ को हॉर्टिकल्चरिस्ट कहते हैं।

जहाँ उच्च गुणवत्ता वाले फलों व सब्जियों का उत्पादन हमें स्वस्थ आहार उपलब्ध कराता है वहीं फूल व सजावटी पौधे घरों एवं सार्वजनिक स्थलों को बेहतर बनाते हैं। इससे भी लोगों को मानसिक सुकून और सौंदर्य बोध की अनुभूति होती है। इसीलिए हॉर्टिकल्चर भी जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है।

### कोर्स का नाम : बीएससी - हॉर्टिकल्चर

इस कोर्स के विद्यार्थी पौधे, फल, सब्जियाँ, मसाले, बागानों आदि के विषय में एक गहरी समझ विकसित करते हैं। इसके साथ ही वे इन सबके संरक्षण और उनसे जुड़ी मशीनों के बारे में भी पढ़ते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी - हॉर्टिकल्चर |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है जिसे 6 सेमेस्टर में बाँटा गया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • बायोलॉजी + भौतिकी + रसायन/एग्रीकल्चर संकाय/गणित + भौतिकी, रसायन विषय से कक्षा बारहवीं उत्तीर्ण<br>• कई विश्वविद्यालय HORTI-CET नामक प्रवेश परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर प्रवेश देते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • गवर्नमेंट होलकर साइंस कॉलेज, इन्दौर, म.प्र.<br>• राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर, म.प्र. |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंदिरा गांधी एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, रायपुर, छत्तीसगढ़<br>• गोविंद बल्लभ पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, पंतनगर, उत्तरप्रदेश |

| | |
|---|---|
| | • पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, लुधियाना, पंजाब<br>• राजस्थान एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, बीकानेर, राजस्थान<br>• राजेन्द्र एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, पूसा, समस्तीपुर, बिहार<br>• तमिलनाडु एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, कोयंबटूर, तमिलनाडु<br>• इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली<br>• इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, खड़गपुर, पश्चिमी बंगाल |
| **कोर्स के बाद अवसर** | कृषि विभाग, स्पाइस या कॉयर या रबर बोर्ड, निजी प्लांटेशंस, सजावटी पौधे और फूलों के व्यवसाय, कृषि उत्पाद विपणन फर्म, कृषि मशीनरी उद्योग, उपकरण निर्माण फर्म, खाद्य उत्पादन और प्रौद्योगिकीय उद्योग आदि। |

## पशुपालन

पशुपालन एग्रीकल्चर की वह शाखा है जो मांस, दूध, अण्डे आदि उत्पादों के लिए जानवरों के पालन से संबंधित है। इसमें पशुओं की देखभाल, चयनात्मक प्रजनन एवं पशुधन की वृद्धि शामिल है। भारत में कई पशु पाले जाते हैं, जैसे- गाय, भैंस, बकरी, मछलियाँ, मुर्गियाँ आदि। पशुपालन से संबंधित कुछ कोर्स निम्नानुसार है -

### कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन एनिमल हस्बेंड्री

इस कोर्स का प्रमुख उद्देश्य है कि यह कोर्स विद्यार्थियों को नौकरी/स्वतंत्र कार्य के लिए सक्षम बनाता है। विद्यार्थी पशुपालन से संबंधित कार्य, बीमारियाँ, पशु देखरेख, पशुओं का प्रजनन आदि के बारे में पढ़ते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन एनिमल हस्बेंड्री |
| **कोर्स के बारे में** | यह 2 या 3 वर्ष का कोर्स है। इस कोर्स में थ्योरी के साथ प्रैक्टीकल कार्य पर भी बहुत जोर दिया जाता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • 12वीं में भौतिक शास्त्र + रसायन शास्त्र + जीव विज्ञान या एग्रीकल्चर स्ट्रीम से उत्तीर्ण।<br>• मप्र शासन द्वारा संचालित DAHET नामक प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले निम्न 5 पॉलिटेक्निक कॉलेज यह कोर्स संचालित करते हैं -<br>• वेटेरनरी पॉलिटेक्निक, जबलपुर • वेटेरनरी पॉलिटेक्निक, महू<br>• वेटेरनरी पॉलिटेक्निक, रीवा • वेटेरनरी पॉलिटेक्निक, मुरैना<br>• वेटेरनरी पॉलिटेक्निक, भोपाल |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • राजस्थान पशु चिकित्सा और विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान<br>• कामधेनू विश्वविद्यालय, गांधीनगर, गुजरात<br>• राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी -<br>• स्वयं का पशुपालन केन्द्र खोल सकते हैं।<br>• शासकीय या निजी अनुसंधान संस्थाओं में कार्य कर सकते हैं।<br>• विभिन्न जूओलॉजिकल पार्क्स में कार्य कर सकते हैं।<br>• वेटेनरी अस्पतालों, डेरी फार्म्स एवं वाइल्ड लाइफ सेंक्च्युरी में कार्य कर सकते हैं आदि। |

## कोर्स का नाम - बीएससी एनिमल हस्बेंड्री और डेयरिंग

इस कोर्स में पशुओं के पोषण, पालन संबंधित तकनीकों, ब्रीडिंग सिस्टम्स, जेनेटिक्स, दूध उत्पादन और संरक्षण आदि विषय पढ़ाए जाते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी एनिमल हस्बेंड्री और डेयरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | यह 4 वर्षीय स्नातक कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • 12वीं में विज्ञान या एग्रीकल्चर विषय से उत्तीर्ण।<br>• कुछ विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा भी संचालित करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर, म.प्र. |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | राजस्थान पशु चिकित्सा और विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी -<br>• स्वयं का पशुपालन केन्द्र खोल सकते हैं।<br>• शासकीय या निजी अनुसंधान संस्थाओं में कार्य कर सकते हैं।<br>• विभिन्न जूओलॉजिकल पार्क्स में कार्य कर सकते हैं।<br>• वेटेरनरी अस्पतालों, डेयरी फार्म्स एवं वाइल्ड लाइफ सेंक्च्युरी में कार्य कर सकते हैं आदि। |

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन एनिमल हस्बेंड्री

इस कोर्स का प्रमुख उद्देश्य है कि यह कोर्स विद्यार्थियों को नौकरी/स्वतंत्र कार्य के लिए सक्षम बनाता है। विद्यार्थी पशुपालन से संबंधित कार्य, बीमारियाँ, पशु देखरेख, पशुओं का प्रजनन आदि के बारे में

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन एनिमल हसबेंड्री |
| **कोर्स के बारे में** | यह 2 या 3 वर्ष का डिप्लोमा कोर्स है। इस कोर्स में थ्योरी के साथ प्रैक्टीकल कार्य पर भी बहुत जोर दिया जाता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • 12वीं में भौतिक शास्त्र + रसायन शास्त्र + जीव विज्ञान या एग्रीकल्चर विषय से उत्तीर्ण<br>• मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित DAHET नामक प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले निम्न 5 पॉलिटेक्निक कॉलेज यह कोर्स संचालित करते हैं-<br>• वेटेरनरी पॉलिटेक्निक, जबलपुर<br>• वेटेरनरी पॉलिटेक्निक, महू<br>• वेटेरनरी पॉलिटेक्निक, रीवा<br>• वेटेरनरी पॉलिटेक्निक, मुरैना<br>• वेटेरनरी पॉलिटेक्निक, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • राजस्थान पशु चिकित्सा और विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान<br>• कामधेनू विश्वविद्यालय, गांधीनगर, गुजरात<br>• राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी<br>• स्वयं का पशुपालन केन्द्र खोल सकते हैं।<br>• शासकीय या निजी अनुसंधान संस्थाओं में कार्य कर सकते हैं।<br>• विभिन्न जियोलॉजिकल पार्क्स में कार्य कर सकते हैं।<br>• वेटेरनरी अस्पतालों, डेरी फार्म्स एवं वाइल्ड लाइफ सेंक्च्युरी में कार्य कर सकते हैं आदि। |

## कोर्स का नाम : बी टेक/बीई डेयरी टेक्नोलॉजी

इसके माध्यम से विद्यार्थियों को डेयरी से जुड़े उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण, गुणवत्ता नियंत्रण आदि में प्रशिक्षित किया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बी टेक/बीई डेयरी टेक्नोलॉजी |
| **कोर्स के बारे में** | यह 4 वर्ष का स्नातक कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • 12वीं में गणित + भौतिक शास्त्र + रसायन शास्त्र से उत्तीर्ण।<br>• AIEE प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण।<br>• कुछ कॉलेज JEE के माध्यम से भी प्रवेश देते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • जवाहर नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • कामधेनु विश्वविद्यालय, गांधीनगर, गुजरात<br>• राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा<br>• इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़<br>• आनंद एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, आनंद, गुजरात<br>• इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी (इग्नू), नई दिल्ली<br>• कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी, नागपुर, महाराष्ट्र<br>• राजस्थान एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, बीकानेर, राजस्थान<br>• नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टिट्यूट, करनाल, हरियाणा<br>• इलाहाबाद एग्रीकल्चरल इंस्टिट्यूट, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | विद्यार्थी निम्न प्रकार के संस्थानों में कार्य कर सकते हैं -<br>• डेयरी फॉर्म्स<br>• अनुसंधान संस्थाएँ<br>• डेयरी उत्पाद बनाने वाली कंपनियाँ आदि।<br>• को-ऑपरेटिव सोसायटियाँ<br>• गुणवत्ता नियंत्रण विभाग |

❋ ❋ ❋

फार्मेसी
एलोपैथी चिकित्सा
प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल
बायोटेक्नोलॉजी
होमियोपैथी चिकित्सा
न्यूट्रीशन
हेल्थ और पैरामेडिकल सेक्टर
स्वास्थ्य
फिजियोथेरेपी
नर्सिंग
मनोविज्ञान
हॉस्पिटल मैनेजमेंट
ऑक्यूपेशनल थेरेपी

# स्वास्थ्य (हेल्थ)

किसी भी व्यक्ति/प्राणी की सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक संतुलन की स्थिति को स्वास्थ्य कहते हैं। व्यक्तियों या जानवरों को इस संतुलन की स्थिति को बनाए रखने में सहायता करते हैं वे स्वास्थ्य/हेल्थ समुदाय से जुड़े हैं। यह एक बहुत ही विस्तृत क्षेत्र है एवं हर व्यक्ति के लिए जरूरी भी। जिन विद्यार्थियों की रुचि स्वास्थ्य के क्षेत्र में अपना करियर बनाने में है वे इस कोर्स का चयन कर सकते हैं।

पूरे स्वास्थ्य समुदाय को देखें तो इसमें कई मैनेजर, मेडिकल औजार/मशीन बनाने वाले,सफाई वाले, सोशल वर्कर, पब्लिक हेल्थ में काम करने वाले नर्स, डॉक्टर, फार्मासिस्ट, मनोचिकित्सक आदि बहुत से लोग मिलते हैं। इसमें से एक क्षेत्र को बेहतर जानने के लिए आइए मिलते हैं प्रशांत मालवीय से जो कि ग्राम केसला, होशंगाबाद, म.प्र. से हैं और उन्होंने स्कूल की पढ़ाई शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय केसला से की है, साथ ही इसी क्षेत्र में फार्मेसी की पढ़ाई कर चुके हैं।

## प्रशांत ने चुना स्वास्थ्य का विकल्प

प्रशांत बचपन से ही अपने घर और आसपास स्वास्थ्य, दवाई, जड़ी-बूटी इत्यादि के बारे में सुनते और देखते आ रहे थे। उनका परिवार आयुर्वेदिक दवाई बनाने का व्यवसाय करता है, परन्तु प्रशांत ने कभी भी इसे व्यवसाय के रूप में चुनने का नहीं सोचा था। पर हाँ, घर के माहौल के कारण डॉक्टर बनने का सपना जरूर देखा था। वैसे भी हेल्थ सेक्टर (स्वास्थ्य के क्षेत्र) में कार्य करना है, तो सामान्यतः डॉक्टर या नर्स बनने का ही विचार आता है। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रशांत ने बायोलॉजी विषय लिया और बाद की विभिन्न संभावनाओं को खोजना शुरू किया। प्रशांत ने बीएससी, बीएड, फार्मेसी, हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, बीएएमएस,एमबीबीएस, बीडीएस इत्यादि प्रवेश परीक्षाओं के फॉर्म भरे। विभिन्न विकल्पों की पहचान करके किसी एक विकल्प को चुनना प्रशांत के लिए किसी उपलब्धि से कम नहीं था। जैसाकि प्रशांत ने सोचा था वैसा ही हुआ, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर की प्रवेश परीक्षा में फार्मेसी और हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन के लिए उसका चयन हुआ। एक नए कोर्स में प्रवेश लेने से मन में घबराहट भी बहुत ज्यादा हो रही थी, पर कॉलेज में होने वाले कैम्पस साक्षात्कार में एक सीनियर के चयन हो जाने से बहुत हिम्मत मिली। साथ ही तीन माह की ट्रेनिंग के दौरान प्रशांत को कई नई जानकारियाँ मिलीं, जैसे प्रोडक्शन, मार्केटिंग, पैकेजिंग जैसे क्षेत्र को भी चुन सकते हैं। प्रशांत

ने पैकेजिंग को चुना। स्नातक कोर्स करने के दौरान ही प्रशांत को टीसीएस फार्मेसी कम्पनी में नौकरी मिल गई, जिसे उन्होंने बहुत ही जल्दी छोड़ दिया और इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ पैकेजिंग में पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई की। आज प्रशांत बायोस्टैंडर्ड इंडिया में पैकेजिंग और डेवलपमेंट ऑफिसर के रूप में काम कर रहे हैं। प्रशांत का कहना है कि 'किसी भी विद्यार्थी को कोर्स या कॉलेज का चयन करने से पहले उस क्षेत्र के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारियाँ एकत्र करनी चाहिए। साथ ही जितने भी विकल्प हों उनके लिए आवेदन करना चाहिए।'

## एलोपैथी चिकित्सा

चिकित्सा की एक पद्धति है एलोपैथी जिसका उद्देश्य दवाओं या सर्जरी के माध्यम से बीमारी का उपचार करना है। आजकल यह सबसे प्रचलित पद्धति है। जब हम अस्पताल में जाते हैं तो इसी पद्धति में प्रशिक्षित डॉक्टरों द्वारा हमारा इलाज किया जाता है।

### कोर्स का नाम : एमबीबीएस

बैचलर ऑफ मेडिसिन, बैचलर ऑफ सर्जरी (एमबीबीएस) एक पेशेवर कोर्स है, जिसके लिए विद्यार्थियों को कोर्स पूरा होने पर चिकित्सा और सर्जरी में डिग्री प्रदान की जाती है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्वास्थ्य और चिकित्सा के बढ़ते क्षेत्र में बेहतर योगदान के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस कोर्स को मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा विनियमित किया

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | एमबीबीएस |
| **कोर्स के बारे में** | मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया के अनुसार यह साढ़े 4 साल का कोर्स है जो 9 सेमेस्टर में विभाजित है और उसके बाद एक साल की अनिवार्य इंटर्नशिप। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान विषयों के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कॉमन प्रवेश परीक्षा NEET (नीट)को पास करना अनिवार्य होता है। |

| | |
|---|---|
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • गांधी मेडिकल कॉलेज, भोपाल<br>• सुभाषचन्द्र बोस मेडिकल कॉलेज, जबलपुर<br>• गजरा राजा मेडिकल कॉलेज, ग्वालियर<br>• एम.जी.एम. मेडिकल कॉलेज, इन्दौर<br>• श्याम शाह मेडिकल कॉलेज, रीवा<br>• एम्स कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सशस्त्र बल मेडिकल कॉलेज, पुणे, महाराष्ट्र<br>• जेआईपीएमईआर, पुडुचेरी<br>• लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, दिल्ली<br>• मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज, दिल्ली<br>• ग्रांट मेडिकल कॉलेज, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• सेंट जॉन्स मेडिकल कॉलेज, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• मद्रास मेडिकल कॉलेज, चेन्नई<br>• स्टेनली मेडिकल कॉलेज, चेन्नई<br>• किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ<br>• क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, लुधियाना<br>• मेडिकल साइंसेज संस्थान, बीएचयू, वाराणसी<br>• सेठ जीएस मेडिकल कॉलेज, मुम्बई<br>• यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज, दिल्ली<br>• श्री रामचन्द्र मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट, चेन्नई<br>• लोकमान्य तिलक चिकित्सा कॉलेज, मुम्बई<br>• मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, कोलकाता |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को चिकित्सा के क्षेत्र में अपना करियर बनाने के कई अवसर मिलते हैं। छात्र यदि चाहें तो अपना स्वयं का क्लिनिक शुरू कर सकते हैं या किसी अस्पताल में काम कर सकते हैं। इस क्षेत्र में कुछ अन्य कार्य भी हैं जिसे छात्र अपने करियर के रूप में चुन सकते हैं जैसे चिकित्सा अधिकारी, सामान्य चिकित्सक, हेल्थकेयर रीसर्च एंड कंसलटेंट, शल्य चिकित्सक, चिकित्सा अधीक्षक, आहार विशेषज्ञ आदि। |

# होम्योपैथी चिकित्सा

होम्योपैथी चिकित्सा एक अलग तरह की पद्धति है जिसमें विशेष तरल पदार्थों (मदर टिंचर) से बनी दवाओं से रोगियों का इलाज किया जाता है, जो शरीर की प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली को ट्रिगर करता है।

## कोर्स का नाम : बीएचएमएस

बैचलर ऑफहोम्योपैथिक मेडिसिन एंड सर्जरी एक स्नातक डिग्री कोर्स है जिसके अन्तर्गत होम्योपैथिक पद्धति द्वारा चिकित्सा का ज्ञान दिया जाता है। इस कोर्स में विद्यार्थियों को होम्योपैथी का अध्ययन करने के साथ ही साथ होम्योपैथी फार्मेसी, पेडियाट्रिक्स, त्वचा विशेषज्ञता जैसे किसी भी एक क्षेत्र में विशेषज्ञता का चयन करने की पात्रता होती है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएचएमएस |
| **कोर्स के बारे में** | बैचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एंड सर्जरी कोर्स 5 वर्ष 6 महीने की अवधि का कोर्स है, जिसमें विद्यार्थियों को इंटर्नशिप भी करनी होती है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता-प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान विषयों के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए CET, KEAM आदि जैसी प्रवेश परीक्षाओं को पास करना अनिवार्य होता है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • शासकीय होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, भोपाल<br>• राजीव गाँधी होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, इंदौर<br>• शासकीय होम्योपैथिक कॉलेज, जबलपुर/रीवा<br>• जिला होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, रतलाम |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • अहमदाबाद होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, अहमदाबाद, गुजरात<br>• बाक्सन होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, ग्रेटर नोएडा (यूपी)<br>• बड़ौदा होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, वडोदरा<br>• बंगाल होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, आसनसोल जिला बर्दवान |

| | |
|---|---|
| | • भारतीय विद्यापीठ के होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, पुणे<br>• कटक होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, कटक<br>• डीएनडी होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, कोलकाता<br>• धन्वंतरि होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल और अनुसंधान केन्द्र, नासिक, महाराष्ट्र<br>• डॉ. मदन प्रताप खुतेता राजस्थान होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, जयपुर<br>• डॉ. बीआरआर होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, नई दिल्ली<br>• डॉ. डी. वाईटिल होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, पिंपरी, जिला पुणे<br>• सरकार होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, कुड्डापाह, आन्ध्रप्रदेश<br>• सरकार होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, इरनामट्टम, तिरुवनंतपुरम<br>• सरकारी होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, बेंगलुरू<br>• सरकारी होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, जिला वडोदरा |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद विद्यार्थियों के पास करियर बनाने के कई विकल्प मिलते हैं जैसे लेक्चरर, वैज्ञानिक, चिकित्सक या किसी अस्पताल में चिकित्सक के रूप में नौकरी करना इत्यादि। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी एक चिकित्सा अधिकारी, प्रशासक और प्रबन्धक, शिक्षक और शोधकर्ता के रूप में भी काम कर सकते हैं। |

# आयुर्वेद चिकित्सा

आयुर्वेद वैकल्पिक चिकित्सा की एक शाखा है। 'आयुर्वेद' शब्द का अर्थ जीव विज्ञान है। यह उपचार का एक तरीका है, जिसमें बीमारियों के लिए जड़ी-बूटियाँ, प्राकृतिक उपचार का उपयोग किया जाता है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में आयुर्वेद के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है।

## कोर्स का नाम : बीएएमएस आयुर्वेद

बीएएमएस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को आयुर्वेद की अवधारणाओं से परिचित करवाया जाता है। साथ ही रोगियों के इलाज के लिए प्राकृतिक दवाओं/जड़ी-बूटियों का उपयोग किस तरह किया जाता है इसके लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जाता है। आयुर्वेद ज्यादातर प्राकृतिक इलाज पर ध्यान केन्द्रित करता है। साथ ही जीवन शैली से जुड़ी बीमारियों को ठीक करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएएमएस आयुर्वेद |
| **कोर्स के बारे में** | आयुर्वेद चिकित्सा 5 साल 6 महीने की अवधि का पाठ्यक्रम है, जिसमें 1 वर्ष इंटर्नशिप का भी शामिल है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान विषयों के साथ कम से कम 50 प्रतिशत से अधिक अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• म.प्र. में PAHUNT प्रवेश परीक्षा कॉमन एन्ट्रेंस टेस्ट के रूप में संचालित होती है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • कुछ संस्थान विद्यार्थियों के चयन और प्रवेश के लिए अपनी स्वयं की प्रवेश परीक्षा आयोजित करते हैं।<br>• शास. आयुर्वेद कॉलेज, भोपाल/उज्जैन/ग्वालियर/इन्दौर/ जबलपुर<br>• अष्टांग आयुर्वेद कॉलेज, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • श्री धन्वंतरि आयुर्वेदिक कॉलेज, चंडीगढ़, पंजाब<br>• राजीव गांधी स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर, गुजरात<br>• जेबी रॉय स्टेट मेडिकल कॉलेज, डब्ल्यूबी विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल<br>• आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज, महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र<br>• राज्य आयुर्वेदिक कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, उत्तरप्रदेश<br>• श्री आयुर्वेद महाविद्यालय, महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र<br>• ऋषिकुल स्टेट कॉलेज, एचएनबी गढ़वाल यूनिवर्सिटी, हरिद्वार, उत्तराखंड<br>• दयानंद आयुर्वेदिक कॉलेज, जालंधर, पंजाब |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद विद्यार्थी आयुर्वेदिक ड्रग स्पेशलिस्ट के रूप में सरकारी और निजी दोनों ही आयुर्वेद क्लीनिक में काम कर सकते हैं। यदि चाहें, तो अपनी निजी प्रैक्टिस भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त छात्र स्वास्थ्य फार्मा उद्योग, श्रेणी प्रबन्धक, चिकित्सा |

| | |
|---|---|
| | प्रतिनिधि, व्यवसाय विकास अधिकारी, आयुर्वेदिक चिकित्सक, बिक्री प्रतिनिधि, क्षेत्र बिक्री के कार्यकारी/प्रबन्धक, उत्पाद प्रबन्धक, सहायक दावा प्रबन्धक, फार्मासिस्ट, जुनियर क्लिनिकल ट्रायल समन्वयक, जैसी क्षमताओं में करियर बना सकते हैं। |

# यूनानी चिकित्सा

यूनानी वैकल्पिक दवाओं की प्रणाली है। यह चार तत्वों की अवधि में आयुर्वेद के समान है और आयुर्वेद के समान ही लोकप्रिय है।

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ यूनानी मेडिसिन एवं सर्जरी

यह एक स्नातक पाठ्यक्रम है जो विद्यार्थी को यूनानी चिकित्सा में प्रशिक्षित करता है। आयुष श्रेणी में आने वाले सभी वैकल्पिक चिकित्सा स्नातक कार्यक्रमों की तरह आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी की मॉनीटरिंग सेंट्रल काउंसिल ऑफ इंडियन मेडिसिन द्वारा की जाती है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीयूएमएस |
| **कोर्स के बारे में** | बैचलर ऑफ यूनानी मेडिसिन एंड सर्जरी 5 साल का कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान विषयों के साथ कम से कम 50 प्रतिशत से अधिक अंकों के साथ उत्तीर्ण हो। जो छात्र उर्दू विषय के साथ कक्षा बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं, उन्हें इस कोर्स में प्रवेश के लिए प्राथमिकता दी जाती है।<br>• कुछ संस्थान विद्यार्थियों के चयन और प्रवेश के लिए अपनी स्वयं की प्रवेश परीक्षा आयोजित करते हैं। साथ ही प्रवेश के समय विद्यार्थियों की काउंसलिंग भी की जाती है। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • शासकीय यूनानी कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • आयुर्वेदिक और यूनानी तिब्बिया कॉलेज, नई दिल्ली<br>• सरकारी यूनानी मेडिकल कॉलेज, अरूंबक्कम, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, नई दिल्ली |

| | |
|---|---|
| | • अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश<br>• यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• सरकार निजामिया तिब्बी कॉलेज, हैदराबाद, तेलंगाना<br>• तमिलनाडु डॉ. एमजीआर मेडिकल यूनिवर्सिटी-चेन्नई, तमिलनाडु |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद विद्यार्थी डॉक्टर, सलाहकार, व्याख्याता, वैज्ञानिक, चिकित्सक, निजी प्रैक्टिस, चिकित्सा सहायक, सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ जैसे रोजगारों में अपना करियर बना सकते हैं। |

# नेचुरोपैथी (प्राकृतिक चिकित्सा)

नेचुरोपैथी (प्राकृतिक चिकित्सा) का अर्थ प्राकृतिक पदार्थों विशेषतः प्रकृति के मूल तत्वों (सूर्य- प्रकाश, वायु, मिट्टी, जल, आहार) द्वारा स्वास्थ्य की रक्षा और रोग के इलाज के लिए कार्य करना शामिल है। इसके अन्तर्गत रोगों के उपचार का प्रमुख आधार 'रोगाणुओं से लड़ने की शरीर की स्वाभाविक शक्ति अर्थात् रोग प्रतिरोधक शक्ति' को मजबूत बनाना है। प्राकृतिक चिकित्सा न केवल उपचार की पद्धति है अपितु यह एक जीवन पद्धति है। प्राकृतिक चिकित्सा में कई पद्धतियाँ आती हैं जैसे- जल चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा, एक्यूप्रेशर, एक्यूपंचर आदि। चिकित्सक हर रोगी के लिए उपचार प्रोटोकॉल को निजीकृत करते हैं, रोगी की जीवन शैली व आदतों का अध्ययन करते हैं, साथ ही वर्तमान स्थिति के लिए जिम्मेदार सुराग खोजने के लिए रोगियों की बीमारियों/एलर्जी को स्कैन करते हैं।

## कोर्स का नाम : बीएनवायएस नैचुरोपैथी (प्राकृतिक चिकित्सा)

यह पारम्परिक प्राकृतिक चिकित्सा और आधुनिक चिकित्सा दोनों के अध्ययन को शामिल करता है। इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को एक्यूप्रेशर थेरेपी, एक्यूपंक्चर, होम्योपैथिक चिकित्सा, हर्बल/वनस्पति चिकित्सा आदि का अध्ययन करवाया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएनवायएस नैचुरोपैथी (प्राकृतिक चिकित्सा) |
| **कोर्स के बारे में** | बैचलर ऑफ नैचुरोपैथी एंड योग साइंस (बीएनवाईएस) एकीकृत (इंटीग्रेटिव) मेडिसिन के क्षेत्र में 4 साल 6 महीने का स्नातक पाठ्यक्रम है, जिसमें एक वर्ष की अनिवार्य आवासीय इंटर्नशिप भी शामिल है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और |

| | |
|---|---|
| | जीव विज्ञान विषयों के साथ कम से कम 50 प्रतिशत से अधिक अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान विद्यार्थियों के चयन और प्रवेश के लिए अपनी स्वयं की प्रवेश परीक्षा आयोजित करते हैं। साथ ही प्रवेश के समय विद्यार्थियों विद्यार्थियों की काउंसलिंग और व्यक्तिगत साक्षात्कार भी किया जाता है। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • संत हिरदाराम कॉलेज, बैरागढ़, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सेंट्रल काउंसिल फॉर रीसर्च इन योग एंड नैचुरोपैथी, नई दिल्ली<br>• साईनाथ विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड<br>• माधव विश्वविद्यालय, सिरोही, राजस्थान<br>• सीएमजे विश्वविद्यालय, शिलांग<br>• सूर्योदय विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान<br>• एसडीएम कॉलेज ऑफ नैचुरोपैथी एंड योगिक साइंसेज, मेघालय |
| **कोर्स के बाद अवसर** | बैचलर ऑफ नेचुरोपैथी और योग विज्ञान (बीएनवाईएस) करने के बाद विद्यार्थी चिकित्सा विश्वविद्यालय, कॉलेजों में व्याख्याता, प्रोफेसर, रीडर्स, योग रजिस्टर्ड मेडिकल प्रेक्टिशनर, अस्पताल प्रशासक, प्राकृतिक चिकित्सा प्रैक्टिशनर, पोषण आहार वैज्ञानिक, एक्यूपंक्चर, एक्यूप्रेशर, स्पा प्रैक्टिशनर के रूप में तथा स्वास्थ्य सेवा प्रतिष्ठानों में गैर-नैदानिक विशेषज्ञ के रूप में सेना में काम करके अपना करियर बना सकते हैं। |

# फार्मेसी

चिकित्सा में प्रयुक्त द्रव्यों के ज्ञान को औषधि निर्माण अथवा भेषज विज्ञान को 'भेषजी' या 'फार्मेसी' (Pharmacy) कहते हैं। इसमें औषधि के ज्ञान, उनकी पहचान, संरक्षण, निर्माण, विश्लेषण आदि सम्मिलित हैं।

## कोर्स का नाम : बैचलर/डिप्लोमा इन फार्मेसी

पाठ्यक्रम के अन्तर्गत फार्मेसी से जुड़ी हर जानकारी जैसे दवाई बनाना, दवाई की मात्रा, दवाई को टेस्ट करना आदि जानकारी प्रदान की जाती है। नई औषधियों का आविष्कार तथा संश्लेषण फार्मेसी के प्रमुख कार्य हैं। औषधयोजन तथा विक्रय भी फार्मेसी के अंतर्गत आता है। यह करियर उनके लिए है जो फार्मेसी में रुचि रखते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर/डिप्लोमा इन फार्मेसी |
| **कोर्स के बारे में** | बहुत से विश्वविद्यालय अंडर ग्रेज्युएट कोर्स के अलावा एम फार्मा कोर्स भी करवाते हैं। बारहवीं के बाद 2 साल का डी फार्मा कोर्स या चार साल का बी फार्मा कोर्स भी कर सकते हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | विज्ञान संकाय में बायोलॉजी विषय के साथ बारहवीं पास होना इस क्षेत्र के लिए जरूरी है। बारहवीं के बाद सीधे डिप्लोमा कोर्स करके भी आप इस क्षेत्र में करियर बना सकते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • जीएसआईटीएस, इन्दौर<br>• शासकीय होल्कर साइंस कॉलेज, इन्दौर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर<br>• जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर<br>• बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल एजुकेशन एंड रीसर्च, पंजाब<br>• कॉलेज ऑफ फार्मेसी, दिल्ली<br>• बॉम्बे कॉलेज ऑफ फार्मेसी, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज, केरल<br>• गुरु जंबेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा<br>• बिड़ला इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, पिलानी<br>• बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, उत्तरप्रदेश<br>• राजीव गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंसेज, बेंगलुरू, कर्नाटक |
| **कोर्स के बाद अवसर** | दुनिया की बेहतरीन फार्मास्युटिकल कंपनियाँ भारत में अपना कारोबार कर रही हैं। इनके अलावा रैनबैक्सी, एफडीसी, कैडिला जैसी दवाई कंपनियों में अवसर मिलते हैं। फुल टाइम के अलावा पार्ट टाइम जॉब भी कर सकते हैं। स्वयं का मेडिकल स्टोर भी खोल सकते हैं। क्लीनिकल रीसर्च, आउटसोर्सिंग सेक्टर में भी सुनहरा भविष्य है। नर्सिंग होम, अस्पतालों में भी काम कर सकते हैं। |

# दंत चिकित्सा

दंत चिकित्सा स्वास्थ्य सेवा की ऐसी शाखा है, जो बाहरी मुख के भीतरी भाग, उसकी रक्षा, देखरेख, और उनकी औषधीय, शल्य तथा यांत्रिक उपचार संबद्ध है। इसके अंतर्गत रोगों के मुख संबंधी लक्षण, मुख के भीतर के रोग, घाव, तथा दुर्घटनाओं से क्षतिग्रस्त दाँतों की मरम्मत और टूटे दाँतों के बदले कृत्रिम दाँत लगाना, ये सभी कार्य आते हैं। दंत चिकित्सा के क्षेत्र में अनेक प्रकार की उपलब्धियाँ जैसे - डॉक्टर ऑफ डेन्टल सर्जरी, डॉक्टर ऑफ डेन्टल मेडिसिन और डॉक्टर ऑफ डेन्टल सर्जरी प्राप्त की जा सकती है।

## कोर्स का नाम : बीडीएस बैचलर ऑफ डेंटल सर्जरी

यह एक स्नातक पाठ्यक्रम है। इस कोर्स में दाँतों और मुख संबंधी सभी बीमारियों के बारे में जानकारी दी जाती है, तथा उनके इलाज के बारे में पढ़ाया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीडीएस बैचलर ऑफ डेंटल सर्जरी |
| **कोर्स के बारे में** | यह 4 वर्षीय कोर्स है। कॉलेजों में इसके बाद 1 वर्ष की इन्टर्नशीप भी कराई जाती है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी 12वीं में मुख्य विषय विज्ञान लेकर 50% से उत्तीर्ण हो<br>• NEET के द्वारा प्रवेश |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • शासकीय दंत चिकित्सा कॉलेज, मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलो में<br>• म.प्र. मेडिकल यूनिवर्सिटी, जबलपुर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र<br>• दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• गोवा यूनिवर्सिटी, गोवा |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस क्षेत्र में सरकारी और निजी दोनों प्रकार के करियर के अवसर हैं। डेन्टिस्ट स्वयं का क्लीनिक भी खोल सकते हैं। इसके अलावा फॉरेंसिक डिपार्टमेंट, सरकारी अस्पतालों में, इंडियन आर्मी के दन्त चिकित्सक आदि बन सकते हैं। ओरल पैथोलोजिस्ट, डेन्टल सर्जन, डेन्टल असिस्टेन्स आदि का जॉब भी आसानी से मिल सकता है। |

# डेंटल हाइजीनिस्ट

ये विशेषज्ञ मुख एवं दाँतों के स्वास्थ्य को बढ़ाने और बनाए रखने के लिए रोगियों को इससे संबंधित स्वच्छता के बारे में सिखाते हैं।

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन डेंटल हाईजीन

डेंटल हाइजीनिस्ट प्रोग्राम डिप्लोमा ओरल हेल्थकेयर सलाह प्रदान करने हेतु विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करता है। उदाहरण के लिए यह दाँतों की पॉलिशिंग, स्केलिंग, रेडियोग्राफ लेने, फिशर सीलेंट की नियुक्ति और स्थानीय एनेस्थेटिक का प्रशासन करने की रणनीति पर काम करता है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को मुख की स्वच्छता और निवारक दंत चिकित्सा के बारे में जानकारी और प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त, सैद्धांतिक शिक्षण और व्यावहारिक नैदानिक शिक्षण रोगियों की देखरेख में उपचार करके प्रदान किया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन डेंटल हाईजीन |
| **कोर्स के बारे में** | डेंटल हाईजीन में डिप्लोमा तीन साल का पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान विषयों के साथ 50 प्रतिशत से अधिक अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों को प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार में उत्तीर्ण होना भी अनिवार्य है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • एनसीवीआरटी से मान्यता प्राप्त संस्थान<br>• पीपुल्स यूनिवर्सिटी, भोपाल<br>• मॉडर्न डेंटल कॉलेज एंड रीसर्च सेंटर, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ, उत्तरप्रदेश<br>• तमिलनाडु सरकार डेंटल कॉलेज और अस्पताल, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• महर्षि मार्कण्डेश्वर कॉलेज ऑफ डेंटल साइंस एंड रिसर्च, अंबाला, हरियाणा<br>• पटना डेंटल कॉलेज और अस्पताल, पटना, बिहार<br>• बुद्ध इंस्टिट्यूट ऑफ डेंटल साइंस एंड हास्पिटल, पटना, बिहार<br>• पटना डेंटल कॉलेज और अस्पताल, पटना, बिहार<br>• एचकेई सोसायटी संजालिंगप्पा इंस्टिट्यूट ऑफ डेंटल साइंस एंड रीसर्च, गुलबर्गा, कर्नाटक<br>• हिमाचल इंस्टिट्यूट ऑफ डेंटल साइंसेज, सिरमौर, हिमाचल प्रदेश |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस डिप्लोमा कोर्स को पूरा करने के बाद विद्यार्थी डेंटल असिस्टेंट, मेडिकल असिस्टेंट जैसी क्षमताओं में अपना करियर बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त वे निजी और सरकारी दोनों विभागों में काम के लिए आवेदन दे सकते हैं। दंत रोग विशेषज्ञ सरकारी अस्पतालों (डेंटल वार्ड), निजी अस्पतालों (डेंटल वाईस), निजी दंत चिकित्सालयों, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों, सरकारी स्वास्थ्य मिशन और योजनाओं, सशस्त्र बलों और गैर सरकारी संगठनों में डेंटल हाईजिनिस्ट के रूप में काम कर सकते हैं। |

# मेडिकल लैब टेक्नॉलॉजी

मेडिकल लैब टेक्नॉलॉजी में निपुण व्यक्तियों को मेडिकल लैब टेक्नीशियन कहते हैं जो रोगी के खून, चर्म, मूत्र आदि की जाँच करते हैं, जिनसे डॉक्टरों को रोग की पहचान व निदान करने में सहायता मिलती है।

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन मेडिकल लेबोरेटरी टेक्नॉलॉजी

इस पाठ्यक्रम में उन्नत व्यावसायिक शिक्षा शामिल है जिसमें रोगों के उपचार, निवारण, निदान हेतु नैदानिक प्रयोगशाला परीक्षणों के माध्यम से परिणाम उपलब्ध कराना और विशिष्ट चिकित्सा जैसे कौशलों से विद्यार्थियों को शिक्षित किया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन मेडिकल लेबोरेटरी टेक्नोलॉजी |
| **कोर्स के बारे में** | डिप्लोमा इन मेडिकल लेबोरेटरी टेक्नोलॉजली दो वर्षीय डिप्लोमा कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान विषयों के साथ 45 प्रतिशत से अधिक अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों को प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार में उत्तीर्ण होना भी अनिवार्य है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर<br>• विभिन्न अस्पताल में डिप्लोमा कोर्स उपलब्ध |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• गवर्नमेंट थथुकुडी मेडिकल कॉलेज, थथुकुडी<br>• वेस्टफोर्ड इंस्टिट्यूट ऑफ पैरामिडकल साइंसेज, त्रिशूर |

| | |
|---|---|
| | • ईएमएस कॉलेज ऑफ पैरामेडिकल साइंसेज, मलप्पुरम<br>• बैंगलोर मेडिकल कॉलेज और अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरू<br>• किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ, उत्तरप्रदेश<br>• नेताजी सुभाषचन्द्र बोस सुभारती मेडिकल कॉलेज, मेरठ |
| **कोर्स के बाद अवसर** | मेडिकल लेबोरेट्री टेक्नालॉजी कोर्स के बाद विद्यार्थी निजी अस्पताल, ब्लड बैंक, पैथालॉजी प्रयोगशालाओं से संबंधित सहायक के रूप में अपना करियर बना सकते हैं। |

## बायोमेडिकल टेक्नॉलॉजी

इंजीनियरिंग व प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से स्वास्थ्य संबंधित उपकरणों का निर्माण और देखरेख बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी कहलाता है। यह विशेष रूप से बीमारी की पहचान या चिकित्सा के लिए किया जाता है।

### कोर्स का नाम : BE/BTech इन बायोमेडिकल इंजीनियरिंग

बायोमेडिकल इंजीनियरिंग प्रोग्राम विद्यार्थियों को इंजीनियरिंग, टेक्नॉलॉजी और बायोलॉजी विषयों के मिले-जुले रूप को पढ़ने और समझने का मौका देता है। इस कोर्स का उद्देश्य विद्यार्थियों को इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी और जीव विज्ञान की अवधारणाओं का उपयोग स्वास्थ्य के क्षेत्र में किस प्रकार किया जा सकता है, किस प्रकार स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को हल किया जा सकता है, इसके बारे में बताता है। साथ ही यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अनुसंधान कार्य में सहायता करना, स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र, नैदानिक प्रक्रियाओं, पुनर्वास, अस्पताल उपकरण और शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं को किस प्रकार बेहतर बनाया जा सकता है इसका दृष्टिकोण देता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | BE/B Tech इन बायोमेडिकल इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | बायोमेडिकल इंजीनियरिंग 4 साल का अंडरग्रेजुएट लेवल बैचलर डिग्री पाठ्यक्रम है। इसको आठ सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन, गणित और जीव विज्ञान विषयों के साथ 50 प्रतिशत से अधिक अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों को प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार में उत्तीर्ण होना भी अनिवार्य है। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • एसएटीआई विदिशा • जीएसआईटीएस, इन्दौर |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, दिल्ली/रूड़की<br>• नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, राउरकेला, ओडिशा<br>• मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश<br>• उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना<br>• पीईएस विश्वविद्यालय, बेंगलुरू, कर्नाटक |
| **कोर्स के बाद अवसर** | बायोमेडिकल इंजीनियरिंग करने के बाद विद्यार्थी पैथोलॉजिकल लैब, क्लिनिक और हास्पिटल्स के साथ-साथ रिहैबिलिटेशन क्लीनिक में भी नौकरी कर अपना करियर बना सकते हैं। इसके अलावा जीव चिकित्सा इंजीनियर, उपकरण डिजाइन इंजीनियर, लैब तकनीशियन अनुसंधान इंजीनियर के रूप में भी अपना भविष्य बना सकते हैं। |

# ऑक्यूपेशनल थेरेपी

बदलती जीवन शैली और भागमभाग के चलते लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता या कभी-कभी शारीरिक व मानसिक अशक्तता भी व्यक्तियों की जीवन शैली को प्रतिकूल बना देती है। इन विशेष स्थिति वाले लोगों का इलाज करने के लिए ऑक्यूपेशनल थैरेपी का सहारा लिया जाता है, जिसके अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों द्वारा व्यक्ति के कौशलों का विकास किया जाता है।

## कोर्स का नाम - बैचलर इन ऑक्यूपेशनल थेरेपी

बीएससी पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को उपचार के विभिन्न तरीकों के माध्यम से दिव्यांगों और सीमित लोगों के जीवन और स्थिति को समझने और उसमें सुधार के विकल्पों की पहचान करना सिखाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर इन ऑक्यूपेशनल थेरेपी |
| **कोर्स के बारे में** | व्यावसायिक चिकित्सा या बीएससी ऑक्यूपेशनल थेरेपी 3 वर्षीय अंडर ग्रेजुएट कोर्स है, जिसे 6 सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता-प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • इन्दौर इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, इन्दौर<br>• श्री सत्य साईं यूनिवर्सिटी, सीहोर |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • लोकमान्य तिलक म्यूनिसिपल मेडिकल कॉलेज, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर, तमिलनाडु<br>• अखिल भारतीय भौतिक चिकित्सा संस्थान, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• शारीरिक रूप से विकलांग के लिए पं. दीनदयाल उपाध्याय संस्था, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | व्यावसायिक चिकित्सक अस्पतालों, पुनर्वास केन्द्रों, निजी प्रेक्टिस जैसे- सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों, प्रारंभिक हस्तक्षेप केन्द्रों, सामाजिक सेवा संस्थानों, स्कूल, सरकारी एजेंसियाँ, मानसिक स्वास्थ्य सेवा संस्थानों आदि में सेवाएं दे सकते हैं। |

# रेडियोलॉजी

रेडियोग्राफी चिकित्सा जगत् का एक उपक्षेत्र है, जो एक्स-रे के उपयोग से बीमारियों और शरीर के आंतरिक या छिपे हुए हिस्सों से संबंधित बीमारियों के निदान में काम आता है। अन्य पैरामेडिकल व्यवसायों की तुलना में बीएससी रेडियोलॉजी से उत्तीर्ण विद्यार्थियों (रेडियोग्राफरों) की मांग भारत और विदेशों में लगातार बढ़ती जा रही है।

## कोर्स का नाम : बीएससी रेडियोलॉजी

इस कोर्स में क्लिनिकल रेडियोथेरेपी, रेडियो बॉयोलॉजी, क्लिनिकल ट्रायल, प्रशामक देखभाल, क्लिनिकल कीमोथेरेपी आदि विषयों पर विद्यार्थियों को शिक्षित किया जाता है। बीएससी और चिकित्सकीय रेडियोग्राफी दोनों का अध्ययन रेडियोग्राफी नैदानिक में करवाया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी रेडियोलॉजी/रेडियोग्राफी |
| **कोर्स के बारे में** | बैचलर ऑफ साइंस (बीएससी) रेडियोलॉजी 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है। जिसे 6 सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता-प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • नेताजी सुभाषचंद्र बोस मेडिकल कॉलेज, जबलपुर |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • AIIMS, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | बीएससी रेडियोग्राफी करने के बाद छात्र डायग्नोस्टिक रेडियोग्राफर, एक्स-रे टेक्नीशियन, रेडिएशन प्रोटेक्शन स्पेशलिस्ट, बेसिक एक्सरे, कम्प्यूटेड टोमोग्राफी, बोन डेंसिटोमेट्री, फ्लोरोस्कोपी, एंजियोग्राफी, इंटरवेंशनल रेडियोग्राफी, कार्डियोवस्कुलर इंटरवेंशनल रेडियोलॉजी जैसी क्षमताओं में अपना करियर बना सकते हैं। |

# फिजियोथेरेपी

मालिश, गर्मी और व्यायाम जैसे तरीकों से शारीरिक बीमारी, चोट या विकृति के उपचार को फिजियोथेरेपी कहते हैं।

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ फिजियोथेरेपी

यह कोर्स विद्यार्थियों को रोगी के मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार के दर्द को समझने के लिए व सहानुभूति और समानुभूतिपूर्वक अपेक्षित व्यवहार करने की समझ देता है। वृद्धावस्था के कारण दर्द या संधिशोथ जैसे रोग, किसी भी दुर्घटना के बाद दर्द और पुनर्वास इस पाठ्यक्रम के दायरे में आते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ फिजियोथेरेपी |
| **कोर्स के बारे में** | बीएससी फिजियोथेरेपी पूर्णकालिक स्नातक स्तर का पाठ्यक्रम है। जिसकी अवधि 4 वर्ष 6 माह है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता-प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • मध्यप्रदेश मेडिकल साइंस यूनिवर्सिटी, जबलपुर<br>• चाणक्य महाविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश<br>• के.एस. पैरामेडिकल कॉलेज, ग्वालियर<br>• पीपुल्स इंस्टिट्यूट ऑफ फिजियोथेरेपी, भोपाल<br>• राजीव गांधी कॉलेज, भोपाल<br>• सैफिया हामिदिया यूनानी तिब्बिया कॉलेज, बुरहानपुर<br>• श्री अरविन्दो इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, इन्दौर |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज (सीएमसी), वेल्लोर, तमिलनाडु<br>• मद्रास मेडिकल कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• श्री रामचन्द्र विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• सेठजी मेडिकल कॉलेज, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• बाबा फरीद यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंस, फरीदकोट, पंजाब |
| **कोर्स के बाद अवसर** | अव्यवस्थित जीवन शैली के कारण लोगों को विभिन्न आर्थोपेडिक और शारीरिक बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। ये बीमारियाँ दवाओं से ठीक नहीं होती हैं, जिससे इस कोर्स की मांग बहुत अधिक बढ़ती जा रही है। सभी अस्पतालों और स्वास्थ्य संस्थानों में इस क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए फिजियोथेरेपिस्ट के पद पर काम की संभावनाएँ बढ़ रही हैं। छात्र कुछ समय के अभ्यास के बाद स्वयं का भी फिजियोथेरेपी सेंटर खोल सकते हैं। |

# नर्सिंग

नर्सिंग पाठ्यक्रम राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2002 में परिकल्पित पेशेवर नर्सिंग और दाई के अभ्यास के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण कौशल, दक्षता और मानकों के विकास को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को शिक्षित करने के उद्देश्य से बनाया गया है।

## कोर्स का नाम - बीएससी नर्सिंग

बीएससी नर्सिंग का उद्देश्य अस्पताल और समुदाय में स्वास्थ्य समस्या को सुलझाने के दृष्टिकोण को विकसित करना है। भारत के कई कॉलेज इस पाठ्यक्रम को चिकित्सा की एक शाखा के रूप में ही देखते हैं। यह कोर्स विद्यार्थियों को व्यापक नर्सिंग देखभाल प्रदान करने में आवश्यक ज्ञान और कौशल में भी योग्य बनाने के लिए विद्यार्थियों को शिक्षित करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी नर्सिंग |
| **कोर्स के बारे में** | बैचलर ऑफ साइंस इन नर्सिंग या बीएससी नर्सिंग 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषयों के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा के साथ ही व्यक्तिगत साक्षात्कार भी लेते हैं। |

| | |
|---|---|
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • कस्तूरबा कॉलेज ऑफ नर्सिंग, भोपाल<br>• गांधी मेडिकल कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली<br>• जवाहरलाल इंस्टिट्यूट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल एजुकेशन एंड रीसर्च, पुदुचेरी, तमिलनाडु<br>• श्री रामचन्द्र विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• पं. भगवतदयाल शर्मा पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, रोहतक, हरियाणा |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस पाठ्यक्रम से स्नातक या स्नातकोत्तर करने के बाद विद्यार्थी विद्यार्थी प्रमाणित नर्स, दाई, क्लिनिकल नर्स, विशेषज्ञ, निदेशक/मुख्य कार्यकारी अधिकारी, प्रबन्धक/प्रशासक, नर्स एनेस्थेटिस्ट, नर्स एजुकेटर, नर्स व्यवसायी, परिचारिका के रूप में काम कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को ऐसे नर्स के रूप में तैयार करता है जो स्वास्थ्य टीम के सदस्यों के रूप में कुशलतापूर्वक अस्पताल या अन्य स्वास्थ्य संगठनों में कार्य कर सकें।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी |
| **कोर्स के बारे में** | इस पाठ्यक्रम की अवधि 3 या 4 वर्ष की है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु 10+2 अथवा इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।<br>• कुछ कॉलेज प्रवेश परीक्षा भी संचालित करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • इंदौर नर्सिंग कॉलेज, इंदौर<br>• नेताजी सुभाष चन्द्र बोस मेडिकल कॉलेज, जबलपुर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • कॉलेज ऑफ नर्सिंग, भारतीय विद्यापीठ, पुणे, महाराष्ट्र<br>• राजश्री छत्रपति साहू महाराज गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज, कोल्हापुर, महाराष्ट्र<br>• नारायण कॉलेज ऑफ नर्सिंग, नेल्लोर, आंध्र प्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | यह कोर्स पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी इंडियन नर्सिंग काउंसिल या राज्य नर्सिंग काउंसिल पर रजिस्टर कर सकते हैं। वे स्वास्थ्य से सम्बंधित संस्थाओं- आंगनवाड़ी, अस्पताल आदि पर भी कार्य कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : औक्सिलरी नर्स मिडवाइफ (ANM) डिप्लोमा

यह एक डिप्लोमा कोर्स है जो विद्यार्थियों को ANM बनने में सहायता करता है। कई गाँवों में ANM स्वास्थ्य कार्यकर्ता के रूप में कार्य करते हैं और समुदाय को स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। गाँव व समुदाय तक सुरक्षित और प्रभावी स्वास्थ्य सेवाओं का पहुँचना इनकी एक अहम जिम्मेदारी होती है। ANM कई स्वास्थ्य संगठनों के बहुत अहम अंग होते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | औक्सिलरी नर्स मिडवाइफ ANM डिप्लोमा |
| **कोर्स के बारे में** | यह एक 2 वर्षीय डिप्लोमा कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 12वीं में 45 प्रतिशत अंकों से उतीर्ण हो। विज्ञान संकाय के विषय (जीव विज्ञान) लेना लाभदायी होगा।<br>• कुछ कॉलेज प्रवेश परीक्षा संचालित करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • ANM ट्रेनिंग सेंटर, जबलपुर/अन्नुपुर/डिंडोरी/उमरिया/गुना आदि<br>• श्री अरबिन्दो कॉलेज ऑफ नर्सिंग, इंदौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सुमनदीप विद्यापीठ, बरोडा, गुजरात<br>• विभिन्न जिलों में ANM ट्रेनिंग सेंटर होते हैं। |
| **कोर्स के बाद अवसर** | यह कोर्स पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी विभिन्न शासकीय अस्पतालों, आंगनवाड़ी रूरल हेल्थ सेंटर, वृद्धआश्रम, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, नर्सिंग होम, मैटरनिटी होम आदि में कार्य कर सकते हैं। कुछ विद्यार्थी इस कोर्स के बाद नर्सिंग में स्नातक भी करते हैं। |

* * *

केमिकल इंजीनियरिंग
ऑटोमोबाइल
एन्वॉयरन्मेंट इंजीनियरिंग
इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग
मेकेनिकल इंजीनियरिंग
पेट्रोलियम इंजीनियरिंग
डेयरी टेक्नोलॉजी
माइनिंग इंजीनियरिंग
टेक्सटाइल इंजीनियरिंग
पॉवर इंजीनियरिंग
मरीन इंजीनियरिंग
कंप्यूटर इंजीनियरिंग
इंजीनियरिंग
इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी
प्रोडक्शन इंजीनियरिंग

# इंजीनियरिंग

बी ई (BE) का पूरा रूप है- बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग और बीटेक (BTech) का पूरा रूप है- बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी। इन दोनों में से प्रत्येक एक इंजीनियरिंग कोर्स है, जो चार साल की अवधि का होता है। इन दोनों उपाधियों में क्या अंतर है? अंतर साधारण-सा है–बीई कोर्स सैद्धांतिक होता है, जब कि बीटेक कोर्स में ज़ोर प्रायोगिक पक्ष पर अधिक होता है। कुछ विश्वविद्यालय अपने इंजीनियरिंग कोर्स पर बीई की डिग्री देते हैं, तो कुछ बीटेक की।

छात्र/छात्रा को इंजीनियरिंग कोर्स में प्रवेश करने के लिए गणित (Maths), भौतिक विज्ञान (Physics) और रसायन विज्ञान (Chemistry) विषयों के साथ अपनी 10 + 2 शिक्षा पूरी करनी होती है और न्यूनतम 50% अंक प्राप्त करने होते हैं। आरक्षित वर्ग के छात्र को न्यूनतम 45% अंक प्राप्त करने होते हैं।

भारत में इंजीनियरिंग में प्रवेश रैंक के आधार पर होता है। अच्छे अंक पाने वाले छात्र को इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश में प्राथमिकता दी जाती है। अच्छे कॉलेज में प्रवेश के लिए छात्र को प्रवेश परीक्षा देनी होती है। ये परीक्षाएं दो तरह की होती हैं-पसंद के कॉलेज में प्रवेश के लिए संयुक्त इंजीनियरिंग परीक्षा–मुख्य (Joint Engineering Exam.- Main, जिसे संक्षेप में JEE Main कहते हैं) और आईआईटी (IIT) में प्रवेश के लिए JEE Advance। प्रदर्शन के आधार पर छात्र को राज्य रैंक (स्टेट रैंक) और राष्ट्रीय रैंक (नेशनल रैंक) दी जाती है। फिर अलग-अलग कॉलेजों में रैंक-निर्धारित मापदंड के आधार पर राष्ट्रीय/राज्य स्तरों के लिए विद्यार्थी आवेदन कर सकते हैं।

बारहवीं की परीक्षा में शामिल होने वाले विद्यार्थी भी प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं।

यदि विद्यार्थी चाहे, तो 10 वीं के बाद ही इंजीनियरिंग में 3 वर्ष का डिप्लोमा कर सकता है। डिप्लोमा के बाद यदि वह इंजीनियरिंग में डिग्री करना चाहे, तो पार्श्विक प्रवेश (लेटरल एंट्री) सुविधा के जरिए उसे 4 वर्षीय इंजीनियरिंग डिग्री कोर्स के द्वितीय वर्ष में सीधे प्रवेश मिल जाता है। इस प्रकार दोनों स्थितियों में (अर्थात् दसवीं के बाद पहले डिप्लोमा व फिर डिग्री करने में या 10+2 के बाद सीधे 4 वर्ष के इंजीनियरिंग डिग्री कोर्स को करने में) विद्यार्थी को दसवीं के बाद 6 साल में इंजीनियरिंग की डिग्री मिल जाती है।

जिन्होंने डिप्लोमा कर रखा है, वे भी एएमआईई (Associate Member of Institute of Engineers) की परीक्षा देकर डिग्री धारकों के समकक्ष हो सकते हैं।

**विशेषज्ञता के क्षेत्र/ शाखाएँ :** इंजीनियरिंग के कोर्स में पहले वर्ष में सामान्य पढ़ाई के बाद दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ष में विशेषज्ञता/शाखा अनुसार पढ़ाई/प्रशिक्षण दिया जाता है। इंजीनियरिंग की सभी प्रमुख शाखाओं का विवरण नीचे की तालिकाओं में दिया गया है, फिर भी कुछ विश्वविद्यालय एक ही क्षेत्र (जैसे कम्प्यूटर) में कोर्स में थोड़े-बहुत फेर-बदल करके अलग-अलग जरूरतों को पूरा करने के लिए शाखाओं का अलग-अलग नामकरण (जैसे कम्प्यूटर साइंस इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी, कम्प्यूटर साइंस इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी) करते हैं, अतः विद्यार्थी को पाठ्यक्रम (सिलेबस) का विवरण देखकर अपनी शाखा का चयन करना चाहिए।

### जोगीवाडा गाँव के मेहरबान का करियर

गुजरात के भरूच जिले में स्थित पेस्टिसाइड प्लांट के संचालक केमिकल इंजीनियर मेहरबान बतलाते हैं, 'जब मैं स्कूल की पढ़ाई के आखिरी साल में था, तब आगे की पढ़ाई को लेकर बड़े पसोपेश में रहता था। तभी एक संस्था से मुझे इंजीनियरिंग के बारे में जानकारी मिली। पर घर से दूर बड़े शहर में रहकर पढ़ाई करने का निर्णय नहीं ले पा रहा था। इस समय भी उसी संस्था ने मेरा हौसला बढ़ाया। मैंने केमिकल इंजीनियरिंग की राह चुनी। सही समय पर मिले सही मार्गदर्शन और सही निर्णय से मैं अपने लिए सही करियर का चयन कर पाया। आज मैं भविष्य को लेकर अनिर्णय की स्थिति से गुजरने वाले नए विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देता हूँ। उन्हें कहता हूँ कि अपने लिए वही ब्रांच चुनें जो हमें ठीक लगे, न कि दुनिया को। मैंने केमिकल इंजीनियरिंग शाखा चुनी और आज मैं अपने काम से संतुष्ट हूँ।'

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग/टेक्नोलॉजी

**क्षेत्र का परिचय :** कृषि खेती और वानिकी के माध्यम से खाद्य और अन्य सामान के उत्पादन से संबंधित है। कृषि में पौधों या फसलों के उत्पादन का और पालतू जानवरों के पालन का समावेश है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग/टेक्नोलॉजी |
| **कोर्स के बारे में** | इस कोर्स के माध्यम से, विद्यार्थियों में कृषि के क्षेत्र में तकनीकी ज्ञान, कौशल और उत्कृष्टता को विकसित किया जाता है। केमिकल व इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, वनस्पति व जीवविज्ञान के विषयों के साथ छात्र कृषि सम्बंधित उत्पादन के विज्ञान और प्रौद्योगिकी पहलुओं को भी समझते हैं। यह कोर्स व्याख्यान, प्रयोगशाला-कार्य, व्यावहारिक (ऑन–फील्ड) प्रशिक्षण, असाइनमेंट, कार्यशालाओं आदि के माध्यम से संचालित किया जाता है । इस कोर्स के दौरान विद्यार्थियों को एक शोध परियोजना और इंटर्नशिप प्रशिक्षण भी लेना होता है । |
| **शैक्षणिक योग्यता** | गणित, भौतिकी, रसायन शास्त्र, जैव प्रौद्योगिकी जैसे विषयों से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से । |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • कृषि विश्वविद्यालय, नैनी, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश<br>• कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | खाद्य प्रसंस्करण, कृषि अनुसंधान और विकास फर्म, कृषि व्यापारिक फर्म, सरकारी क्षेत्र, अकादमिक संस्थान में कार्य करने के अवसर। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : एरोनॉटिक्स

एरोनॉटिक्स (वैमानिकी) उड्डयन विज्ञान है और वायुयान और उपग्रह की डिजाइन से सम्बन्धित है ।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | 'एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग' और 'एयरोस्पेस इंजीनियरिंग' को प्रायः एक ही अर्थ में उपयोग किया जाता है, फिर भी दोनों के बीच अंतर है। 'एयरोस्पेस इंजीनियरिंग' में वायुमंडल के भीतर और वायुमंडल के बाहर अंतरिक्ष-यात्रा का अध्ययन किया जाता है। 'एयरोनॉटिकल (वैमानिकी) इंजीनियरिंग' वायुमंडल में उड़ने वाले वायुयान के शिल्प से संबंधित है, जिसमें वाणिज्यिक विमान डिजाइन और उपग्रह प्रौद्योगिकी के साथ सैन्य-विमान डिजाइन और विकास शामिल होते हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | कोई सरकारी कॉलेज नहीं |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • आईआईटी, मुंबई • आईआईटी, कानपुर • आईआईटी, खड़गपुर<br>• आईआईटी, चेन्नई • मद्रास इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, चेन्नई |
| **कोर्स के बाद अवसर** | उत्तीर्ण विद्यार्थी रक्षा अनुसंधान व विकास संबंधी संस्थानों, नेशनल एयरोनॉटिकल प्रयोगशालाओं, एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट संस्थापनाओं, नागरिक उड्डयन विभाग, प्रतिरक्षा सेवाओं में रोजगार पा सकते हैं । वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में भी रोजगार पा सकते हैं, क्योंकि यह क्षेत्र अंतरिक्ष यानों, उपग्रहों और मिसाइलों के विकास से भी संबंध रखता है। इस विधा के इंजीनियर विमान के डिजाइन, विकास, परीक्षण, ऑपरेशंस और रखरखाव संबंधी क्षेत्रों में काम कर सकते हैं। इससे जुड़े प्रोफेशनल्स विभिन्न संस्थानों में प्रबंधकीय व शिक्षण के पदों पर भी काम कर सकते हैं। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : ऑटोमोबाइल

ऑटोमोबाइल, मोटरवाहन या कार पहियों वाला एक वाहन है, जो सड़कों पर सामान से अधिक लोगों के परिवहन के काम आता है; और जो अपना इंजन स्वयं वहन करता है। इस शब्द का प्रयोग विद्युतीकृत रेल प्रणाली के सन्दर्भ में भी होता है ।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग के अंतर्गत सभी वाहनों जैसे मोटरसाइकिल, बस, ट्रक, ट्रैक्टर इत्यादि के डिजाइन और उन का निर्माण किया जाता है। इस कोर्स में मेकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, सॉफ्टवेयर और सेफ्टी इंजीनियरिंग का परिचय भी छात्र को दिया जाता है, क्योंकि इनकी जानकारी की भी जरूरत पड़ती है। ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग के अंतर्गत वाहनों के पुर्जों का निर्माण और पूरा एक वाहन तैयार करने या उसमें ग्राहक की पसंद के अनुसार बदलाव करने के बारे में अध्ययन करवाया जाता है। ऑटोमोबाइल इंजीनियर का काम किसी भी वाहन का डिजाइन, विकास, निर्माण, परीक्षण और रखरखाव करना होता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | भौतिकी, रसायन शास्त्र, गणित/जैव प्रौद्योगिकी/कम्प्यूटर-साइंस जैसे विषयों से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • शासकीय जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज, भोपाल,<br>• मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भोपाल<br>• ओरिएण्टल कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • एनआईटी, वारंगल/तिरुच्चिरापल्ली/सुरथकल/हमीरपुर/दिल्ली<br>• मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश<br>• मालवीय नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर, राजस्थान<br>• विश्वेश्वरैया नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, नागपुर, महाराष्ट्र<br>• कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड रूरल टेक्नोलॉजी, मेरठ, उत्तरप्रदेश<br>• हिन्दुस्तान कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, मथुरा, उत्तरप्रदेश<br>• महावीर इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, गाजियाबाद<br>• गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज मोडासा, साबरकांठा, गुजरात<br>• दिल्ली कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, पलवल, हरियाणा<br>• वीरमाता जिजाबाई टेक्नोलॉजिकल इंस्टिट्यूट, मुंबई, महाराष्ट्र |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | इसमें वाहन बनाने वाली कंपनी से लेकर सर्विस स्टेशन, ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन, इंश्योरेंस कंपनियों जैसे क्षेत्रों में करियर की संभावनाएं हैं। डिग्रीधारी के लिए वाहनों का डिजाइन, विकास और निर्माण, ऑटोमोबाइल वर्कशॉप्स (कार्यशालाओं) में कारों का रखरखाव, विमान उद्योग व विमानन क्षेत्र में कार्य, समुद्री जहाजों और डीजल पॉवर स्टेशनों में कार्य के अवसर उपलब्ध होते हैं । |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : जेनेटिक्स

जेनेटिक्स जीव-विज्ञान की एक शाखा है, जिसमें जीवों/वनस्पतियों के जींस, जींसगत बदलाव और वंशानुगतिकी का अध्ययन किया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | जेनेटिक इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | जेनेटिक तकनीक के जरिए जींस की सहायता से पेड़-पौधों, पशुओं और मनुष्यों में गुणवत्ता (जैसे बीमारियों से लड़ने की क्षमता) को विकसित किया जाता है। जेनेटिक तकनीक के द्वारा ही रोग प्रतिरोधक या सूखे में पैदा हो सकने वाली फसलों का उत्पादन किया जाता है। इस तरह की वनस्पतियाँ जेनेटिकली मोडिफाइड भोजन के रूप में जानी जाती हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | गणित, भौतिकी, रसायन शास्त्र, जैव प्रौद्योगिकी जैसे विषयों से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर में एम.एस-सी. (एग्रीकल्चरल जेनेटिक्स व प्लांट ब्रीडिंग) |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • आईआईटी, खड़गपुर, पश्चिम बंगाल<br>• आईआईटी मद्रास, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• नियोटिया कॉलेज, कोलकाता, पश्चिम बंगाल<br>• चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, चंडीगढ, पंजाब<br>• बीआईटीएस, हैदराबाद, तेलंगाना |
| **कोर्स के बाद अवसर** | मेडिकल व फार्मास्युटिकल कंपनी, एग्रीकल्चर सेक्टर, प्राइवेट और सरकारी रीसर्च और डेवलपमेंट सेंटर में कार्य करने के अवसर होते हैं। टीचिंग को भी करियर ऑप्शन के रूप में आजमाया जा सकता है। |

| | |
|---|---|
| | इसके अलावा, इनके लिए रोजगार के कई और भी रास्ते हैं। बायोटेक लेबोरेटरी में रीसर्च, एनर्जी और एन्वॉयरनमेंट से संबंधित इंडस्ट्री, एनिमल हसबैंड्री, डेयरी फार्मिंग, मेडिसन आदि में भी रोजगार के खूब मौके हैं। कुछ ऐसे संस्थान भी हैं, जो जेनेटिक इंजीनियर को हायर करती है, जैसे नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ इम्यूनोलॉजी, नई दिल्ली; सेंटर फॉर डीएनए फिंगरप्रिंट ऐंड डाइग्नोस्टिक्स, हैदराबाद; बायोकेमिकल इंजीनियरिंग रीसर्च एंड प्रोसेस डेवलपमेंट सेंटर, चंडीगढ़; द इंस्टिट्यूट ऑफ जिनोमिक एंड इंटेग्रेटिव बायोलॉजी, दिल्ली आदि। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : सिविल

सिविल इंजीनियरिंग, व्यावसायिक इंजीनियरिंग की एक शाखा है जो भवन, सड़क, सुरंग, पुल, नहर और बाँध आदि के डिजाइन, निर्माण और रखरखाव से सम्बन्ध रखती है। इसे सैन्य इंजीनियरिंग से अलग करने के लिए 'सिविल' (असैनिक) कहा जाता है ।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | सिविल इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | सिविल इंजीनियर के कार्यक्षेत्र में किसी भी परियोजना (प्रोजेक्ट) की प्लानिंग, स्थल-चयन (साइट-सिलेक्शन), संभावना (फीज़िबिलिटी), अध्ययन, डिजाइनिंग, निर्माण, जटिलताओं का समाधान व रखरखाव आते हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • आईआईटी (भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान), इंदौर<br>• आईईटी, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर<br>• एसजीएसआईटीएस, इंदौर<br>• शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, जबलपुर<br>• एसएटीआई, विदिशा<br>• शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, उज्जैन आदि |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • आईआईटी (भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान), चेन्नई, तमिलनाडु<br>• भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई, महाराष्ट्र<br>• भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली<br>• भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर, पश्चिम बंगाल |

| | |
|---|---|
| | • दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, दिल्ली<br>• राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुच्चिरापल्ली, तमिलनाडु |
| **कोर्स के बाद अवसर** | निर्माण क्षेत्र में परिवहन और संचार, बुनियादी ढांचे, सड़क, पुल, नहर और अन्य बड़ी संरचनाएं शामिल हैं। सिविल इंजीनियर, भंडारण, उत्पादन, गैस, बिजली के वितरण और जल संसाधन जैसे क्षेत्रों में भी काम करते हैं। वे प्रायः लोक निर्माण (PWD) परियोजनाओं पर, राज्य सरकारों के प्राधिकरणों के अधीन या निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों, अनुसंधान तथा शिक्षण संस्थानों में कार्य करते हैं। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : केमिकल

केमिकल इंजीनियर का मुख्य काम विभिन्न रसायनों और रासायनिक उत्पादों के निर्माण व उसमें आनेवाली समस्याओं को हल करना है। उदाहरणार्थ केमिकल इंजीनियर के लिए कुछ विशेषज्ञता के क्षेत्र हैं- ऑक्सिडेशन, पॉलीमराइजेशन या प्रदूषण-नियंत्रण।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | केमिकल इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | इस कोर्स में रसायन विज्ञान, जैव रसायन, इंजीनियरिंग और सूचना प्रौद्योगिकी का अध्ययन शामिल है। पेट्रोलियम, रिफाइनिंग, फर्टिलाइजर टेक्नोलॉजी, खाद्य व कृषि उत्पादों की प्रोसेसिंग, कृत्रिम (सिंथेटिक) खाद्य, पेट्रो-केमिकल्स, सिंथेटिक धागे (फाइबर्स), कोयला, खनिज उद्योग और पर्यावरण (एनवॉयर्नमेंटल) इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्र इस विषय के अंतर्गत आते हैं । |
| **शैक्षणिक योग्यता** | गणित, भौतिकी, रसायन शास्त्र, जैव प्रौद्योगिकी जैसे विषयों से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • मौलाना आजाद नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, भोपाल<br>• शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, उज्जैन<br>• सम्राट अशोक इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, विदिशा |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई, महाराष्ट्र<br>• भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली<br>• भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर, पश्चिम बंगाल<br>• दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, दिल्ली<br>• राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुच्चिरापल्ली, तमिलनाडु |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | केमिकल इंजीनियरिंग से जुड़े प्रोफेशनल्स को डाई, पेंट, वार्निश, दवाइयों, तेजाब, पेट्रोलियम, खादों, डेयरी-उत्पादों से विभिन्न खाद्य-पदार्थों से जुड़े उद्योगों में काम करने का अवसर मिलता है। ये टेक्सटाइल या प्लास्टिक इंडस्ट्री से लेकर कांच या रबर उद्योग में भी काम पा सकते हैं। वे उत्पादन में लगी किसी इंडस्ट्री या फर्म में कार्य कर सकते हैं। किसी अनुसंधान केंद्र में भी रोजगार पा सकते हैं। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : मेकेनिकल

मेकेनिकल इंजीनियरिंग, इंजीनियरिंग की सबसे पुरानी और प्रमुख शाखाओं में से एक है, जिसमें मशीनों की बनावट, निर्माण, पॉवर प्लांट इंजीनियरिंग, माप-विज्ञान (मैट्रोलॉजी) और क्वॉलिटी कंट्रोल, प्रोडक्शन इंजीनियरिंग, अनुरक्षण (मेंटेनेंस) इंजीनियरिंग और मैन्युफेक्चरिंग इंजीनियरिंग आदि के बारे में अध्ययन किया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | मेकेनिकल इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | इंजीनियरिंग की यह शाखा विद्यार्थियों को भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर उपकरणों और मशीनरी की रचना और कार्यप्रणाली को समझने में मदद करती है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इंदौर<br>• एसजीएसआईटीएस, इंदौर<br>• शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, उज्जैन<br>• शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, जबलपुर<br>• सम्राट् अशोक इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, विदिशा |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली<br>• भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई, महाराष्ट्र<br>• भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर, पश्चिम बंगाल<br>• राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुच्चिरापल्ली, तमिलनाडु |
| **कोर्स के बाद अवसर** | शायद ही कोई क्षेत्र होगा, जहां मेकेनिकल मशीनें या उपकरण का इस्तेमाल न किया जाए। अतः मेकेनिकल के विद्यार्थियों को थर्मल |

| | |
|---|---|
| | पॉवर प्लांट, परमाणु स्टेशनों, बिजली उत्पादन आदि से संबंधित परियोजना, नवीकरणीय ऊर्जा, ऑटोमोबाइल, गुणवत्ता नियंत्रण, औद्योगिक स्वचालन आदि में आसानी से नियुक्ति मिल जाती है। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : इलेक्ट्रिकल

इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग इंजीनियरिंग की वह शाखा है, जो विद्युत प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) इलेक्ट्रिकल उपकरणों व प्रणालियों के बारे में बताती है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | यह कोर्स विद्युत के उत्पादन, वितरण, उपयोग और बिजली पैदा और उपयोग करने वाले उपकरणों के विषय में जानकारी देता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), इंदौर<br>• एसजीएसआईटीएस, इंदौर<br>• शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, उज्जैन<br>• शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, जबलपुर<br>• सम्राट् अशोक इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, विदिशा |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई, महाराष्ट्र<br>• भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली<br>• भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर, पश्चिम बंगाल<br>• दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, दिल्ली<br>• राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुच्चिरापल्ली, तमिलनाडु |
| **कोर्स के बाद अवसर** | एक इलेक्ट्रिकल इंजीनियर थर्मल/एटॉमिक/हाइड्रो पॉवर-प्लांट, विद्युत पारेषण (ट्रांसमिशन), विद्युत - उपकरण - रख - रखाव, इलेक्ट्रॉनिक्स, दूर-संचार, रेलवे या किसी भी विनिर्माण उद्योग (मैन्युफेक्चरिंग इंडस्ट्री) इत्यादि में कार्य पा सकता है। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : कम्प्यूटर विज्ञान

कम्प्यूटर के दो हिस्से होते हैं: हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर। हार्डवेयर इंजीनियर कम्प्यूटर के पुर्जों के साथ काम करते हैं, सॉफ्टवेयर इंजीनियर कम्प्यूटर के प्रोग्राम्स के साथ काम करते हैं; ये सॉफ्टवेयर्स को डिजाइन, डेवलप और मेंटेन करते हैं। कम्प्यूटर इंजीनियर कम्प्यूटर हार्डवेयर्स और सॉफ्टवेयर्स के साथ काम करते हैं, ये कम्प्यूटर को डिजाइन और विकसित करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | कम्प्यूटर विज्ञान इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | संगणक अभियांत्रिकी (कम्प्यूटर इंजीनियरिंग) इंजीनियरिंग की वह शाखा है, जिसमें कम्प्यूटर (संगणक) के सभी हार्डवेयर, साफ्टवेयर एवं प्रचालन तंत्र (ऑपरेटिंग-सिस्टम) की डिजाइन, रचना, निर्माण, परीक्षण व रखरखाव आदि का अध्ययन किया जाता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इंदौर<br>• एस.जी.एस.आई.टी.एस., इंदौर<br>• शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, उज्जैन<br>• शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, जबलपुर<br>• सम्राट् अशोक इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, विदिशा |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.), चेन्नई/ दिल्ली/ मुंबई/कानपुर/रूड़की/खड़गपुर,<br>• बिरला इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस, पिलानी आदि |
| **कोर्स के बाद अवसर** | कम्प्यूटर इंजीनियर वेबसाइट डेवलपमेंट, वेबसाइट एप्लीकेशन, वेब विश्लेषण, कम्प्यूटर ग्राफिक्स, वीडियो गेम, एम्बेडेड सिस्टम, तंत्र विश्लेषण (सिस्टम एनालिसिस), सॉफ्टवेयर प्रोग्रामिंग, सॉफ्टवेयर गुणवत्ता परीक्षण, सिस्टम और नेटवर्क प्रशासन, मोबाइल एप्लीकेशन, कम्प्यूटर सुरक्षा, डाटा-बेस सिस्टम कंप्यूटर शिक्षण आदि क्षेत्रों में नौकरी पा सकते हैं या स्वतंत्र रूप से काम कर सकते हैं। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स

इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग इलेक्ट्रिसिटी, इलेक्ट्रॉनिक्स और इलेक्ट्रो-मैग्नेटिज्म के अनुप्रयोगों (एप्लीकेशन्स) से संबद्ध है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | इसमें इलेक्ट्रिकल इक्विपमेंट्स को डिजाइन करने, विकसित करने और टेस्ट करने के लिये प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दी जाती है। साथ ही विद्यार्थियों को कोर इंजीनियरिंग विषयों जैसे कम्युनिकेशन्स, कंट्रोल सिस्टम्स, सिग्नल प्रोसेसिंग, रेडियो फ्रीक्वेंसी डिजाइन, माइक्रोप्रोसेसर्स, पॉवर जनरेशन आदि में मूलभूत ज्ञान दिया जाता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इंदौर<br>• एस.जी.एस.आई.टी.एस., इंदौर<br>• शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, जबलपुर<br>• सम्राट् अशोक इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, विदिशा<br>• शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, उज्जैन<br>• आई.ई.एस.,आई.पी.एस., इंदौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • आई.आई.टी.,चेन्नई/ दिल्ली/ मुंबई/ कानपुर/ रूड़की/ खड़गपुर/ हैदराबाद<br>• जादवपुर यूनिवर्सिटी, कोलकाता, पश्चिम बंगाल |
| **कोर्स के बाद अवसर** | एक इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर उन इंडस्ट्रीज में काम कर सकता है, जो प्रोडक्ट डेवलपमेंट, कंट्रोल सिस्टम्स, सिस्टम मैनेजमेंट, प्रोडक्ट डिजाइन, वायरलेस कम्युनिकेशन, मैन्युफेक्चरिंग, केमिकल, ऑटोमोटिव और स्पेस रीसर्च संगठनों आदि से संबद्ध हैं। बीएसएनएल, एमटीएनएल, सिविल एविएशन, रेलवे, बीईएल, सीईएल, वायुसेना, जलसेना, थलसेना, परमाणु ऊर्जा आयोग और हिंदुस्तान एयरोनोटिक्स लिमिटेड आदि कुछ संबद्ध संस्थानों के नाम हैं। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन

यह इंजीनियरिंग की वह शाखा है जिसमें इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस, सर्किट और कम्युनिकेशन उपकरणों जैसे ट्रांसमीटर, रिसीवर, इंटीग्रेटेड सर्किट के बारे में अध्ययन किया जाता है। इस इंजीनियरिंग के अंतर्गत बेसिक इलेक्ट्रॉनिक एनालॉग- और डिजिटल ट्रांसमिशन और डाटा-रिसेप्शन, माइक्रोप्रोसेसर, सेटेलाइट कम्युनिकेशन, माइक्रोवेव इंजीनियरिंग, ऐंटेना और वेव प्रोपेगेशन के बारे में भी बताया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | इस कोर्स में आम जीवन में इस्तेमाल होनेवाले छोटे-बड़े इलेक्ट्रॉनिक उपकरण (जैसे टेलीविजन, रेडियो, कम्प्यूटर, टेलीफोन, मोबाइल, सेटेलाइट आदि) के डिजाइन, निर्माण और सेवाओं (जैसे इंटरनेट सर्विस) के बारे में बताया जाता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • शासकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, जबलपुर<br>• एस.जी.एस.आई.टी.एस., इंदौर<br>• आई.टी.ई. देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर<br>• आर.जी.पी.वी., भोपाल<br>• बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आई. आई. टी.,) चेन्नई/दिल्ली/मुंबई/कानपुर/रूड़की/खड़गपुर/हैदराबाद<br>• दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, दिल्ली<br>• नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कालीकट, केरल |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियर को टेलीकम्युनिकेशन, सिग्नल, सैटेलाइट और माइक्रोवेव कम्युनिकेशन आदि क्षेत्रों में काम मिल सकता है। टीसीएस, इसरो, मोटोरोला, इन्फोसिस, डीआरडीओ, एचसीएल, बीएसएनएल आदि कंपनियों के कुछ नाम हैं, जहाँ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरों को नौकरी मिल सकती है। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : तेल और प्राकृतिक गैस

पेट्रोलियम भंडार को न्यूनतम हानि पहुंचाते हुए धरती के नीचे से सुरक्षित धरातल पर लाना ही पेट्रोलियम इंजीनियरिंग का मूल मकसद होता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | पेट्रोलियम इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | एक पेट्रोलियम इंजीनियर को पृथ्वी की सतह के नीचे तेल और प्राकृतिक गैस के स्रोतों का पता लगाना, निष्कर्षण विधियों और प्रौद्योगिकियों को विकसित करना सिखाया जाता है। |

| | |
|---|---|
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | कोई शासकीय कॉलेज नहीं। |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • महाराष्ट्र इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, पुणे, महाराष्ट्र<br>• यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम एंड एनर्जी स्टडीज, देहरादून, उत्तराखड़<br>• राजीव गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोलियम टेक्नोलॉजी, रायबरेली, उत्तरप्रदेश<br>• सीएसआईआर-इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ पेट्रोलियम, देहरादून, उत्तराखड़<br>• भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (भारतीय खनि विद्यापीठ), धनबाद, झारखंड<br>• गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज, रायपुर, छत्तीसगढ़<br>• पंडित दीनदयाल पेट्रोलियम विश्वविद्यालय, पेट्रोलियम प्रौद्योगिकी स्कूल, गांधीनगर, गुजरात |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इंडियन ऑयल, ऑयल इंडिया लिमिटेड, एचपीसीएल, ओएनजीसी, इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन, आईबीपी कॉरपोरेशन लिमिटेड, गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया, इंडिया एलपीजी, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन और रिलायंस पेट्रोलियम लिमिटेड आदि उन कंपनियों के कुछ नाम हैं, जहाँ पेट्रोलियम इंजीनियरों को नौकरी मिल सकती है। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : माइनिंग (खनन)

खनन भारत की जीडीपी में मोटे योगदानवाले क्षेत्र के तौर पर जाना जाता है। यह 88 खनिजों का उत्पादन करता है जिनमें से 4 ईंधन वाले, 10 धातुवाले, 50 गैर-धातु और 24 छोटे खनिज शामिल हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | माइनिंग इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | माइनिंग (मिनरल) क्षेत्र में भूगर्भ विज्ञान के साथ खनन के तरीकों को पढ़ाया जाता है, जिनसे धातु के अयस्क, अधातु, मार्बल्स, ठोस ईंधन (कोयला आदि), चूना पत्थर (सीमेंट के लिए), ऊर्जा स्रोत (पेट्रोलियम) और न्यूक्लियर मटीरियल का उत्खनन किया जाता है। इसके अलावा अयस्क हासिल करने की प्रक्रिया भी पढ़ाई जाती है, |

| | |
|---|---|
| | जिसमें उसे ढूंढ़ना, वहां खनन की संभावनाओं को जांचना, खनन से होने वाले लाभ का अंदाज लगाना, क्षेत्र को खनन के लिए विकसित करना, खनन करना, खदान में सुरक्षा, अयस्क से धातु का उत्पादन करना और मार्केटिंग करने तक की प्रक्रिया व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ शामिल होती है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | कोई शासकीय कॉलेज नहीं। |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • विश्वेश्वरैया भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर, महाराष्ट्र<br>• एमवीएस इंजीनियरिंग कॉलेज, हैदराबाद, तेलंगाना<br>• आईआईटी गुवाहाटी/दिल्ली/मुंबई/ कानपुर/खड़गपुर<br>• बिरसा प्रौद्योगिकी संस्थान, सिंदरी, झारखंड<br>• बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी, उत्तरप्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड, टाटा स्टील, कोल इंडिया लिमिटेड, आईपीसीएल, नेवली लिग्नाइट कॉरपोरेशन, यूरेनियम कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया, आईबीपी लिमिटेड में जॉब उपलब्ध होते हैं; क्षेत्र हैं: ऑपरेशन, इंजीनियरिंग, सेल्स, मैनेजमेंट और इनवेस्टमेंट एनालिसिस आदि। रीसर्च और पढ़ाने में भी अवसर हैं। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : एन्वॉयरन्मेंट (पर्यावरण)

पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए एन्वॉयरन्मेंट इंजीनियरिंग मिट्टी-विज्ञान, जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान के सिद्धांतों का उपयोग करती है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | एन्वॉयरन्मेंट इंजीनियरिंग/साइंस |
| **कोर्स के बारे में** | एन्वॉयरन्मेंट इंजीनियरिंग रीसाइक्लिंग, अपशिष्ट निपटान, सार्वजनिक स्वास्थ्य, पानी और वायु-प्रदूषण को सुधारने के प्रयासों से सम्बन्धित है। वह वैश्विक मुद्दों, जैसे असुरक्षित पेयजल, जलवायु-परिवर्तन और पर्यावरणीय स्थिरता को भी संबोधित करती है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • इंजीनियरिंग कोर्स के लिए : बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व |

| | |
|---|---|
| | रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से।<br>• एन्वायरनमेंटल साइंस के लिए : साइंस विषयों के साथ इंटर उत्तीर्ण |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | मौलाना आजाद नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ टेक्नोलॉजी, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • जवाहरलाल नेहरू टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, हैदराबाद, तेलंगाना<br>• इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंसेज, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• टीईआरआई यूनिवर्सिटी, दिल्ली<br>• जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, दिल्ली<br>• दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• बर्दवान यूनिवर्सिटी, पश्चिम बंगाल |
| **कोर्स के बाद अवसर** | स्नातक को पीडब्ल्यूडी, टाउन प्लानिंग विभाग, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, कृषि विकास बोर्ड, नगरपालिका में एन्वायर्नमेंटलिस्ट, एन्वायर्नमेंटल इंजीनियर, एन्वायर्नमेंटल सपोर्टर्स और एन्वायर्नमेंटल एजुकेटर्स के रूप में नौकरी मिल सकती है। अनेक उद्योगों में इसपर नजर रखने के लिए कि उद्योग का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ रहा है व खतरनाक तत्वों का निपटान किस तरह किया जाए, एक एन्वायर्नमेंटल रीसर्च एंड डेवलपमेंट विभाग होता है। इस विभाग में, नदी, वन व वन्यजीव प्रबंधन में, पर्यावरण रक्षा के लिए कार्यरत गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) में, पर्यावरण-सम्बन्धी पत्रकारिता में, एन्वायर्नमेंटल कंसल्टेंसी में भी स्नातकों के लिए अवसर हैं। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : मरीन (समुद्री) इंजीनियरिंग

मरीन इंजीनियरिंग का काम सिर्फ जहाजों/नावों के व ऑयल रिग्स निर्माण से ही नहीं, बल्कि लोगों की प्राण-रक्षा से भी जुड़ा होता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | मरीन इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | मरीन इंजीनियरिंग जलयान प्रोपल्शन और जलयान पर स्थित प्रणालियों (ऊर्जा-आपूर्ति, मशीनरी, पाइपिंग, स्वचालन, नियन्त्रण) के विकास, डिजाइन, प्रचालन और रख-रखाव से सम्बद्ध है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |

| | |
|---|---|
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | कोई शासकीय कॉलेज नहीं |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सीसीईटी, चंडीगढ़, पंजाब<br>• मरीन इंजीनियरिंग एंड रीसर्च इंस्टिट्यूट, कोलकाता और मुंबई<br>• इंटरनेशनल मैरीटाइम इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली<br>• इंदिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली<br>• इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, चेन्नई, तमिलनाडु |
| **कोर्स के बाद अवसर** | स्नातक शिपिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया जैसी कई अग्रणी शिपिंग कंपनियों में, इंडियन मर्चेंट नेवी, नौसेना, अन्य जहाज निर्माण कंपनियों तथा जहाजों का निरीक्षण करने वाली सोसाइटियों में नौकरियाँ पा सकते हैं। इसके अलावा विदेशों में भविष्य तलाशने वाले छात्र अंतर्राष्ट्रीय संस्था 'द अमेरिकन ब्यूरो ऑफ शिपिंग' में भी काम कर सकते हैं, जो फ्रेशर व ट्रेनिंग लेनेवाले विद्यार्थियों को नौकरी देती है। मरीन इंजीनियर को छह-सात महीने तक घर से दूर पानी के जहाज पर रहना पड़ता है, अतः कम छात्र मरीन इंजीनियरिंग का कोर्स करते हैं। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : प्रोडक्शन (उत्पादन)

प्रोडक्शन इंजीनियरिंग में विनिर्माण प्रौद्योगिकी (मेन्युफैक्चरिंग टेक्नोलॉजी), औद्योगिक (इंडस्ट्रीयल), इंजीनियरिंग, इंजीनियरिंग विज्ञान और प्रबंध विज्ञान का सम्मिश्रण है। एक प्रोडक्शन इंजीनियर का उद्देश्य होता है कि कैसे उत्पादन को सुचारु, विवेकपूर्ण रूप से और किफायत से करे।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | प्रोडक्शन इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | प्रोडक्शन इंजीनियरिंग के अंतर्गत मशीनिंग प्रणालियाँ, धातु काटना और टूल्स-डिजाइन, जिग्स और फिक्श्चर्स, डाई और मोल्ड-डिजाइन, कास्टिंग, फोर्जिंग, वेल्डिंग, स्वचालन, मापिकी (मेट्रोलॉजी), मशीन-टूल्स, पुर्जों और मशीन की डिजाइन, मटीरिअल प्रौद्योगिकी, कार्य-अध्ययन, एर्गोनोमिक्स, ऑपरेशन रीसर्च, प्रोडक्शन प्लानिंग आदि आते हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • जीएसआईटीएस, इंदौर, म.प्र. (औद्योगिक और प्रोडक्शन इंजीनियरिंग) |

| | |
|---|---|
| | • शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, जबलपुर,<br>• विन्ध्य इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस, इंदौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, दिल्ली/मुंबई/चेन्नई/खड़गपुर/बनारस<br>• बिड़ला इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस, पिलानी, राजस्थान<br>• पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज, चंडीगढ़, पंजाब<br>• श्री राम इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमैंट एंड टेक्नोलॉजी, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | एक उत्पादन इंजीनियर के लिए कई स्थानों में काम करने का अवसर है जैसे सेवा कंपनियों (उदाहरणार्थ शिपिंग और हवाई परिवहन कंपनियों) में, उत्पादन, ऊर्जा व पेट्रोलियम से सम्बन्धित सार्वजनिक उद्यमों में, निजी उत्पादन (जैसे खाद्य प्रसंस्करण करनेवाली या मोटर-वाहन बनाने वाली) कंपनियों में। एक प्रोडक्शन इंजीनियर इन पदों पर काम कर सकता है: एर्गोनोमिस्ट, ऑपरेशन एनालिस्ट, प्लांट इंजीनियर, प्रोसेस इंजीनियर, क्वालिटी इंजीनियर, क्वालिटी कण्ट्रोल तकनीशियन, इंडस्ट्रियल मैनेजर, मैन्युफेक्चरिंग इंजीनियर आदि। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : बायोटेक्नोलॉजी (जैवप्रौद्योगिकी)

जैवप्रौद्योगिकी वह विषय है जो अभियान्त्रिकी के डाटा और तरीकों को जीवों और जीवन तन्त्रों से सम्बन्धित अध्ययन के लिये उपयोग करता है। इस विषय में बायोलॉजी और टेक्नोलॉजी दोनों सम्मिलित हैं। बायोटेक्नोलॉजी जीवों (या जीवों के कुछ हिस्सों) को काम में लगाने या संशोधित करने, पौधों या जानवरों को बेहतर बनाने या विशिष्ट उपयोगों के लिए सूक्ष्मजीव विकसित करने के लिए काम करती है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बायोटेक्नोलॉजी इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | इस कोर्स में विद्यार्थी आनुवांशिकी, एंजाइम प्रौद्योगिकी, आण्विक जीवविज्ञान, जेनेटिक्स और साइटोजेनेटिक्स बायोप्रोसेस सिद्धांत, इम्यूनोलॉजी बायोफिज़िक्स, माइक्रोबायोलॉजी मोमेंटम ट्रांसफर, वेक्टर जीवविज्ञान और जीन हेरफेर प्रोटीन इंजीनियरिंग, पशु जैव प्रौद्योगिकी जैव सूचना विज्ञान, प्लांट बायोटेक्नोलॉजी जीनोमिक्स एंड प्रोटेमिक्स के साथ अभियांत्रिकी के सामान्य सिद्धांतों का अध्ययन करता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा में गणित, जीवविज्ञान व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |

| | |
|---|---|
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • राजीव गाँधी प्रौद्योगिकी वि. वि., भोपाल,<br>• जी.एस.आई.टी.एस., इंदौर (बायो-मेडिकल इंजीनियरिंग)<br>• म.प्र. भोज ओपन यूनिवर्सिटी, भोपाल<br>• एम.एस.टी.आई., ग्वालियर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, दिल्ली/रूड़की<br>• नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, राउरकेला, ओडिशा<br>• मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश<br>• उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना<br>• पीईएस विश्वविद्यालय, बेंगलुरू, कर्नाटक |
| **कोर्स के बाद अवसर** | पश्चिमी देशों की फार्मा कंपनियों को अपने देश के कड़े कानूनों के कारण नई विकसित दवाओं के रीसर्च ट्रायल में समय और धन-सम्बन्धी व अन्य परेशानियों का सामना करना पड़ता है, पर यही काम भारत में कार्यरत कंपनियों में काट्रेक्ट आधार पर सुगमता से हो जाता है। बायोटेक्नोलॉजी के विविध क्षेत्रों में कंपनियाँ बायोएग्रो, बायोइंडस्ट्री, बायोसर्विसेज, बायोफार्मा, बायोइन्फार्मेटिक्स, हर्बल प्रोडक्ट्स, बायोजेनेटिक, बायोमैन्युफैक्चरिंग, स्टेम सेल, रीजनरेटिव मेडिसिन इत्यादि अग्रणी क्षेत्रों में कार्यरत हैं। इनमें कोई स्नातक जैव प्रौद्योगिकी अधिकारी, अनुसंधान सहयोगी, रखरखाव अभियंता, प्रयोगशाला सहायक या प्रोफेसर के पद पर काम करने का अवसर पा सकता है। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : इनफॉर्मेशन टेक्नोलोजी (IT या सूचना प्रौद्योगिकी)

सूचना प्रौद्योगिकी का सम्बन्ध सूचनाओं के संग्रह, आंकड़ों की प्राप्ति,आंकड़ों व सूचनाओं की सुरक्षा/ परिवर्तन/ संचार( भेजने-पाने )/अध्ययन/डिजाइन आदि कार्यों को करने के लिये आवश्यक कम्प्यूटर हार्डवेयर व सॉफ्टवेयर से है। सूचना प्रौद्योगिकी कम्प्यूटर-आधारित सूचना-प्रणाली है, जो वर्तमान में वाणिज्य और व्यवसाय का अभिन्न अंग बन गयी है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | इनफॉर्मेशन टेक्नोलोजी |
| **कोर्स के बारे में** | कोर्स में इन विषयों का अध्ययन किया जाता है: कम्प्यूटर हार्डवेयर (इसके अन्तर्गत मेनफ्रेम, माइक्रो-कम्प्यूटर, सर्वर, डेटा के इनपुट-आउटपुट/संग्रह करनेवाले उपकरण आते हैं); साफ्टवेयर (इसके अन्तर्गत प्रचालन प्रणाली–ऑपरेटिंग सिस्टम, डेटाबेस प्रबन्धन प्रणाली–DBMS, वेब ब्राउजर व व्यावसायिक सॉफ्टवेयर आते |

| | |
|---|---|
| | हैं); दूरसंचार व नेटवर्क प्रौद्योगिकी (इसके अन्तर्गत दूरसंचार के माध्यम, प्रोसेसर, इंटरनेट से जुड़ने के लिये तार/बेतार पर आधारित सॉफ्टवेयर, नेटवर्क-सुरक्षा, सूचना का कूटन अर्थात् क्रिप्टोग्राफी, सिस्टम/नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेशन आदि आते हैं)। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • एसजीएसआईटीएस, इंदौर<br>• ग्वालियर इंस्टिट्यूट ऑफ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, ग्वालियर<br>• शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, जबलपुर<br>• एस.ए.आई.टी., विदिशा |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली/रुड़की/खड़गपुर/चेन्नई<br>• दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में विभिन्न आई.टी. कम्पनियों (जैसे इंफोसिस, विप्रो, टी.सी.एस., इंटेल, माइक्रोसॉफ्ट व गूगल) में नियुक्ति के अवसर। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : इंस्ट्रूमेंटेशन (मापयंत्रण)

इंस्ट्रूमेंटेशन इंजीनियरिंग की वह शाखा है जो मापन (मेज़रमेंट) एवं नियंत्रण से सम्बन्धित है। मापकयंत्र किसी प्रोसेस के ताप, दाब, बहाव आदि को मापने या नियंत्रित करने के काम आते हैं। इंस्ट्रूमेंटेशन टेक्नोलॉजी का उपयोग उद्योगों में उपयोग के लिए किसी इंस्ट्रूमेंट को डिजाइन और विकसित करने में किया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | इंस्ट्रूमेंटेशन इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | इस कोर्स में विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक्स/विद्युतीय/यांत्रिक उपकरणों के डिजाइन, निर्माण, संचालन, रखरखाव के सम्बंध में सिखाया जाता हैं। पढ़ाए जाने वाले विषयों के उदाहरण हैं- सेंसर और ट्रांसड्यूसर, एनालॉग व डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक्स, माइक्रो-प्रोसेसर अनुप्रयोग, सिग्नल प्रोसेसिंग, कंट्रोल सिस्टम, औद्योगिक व मेडिकल इंस्ट्रूमेंटेशन और रोबोटिक्स इंजीनियरिंग |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |

| | |
|---|---|
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • एसजीएसआईटीएस, इंदौर<br>• देवी अहिल्या वि. वि., इंदौर<br>• एसएटीआई, विदिशा |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम्, आंध्रप्रदेश<br>• बीएमएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, बेंगलुरू, कर्नाटक |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इंस्ट्रूमेंटेशन इंजीनियरिंग के लिए विभिन्न कम्पनियों (जैसे ए.बी.बी., लार्सन एंड टुब्रो, सुजलान, एस्सार आदि) में अवसर हैं। इस्पात संयंत्रों, सीमेंट निर्माताओं, ताप-विद्युत गृहों, रासायनिक उद्योगों व शोध संस्थानों आदि में भी वे जगह पा सकते हैं। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : फूड (खाद्य)

फसल की कटाई से शुरू होकर खाद्य-सामग्रियों के चुनाव, लम्बे समय तक संरक्षण, प्रसंस्करण, उन्हें स्वास्थ्यप्रद बनाना, उनकी डिब्बाबंदी, वितरण व उपभोग की तकनीकें खाद्य प्रौद्योगिकी के अंतर्गत आती हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | फूड टेक्नोलोजी/इंजीनियरिंग (खाद्य प्रौद्योगिकी/ इंजीनियरिंग) |
| **कोर्स के बारे में** | खाद्य प्रौद्योगिकी/इंजीनियरिंग में अनाज/तिलहन/फल/सब्जी/दूध/मांस/मछली/अंडा के भंडारण, संरक्षकों का उपयोग, प्रसंस्करण-संयंत्रों, पैकेजिंग, फलों के उत्पाद व अन्य खाद्य पदार्थ बनाने, एक स्थान से दूसरे स्थान पर खाद्य वस्तुओं को पहुँचाने इत्यादि के बारे में पढ़ाया जाता हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित या जीव विज्ञान, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, चित्रकूट |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी, उत्तरप्रदेश<br>• सीएमजे विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय<br>• डीवाई पाटिल विश्वविद्यालय, नवी मुंबई, महाराष्ट्र<br>• चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब<br>• बीआईटीएस, हैदराबाद, तेलंगाना |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग, और अन्य राज्य-प्रायोजित खाद्य-प्रसंस्करण संयंत्र और निजी खाद्य-उत्पादन फर्म (जैसे पार्ले, अमूल, पतंजलि डाबर, कैडबरी आदि), भंडारण और संरक्षण फर्म, प्रसंस्करण के उपकरण और मशीनरी का निर्माण करने वाली कंपनियों में अवसर। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : फायर एंड सेफ्टी (अग्नि और सुरक्षा)

इस क्षेत्र में आग के प्रकार, बुझाने के तरीके/उपकरण, घिरे लोगों को सुरक्षित बाहर निकालना, आवश्यक सूझबूझ आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | फायर (एंड सेफ्टी) इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | इस कोर्स में अग्नि सम्बंधित व्यावहारिक पक्ष (जैसे अग्निशमन उपकरण, हाइड्रोलिक पंप, विस्फोट और आग गतिशीलता सिद्धांत, प्राथमिक चिकित्सा, औद्योगिक सुरक्षा प्रबंधन आदि) को पढ़ाया जाता है और अग्नि से होनी वाली दुर्घटना से बचने के उपायों को भी सिखाया जाता हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से।<br>• शारीरिक योग्यता भी देखी जाती है (पुरुषों के लिए न्यूनतम लंबाई 165 सेंमी. वजन 50 किग्रा.; महिलाओं के लिए न्यूनतम लंबाई 157 सेंमी. और वजन 46 किग्रा. होना चाहिए)। नजरें दोनों के लिए 6/6 होनी चाहिए और उम्र 19 से 23 वर्ष होना चाहिए। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • राष्ट्रीय अग्नि और सुरक्षा इंजीनियरिंग संस्थान (एनआईएफएसई) मध्यप्रदेश<br>• आईईएस, आईपीएस, इंदौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ फायर इंजीनियरिंग (आईआईएफई), महाराष्ट्र<br>• इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली (इग्नू)<br>• फायर इंजीनियरिंग और सुरक्षा प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली<br>• दिल्ली इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट फॉर मैनेजमैंट स्टडीज, पुणे, महाराष्ट्र<br>• जेआरएन राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, राजस्थान |

| | |
|---|---|
| | • राष्ट्रीय अग्नि और सुरक्षा प्रबंधन संस्थान (एनआईएफएस), आंध्र प्रदेश<br>• उड़ीसा इंस्टिट्यूट ऑफ फायर इंजीनियरिंग एंड सेफ्टी मैनेजमेंट (ओआईएफईएसए), ओडिशा<br>• परमानंद कॉलेज ऑफ फायर इंजीनियरिंग एंड सेफ्टी मैनेजमेंट (पीसीएफएसएम), महाराष्ट्र<br>• रॉयल पीजी कॉलेज, उत्तर प्रदेश<br>• मैंगलोर इंस्टिट्यूट ऑफ फायर एंड सेफ्टी इंजीनियरिंग, बेंगलुरू<br>• वीजीपीआर इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, चेन्नई, तमिलाडु |
| **कोर्स के बाद अवसर** | विभिन्न निजी/शासकीय क्षेत्र में, ऑइल उद्योग में व थर्मल पॉवर प्लांट आदि में। इस क्षेत्र में फायरमैन से लेकर चीफ फायर अफसर जैसे पदों पर काम के अवसर हैं। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : पॉवर

यह विद्युत इंजीनियरिंग के अंतर्गत आता है। इसे पॉवर सिस्टम इंजीनियरिंग भी कहा जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | पॉवर इंजीनियरिंग |
| **कोर्स के बारे में** | इसमें विद्युत ऊर्जा के उत्पादन, सम्प्रेषण ( ट्रांसमिशन) और वितरण व विद्युत उपकरणों (जैसे जनरेटर, मोटर व ट्रांसफार्मर आदि), व ऊर्जा के प्रबंधन और उसके अर्थशास्त्र के बारे में पढ़ाया जाता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | कोई शासकीय कॉलेज नहीं। |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • आईआईटी, रूड़की, उत्तराखंड<br>• नेशनल पावर ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट (एनपीटीआई), दिल्ली<br>• पेट्रोलियम और ऊर्जा अध्ययन विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड<br>• बंगाल प्रौद्योगिकी संस्थान, कोलकाता, पश्चिम बंगाल<br>• महिला प्रौद्योगिकी संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड |
| **कोर्स के बाद अवसर** | स्नातक को सेवा अभियंता, रखरखाव अभियंता, पावर इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर, सुरक्षा अधिकारी, पावर तकनीशियन या विद्युत इंजीनियर के रूप में काम के अवसर मिल सकते हैं। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : प्रिंटिंग और पैकेजिंग

**क्षेत्र का परिचय :** प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी मास कम्यूनिकेशन का एक महत्वपूर्ण भाग है। इस में टाइपसेटिंग, इमेज सेटिंग, डिजाइनिंग, पेस्टिंग, प्लेट-मेकिंग, कैमरा-वर्क, प्रिंटिंग और बाइंडिंग शामिल है। प्रेस के अलावा कई ऐसे बड़े प्रिंटिंग-हाउस हैं, जहां सिल्क-स्क्रीन प्रिंटिंग, ब्रोशर प्रिंटिंग और पोस्टकार्ड प्रिंटिंग का काम होता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | प्रिंटिंग और पैकेजिंग |
| **कोर्स के बारे में** | कोर्स में जनसंचार, प्रिंटिंग और पैकेजिंग के मूलभूत सिद्धांत, कम्प्यूटर बेसिक्स आदि पढ़ाए जाते हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | बारहवीं कक्षा गणित, भौतिकी व रसायन शास्त्र विषयों के साथ उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा से |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता व जनसंचार विश्वविद्यालय, भोपाल<br>प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी विभाग, कला निकेतन, जबलपुर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • आईआईटी मंडी/गाँधीनगर/दिल्ली<br>• बीएमएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• मास मीडिया रिसर्च सेंटर, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली<br>• दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | प्रौद्योगिकीविदों के लिए रोजगार के अवसर इन संस्थानों में प्राप्त होते हैं : केंद्र और राज्य सरकारों के अंतर्गत प्रकाशन गृह/प्रिंटिंग प्रेस में इलेक्ट्रॉनिक पब्लिशिंग। कलर मैनेजमेंट सोल्यूशन, विज्ञापन (एडवरटाइजिंग) एजेंसियों, अखबारों/पत्रिकाओं, प्रिंटिंग मशीन विनिर्माताओं, उपभोक्ता उत्पाद (जैसे इंक, टोनर और प्रिंटिंग कार्टेज) बनानेवाली कंपनियों में, पैकेजिंग उद्योग, बुक-प्रिंटर्स, ऑफसेट, फ्लेक्सोग्राफी, नक्काशी और स्क्रीन प्रिंटिंग-सहित वाणिज्यिक प्रिंटिंग-प्रेस और निजी कमर्शियल प्रेस में। कुछ उदाहरण हैं: टाइम्स ऑफ इंडिया, टाटा प्रेस आदि।<br><br>प्रिंटिंग में विभिन्न पदों पर काम करने के अवसर हैं, जैसे महाप्रबंधक, रजिस्ट्रार, निदेशक, प्रोफेसर, रीडर, लेक्चरर, परामर्शदाता, विभागाध्यक्ष, मुख्य प्रकाशन अधिकारी आदि। |

## विशेषज्ञता का क्षेत्र : कम्प्यूटर एप्लीकेशंस (कम्प्यूटर के अनुप्रयोग)

कम्प्यूटर एप्लीकेशंस कई क्षेत्रों में हो सकती है, जैसे डाटा प्रोसेसिंग, संचार (Communication), उद्योग, शिक्षा, बैंक, प्रशासन, चिकित्सा, वाणिज्य और सुरक्षा आदि में।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | कम्प्यूटर एप्लीकेशंस |
| **कोर्स के बारे में** | इस कोर्स में दी जानेवाली स्नातक डिग्री है : बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (बी.सी.ए.). कम्प्यूटर से सम्बंधित विभिन्न एप्लीकेशन-सॉफ्टवेयर व कम्प्यूटर भाषाएँ ( जैसे C, C++, VB, C#, JAVA ) वेब प्रोग्रामिंग भाषाएँ (जैसे HTML , CSS ) इस कोर्स में सिखाई जाती हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | किसी भी विषय से बारहवीं उत्तीर्ण। चयन प्रवेश परीक्षा अथवा बारहवीं के प्राप्तांक के आधार पर। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • देवी अहिल्या वि.वि., इंदौर<br>• माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता व जनसंचार विश्वविद्यालय, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सिक्किम मनिपाल यूनिवर्सिटी<br>• इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन<br>• नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, मुंबई<br>• एशियन कॉलेज ऑफ जर्नलिज्म<br>• मास मीडिया रिसर्च सेंटर, जामिया मिलिया इस्लामिया<br>• जेवियर इंस्टिट्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन<br>• सिम्बायोसिस इंस्टिट्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन<br>• दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | मीडिया हाउस, प्रिंट पब्लिकेशन, टी.वी. चैनल्स, विभिन्न कंपनियों में कम्प्यूटर ऑपरेटर, सिस्टम ऑपरेटर, प्रोग्रामिंग सहायक आदि के रूप में जॉब के अवसर हैं। |

* * *

ग्राफ़िक्स और एनीमेशन
जनसंचार
प्रिंटिंग और पैकेजिंग
मल्टीमीडिया डिज़ाइन
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
फोटोग्राफी

# जनसंचार (मास कम्युनिकेशन)

जनसंचार वह माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी समाचार या संदेश को जनमाध्यम में प्रसारित किया जाता है। जनसंचार के माध्यम से समाचार एक ही समय में दूर-दूर तक, देश और दुनिया में हर व्यक्ति तक पहुँच जाता है। इसके अन्तर्गत जनसम्पर्क, पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता, विज्ञापन, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे क्षेत्र सम्मिलित हैं।

### निकिता का जुनून था कुछ अलग करने का

निकिता के परिवार में कोई इंजीनियर है, तो कोई डॉक्टर है। प्रायः समाज में इन दोनों व्यवसायों को एक बेहतर भविष्य (करियर) के रूप में देखा जाता है। परन्तु निकिता ने कुछ हटकर करने का सोचा। उसने एक वर्षीय कम्युनिटी मीडिया का कोर्स टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान से और सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी से मास मीडिया करने का निर्णय लिया। स्नातकोत्तर की उपाधि लेने के बाद उसे मीडिया क्षेत्र के विस्तार की जानकारी मिली। वर्तमान में निकिता हैदराबाद स्थित एक समाचार पत्र में काम कर रही है। भविष्य में निकिता जर्नलिज़म के क्षेत्र से संबंधित स्वयं का व्यवसाय स्थापित करना चाहती है।

## इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से तात्पर्य उस प्रकार की मीडिया से है जिसे किसी भी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण पर देखा, पढ़ा या सुना जाता है। इसके अन्तर्गत इंटरनेट, टीवी, फोन आदि पर देखे/सुने जाने वाले वीडियो, गाने, चित्र, ब्लॉग आदि आते हैं।

### कोर्स का नाम : बीएससी (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया)

इस पाठ्यक्रम में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विभिन्न पहलू व तकनीकें शामिल हैं। यह विद्यार्थियों को टेलीविजन पत्रकारिता के तकनीकी और व्यावहारिक पहलुओं से अवगत कराता है। यह हमारे आसपास होने वाली घटनाओं के मूल्यांकन और विश्लेषण की क्षमता विकसित करता है। यह पाठ्यक्रम समाचार पोर्टल, रेडियो, फिल्म और टेलीविजन के क्षेत्र में नौकरी की संभावना को समझने का कौशल विकसित करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) |
| **कोर्स के बारे में** | बीएससी (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) तीन साल का पूर्णकालिक स्नातक पाठ्यक्रम है जिसे 6 सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में कम से कम 50 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• कई संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन भी करते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में डिग्री प्राप्त करने के बाद रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट के माध्यम से लोगों से जुड़ने के अवसर मिलते हैं। इस कोर्स को करने के बाद विद्यार्थी इनस्टूडियो एंकर, शोधकर्ता, प्रस्तुतकर्ता और समाचार विश्लेषक आदि बन सकते हैं। कुछ छात्र डाइरेक्शन, कैमरा, प्रोडक्शन, ग्राफिक्स, साउंड एडिटिंग, प्रोग्राम रीसर्च, स्क्रिप्टिंग आदि क्षेत्रों का भी चयन करियर के रूप में करते हैं। |

## मल्टीमीडिया डिजाइन

ग्राफिक और वेब डिजाइन के सबसे रोमांचक क्षेत्रों में से एक एवं दृश्यकला में सबसे बढ़ते करियर के प्रकार में से एक मल्टीमीडिया डिजाइन है।

मल्टीमीडिया डिजाइनर के पास दर्शकों को संप्रेषित करने के लिए शब्द, चित्र, ऑडियो और वीडियो सहित विभिन्न प्रकार के मीडिया के संयोजन का काम है। मल्टीमीडिया डिजाइनर विभिन्न कार्यक्षेत्रों में काम करते हैं जैसे फिल्में, वेब साईट डेवलपमेंट, कॉमर्स एवं विज्ञापन आदि।

### कोर्स का नाम : बीएससी मल्टीमीडिया (ग्राफिक्स और एनीमेशन)

इस कोर्स में, छात्र कम्प्यूटर ग्राफिक्स, स्टोरीबोर्डिंग, कम्प्यूटर भाषाओं, प्रौद्योगिकी, मोशन फिल्मों की प्रकृति आदि का अध्ययन करते हैं। इस कोर्स में प्रमुख विषय जैसे फीचर फिल्म, एनीमेशन फिल्में, उत्पाद डिज़ाइन, इंटरनेट और मास मीडिया आदि शामिल हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी ग्राफिक्स और एनीमेशन |
| **कोर्स के बारे में** | यह तीन वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता-प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में कम से कम 50 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन भी करते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सिंघानिया विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान<br>• चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब<br>• मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगला<br>• फर्ग्यूसन कॉलेज, सावित्री बाई फूले विश्वविद्यालय, पुणे, महाराष्ट्र |
| **कोर्स के बाद अवसर** | मल्टीमीडिया क्षेत्र में स्नातक विज्ञापन व्यवसाय, मनोरंजन उद्योग, गेमिंग उद्योग, ग्राफिक्स डिजाइनिंग, मीडिया, समाचार, प्रकाशन फर्म, 3-डी मॉडलिंग, वेबसाइट डिजाइनिंग, जैसे क्षेत्रों में अवसर प्राप्त कर सकते हैं। विद्यार्थी फिल्म उद्योग के अलावा, सॉफ्टवेयर प्रकाशन, डेटा विज़्युलाइजेशन, विज्ञापन, अपराध दृश्य एनीमेशन आदि जैसे अन्य क्षेत्रों में भी काम कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : बीएससी मल्टीमीडिया

इस कोर्स के अन्तर्गत छात्र रचनात्मक सोच, क्षमता, ड्राइंग कौशल के लिए योग्यता, गति, आकार और रचना की अवधारणाओं की समझ, विशिष्ट सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों में ड्राइंग विधियों में कौशल, भौतिकी और कम्प्यूटर भाषा की समझ को विकसित करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएससी मल्टीमीडिया |
| **कोर्स के बारे में** | यह तीन वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है जो 6 सेमेस्टर में विभाजित है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में मुख्य विषय के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान या गणित में कम से कम 50% अंक के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन भी करते हैं। |

| | |
|---|---|
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • मास मीडिया रीसर्च सेंटर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली<br>• दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, देहरादून, उत्तराखंड<br>• ICAT, हैदराबाद, तेलंगाना |
| **कोर्स के बाद अवसर** | विज्ञापन व्यवसाय, गेमिंग उद्योग, ग्राफिक्स डिजाइनिंग, मनोरंजन उद्योग, वेबसाइट डिजाइनिंग, ग्राफिक चित्रांकन, वेब पेज डिजाइन, मल्टीमीडिया सामग्री और वेब सामग्री, कैरेक्टर एनीमेशन, ग्राफिक्स और एनीमेशन इन सभी क्षेत्रों में विद्यार्थी अपने करियर के लिए विभिन्न विकल्पों का चयन कर सकते हैं। |

## जनसंचार

जनसंचार एक माध्यम है जिससे विविध श्रोताओं तक बड़े स्तर पर सूचना प्रसारित की जाती है। इसके अंतर्गत टीवी, रेडियो, इंटरनेट, पुस्तकें, मैगज़िन, अख़बारों आदि के माध्यम से किया गया संचार शामिल है।

### कोर्स का नाम : बीए जनसंचार (मास कम्युनिकेशन)

इसके अन्तर्गत विद्यार्थी मास कम्युनिकेशन में पत्रकारिता, खेल संचार, विज्ञापन संचार, अन्तर्राष्ट्रीय संचार और जनसम्पर्क आदि के बारे में अध्ययन करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए जनसंचार (मास कम्युनिकेशन) |
| **कोर्स के बारे में** | बीएमसी एक 3 वर्षीय पूर्णकालिक स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम है जिसे 6 सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • कक्षा बारहवीं में कम से कम 55 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन भी करते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • गोवा विश्वविद्यालय, गोवा<br>• सिम्बायसिस सेंटर फॉर मीडिया एंड कम्यूनिकेशन, पुणे, महाराष्ट्र |
| **कोर्स के बाद अवसर** | छात्र पत्रकारिता, रेडियो, टेलीविजन, फिल्म निर्माण, ऑनलाइन, जन सम्पर्क, विज्ञापन, इवेंट मैनेजमेंट आदि क्षेत्रों में से किसी एक में अपना करियर बना सकते हैं। उनके पास इंटर्नशीप और स्वतंत्र परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के अवसर भी होते हैं। |

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ जर्नलिज्म

जो विद्यार्थी किसी समाचार पत्र, मैगज़िन या टी.वी. के समाचार चैनल से जुड़कर अपना करियर बनाना चाहते हैं और जिनकी समाचार लेखन, फीचर लेखन या साक्षात्कार लेने, मनोरंजन और कला के सांस्कृतिक पक्ष से जुड़कर रिपोर्टिंग करने में रुचि है वे इस पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं।

इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत छात्र रिपोर्टिंग करना, समाचार व फीचर लेखन, संपादन, समीक्षा व साक्षात्कार करने की कला सीखते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ जर्नलिज्म |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पूर्णकालिक स्नातक पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में कम से कम 55 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन भी करते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • गोवा विश्वविद्यालय, गोवा<br>• सिम्बायसिस सेंटर फॉर मीडिया एंड कम्युनिकेशन, पुणे, महाराष्ट्र<br>• दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | विद्यार्थियों के पास पत्रकारिता और उससे संबंधित क्षेत्रों जैसे - समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, रेडियो, टी.वी., फोटोग्राफी, प्रेस सूचना ब्यूरो, विज्ञापन, टेलीकास्टिंग कंपनियों, कॉलेजों, संस्थानों आदि क्षेत्रों में करियर बनाने के बहुत सारे अवसर हैं। विद्यार्थी रिपोर्टर, सामुदायिक सुधारक, संपादक, ग्राहक सेवा के कार्यकारी, पीसीएस अधिकारी, टीम लीडर जैसे पदों पर शीर्ष कंपनियों और उद्योगों में काम कर सकते हैं। |

फाइन आर्ट्स
फैशन डिजाइन
डिजाइन
इंटीरियर डिजाइन
टेक्सटाइल डिजाइन
मल्टीमीडिया डिजाईन

# डिजाइन

डिजाइन से तात्पर्य है किसी भी वस्तु की खूबसूरती को बढ़ाना। चाहे वह वस्त्र सज्जा हो या गृहसज्जा। क्रिएटिव और क्रियेटिविटी की दुनिया में कुछ नया करने की चाहत रखने वाले विद्यार्थियों के लिए डिजाइनिंग का करियर बेहतरीन साबित होगा। इस काम के लिए रचनात्मकता (क्रिएटिविटी) सबसे पहले जरूरत है। इसके अलावा इंडस्ट्री के उत्पादन-विक्रय की पूरी जानकारी, डिजाइनिंग के क्षेत्र में नए सॉफ्टवेयर की जानकारी और काम को समय पर पूरा करने की योग्यता होनी भी जरूरी है। डिजाइन के क्षेत्र में आज कई तरह के कोर्स उपलब्ध हैं चाहे वे सर्टिफिकेट कोर्स हों या फिर डिग्री कोर्स।

### गाँव से गुजरात तक - अमित अहिरवार का सफर

अपनी बारहवीं तक की पढ़ाई एक छोटे से गाँव के शासकीय स्कूल से करने वाले अमित अहिरवार आज गुजरात की एक टेक्सटाईल मिल में प्रोडक्शन सुपरवाइजर के रूप में काम कर रहे हैं। वे कपड़े की गुणवत्ता को जाँचने-परखने का काम करते हैं। अपने स्कूल दिनों में अमित को इंजीनियरिंग के क्षेत्र के बारे में पता चला। पर जब उन्हें इंजीनियरिंग के क्षेत्र में किसी एक विकल्प को चुनना था तब उन्होंने 'डिप्लोमा इन टेक्सटाईल इंजीनियरिंग' ब्रांच को चुना जबकि इस ब्रांच को लेने से कई लोगों ने उन्हें मना भी किया था। अमित का कहना है कि 'कभी भी किसी के कहने पर किसी क्षेत्र का चुनाव नहीं करना चाहिए। यदि हम किसी के प्रभाव में आकर किसी क्षेत्र को चुनते हैं तो उसमें काम करने में हमें बहुत परेशानी होती है।'

## मल्टीमिडिया डिजाइन

एनीमेशन वह तकनीक है जो निर्जीव और काल्पनिक वस्तुओं और पात्रों को ग्राफिक डिजाइनिंग व सापफ्टवेयर के माध्यम से वास्तविक और जीवन्त बनाती है। एनीमेशन टेलीविजन शो, फिल्म निर्माण और मनोरंजन क्षेत्र में प्रयोग में आने वाला एक महत्वपूर्ण घटक है। यह कोर्स उन विद्यार्थियों को कई नए विषयों के बारे में जानकारी देकर प्रशिक्षित करने के लिए डिजाइन किया गया है जिनकी रुचि इन विषयों में होती है जैसे- विज्ञापन व्यवसाय, गेमिंग उद्योग, ग्राफिक्स डिजाइनिंग, मनोरंजन उद्योग, वेबसाइट डिजाइनिंग, ग्राफिक, फोटोग्राफी, वेब पेज डिजाइन, मल्टीमीडिया सामग्री, वेब सामग्री, केरेक्टर एनीमेशन, दृश्य प्रभाव पर्यवेक्षण, प्रिंट फिल्म और वेब मीडिया में लागू मल्टीमीडिया, ग्राफिक्स और एनीमेशन आदि।

मल्टीमिडिया के अन्य कोर्सेस हेतु जनसंचार (मॉस कम्यूनिकेशन) क्षेत्र को पढ़े।

## कोर्स का नाम : सर्टिफिकेट कोर्स इन डेस्कटॉप पब्लिशिंग

डेस्कटॉप पब्लिशिंग मुद्रित सामग्री के प्रकाशन से संबंधित ट्रेड है। यह कोर्स इन प्रकाशनों को अच्छी तरह से डिजाइन करने, उन्हें आकर्षक और पढ़ने में आसान बनाने के लिए विद्यार्थी को तकनीकी रूप से कुशल बनाता है। इस कोर्स में मीडिया और प्रकाशन जैसे क्षेत्रों में नवाचार करने की काफी संभावनाएँ रहती हैं। इस कोर्स में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के पास सामान्य कम्प्यूटर कौशल और ज्ञान होना चाहिए, साथ ही अच्छे डिजाइन के लिए रचनात्मक सोच भी हो। इस कोर्स में विद्यार्थियों को इसके कई पहलुओं से परिचित करवाया जाता है जैसे कि मुद्रित सामग्री, किताबें, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, ब्रोशर और विज्ञापन को छापना।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | सर्टिफिकेट कोर्स इन डेस्कटॉप पब्लिशिंग |
| **कोर्स के बारे में** | इस कोर्स की अवधि एक वर्ष है जो कि छः महीने के दो सेमेस्टर के साथ पूरी होती है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | विद्यार्थी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा दसवीं उत्तीर्ण होना चाहिए। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • राजा मानसिंह तोमर विश्वविद्यालय, ग्वालियर<br>• विभिन्न आईटीआई के माध्यम से सर्टिफिकेट कोर्स |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • वीर सावरकर बेसिक ट्रेनिंग सेंटर, दिल्ली<br>• रीजनल वोकेशनल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट फॉर वुमन, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद, गुजरात<br>• विभिन्न आईटीआई |
| **कोर्स के बाद अवसर** | डेस्कटॉप पब्लिशिंग ऑपरेटर के रूप में प्रशिक्षित होने के बाद विद्यार्थी डी.टी.पी. ऑपरेटर, ग्राफिक डिजाइनर, ग्राफिक आर्ट्स, डिजाइन एक्सिक्यूटिव, कैप्चर इन फोटो स्टूडियो और फ्रीलांस प्रोफेशनल के रूप में अपना करियर चुन सकते हैं। |

# इंटीरियर डिजाइन

किसी भी घर, ऑफिस, ऑडीटोरियम, हॉल आदि की आंतरिक सज्जा और उसे व्यवस्थित करने की कला को इंटीरियर डिजाइनिंग कहते हैं। इंटीरियर डिजाइनिंग का क्षेत्र आर्किटेक्चर क्षेत्र के बहुत करीब है क्योंकि इंटीरियर का डिजाइन आर्किटेक्चर पर काफी हद तक निर्भर है।

इंटीरियर डिजाइन के पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को वाणिज्यिक भवन इंटीरियर, घर के इंटीरियर, सार्वजनिक भवन या परिवहन के साधन, फिल्मों एवं टीवी या थियेटर सेट की डिजाइन के साथ ही प्रदर्शनी जैसी जगहों पर स्टैण्ड, अन्य जगहों और रिक्त स्थान के इंटीरियर डिजाइन से संबंधित प्रमुख बातों जैसे प्रकाश, रंग और फर्नीचर संबंधी बातों को सिखाते हैं। इन पाठ्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का ध्यान डिजाइन के कार्यात्मक और सौंदर्य गुणों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है।

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ इंटीरियर डिजाइन

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को इंटीरियर डिजाइन के सिद्धांत, रंग सिद्धांत, जगह के उपयोग की योजना, अवधारणा, विकास, समस्या विश्लेषण और डिजाइन प्रौद्योगिकी का परिचय करवाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ इंटीरियर डिजाइन |
| **कोर्स के बारे में** | यह एक स्नातक पाठ्यक्रम है। इस कोर्स की अवधि तीन वर्ष है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में विद्यार्थियों को प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा भी लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • वुमन पॉलिटेकनिक, भोपाल<br>• राजा मानसिंह तोमर विश्वविद्यालय, ग्वालियर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद, गुजरात<br>• इंडस्ट्रियल डिजाइन सेंटर, आई.आई.टी. मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• डिपार्टमेन्ट ऑफ डिजाइन, आई.आई.टी., गुवाहाटी, असम<br>• सेंटर फॉर एनवायरनमेंटल प्लानिंग एंड टेक्नोलॉजी, अहमदाबाद, गुजरात |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद छात्र कई संस्थानों जैसे हवाई अड्डों के टर्मिनल, कॉर्पोरेट हाऊस, अस्पताल, व्यावसायिक शो रूम्स, मीडिया घर, छात्रावास, संग्रहालयों का इंटीरियर डिजाइन का काम कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त वे स्वयं की फर्म खोलकर भी किन्हीं आर्किटेक्टस् के साथ मिलकर अपना करियर बना सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन इंटीरियर डिज़ाइन

डिप्लोमा कोर्स इस उद्योग की मौलिक जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। यह कोर्स विद्यार्थियों का विषय पर व्यापक दृष्टिकोण विकसित करता है ताकि वे उद्योग में इंटीरियर डिजाइन की मांग को समझ सकें और उन्नत स्तर पर अपने ज्ञान और रचनात्मकता के आधार पर अपना करियर निर्माण करने में सक्षम बन सकें। इंटीरियर डिजाइन में डिप्लोमा उन विद्यार्थियों को करना चाहिए जो रचनात्मक और विश्लेषणात्मक गुण के साथ ही डिजाइन और संरचना में रुचि रखते हैं, जो कौशल-आधारित नौकरी की तलाश में हैं और जो इस विषय में उच्च अध्ययन करने का लक्ष्य रखते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन इंटीरियर डिजाइन |
| **कोर्स के बारे में** | इंटीरियर डिजाइन में डिप्लोमा एक या दो वर्षों का कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान प्रवेश परीक्षाओं का आयोजन भी करते हैं जिसे पास करने के बाद मेरिट के आधार पर विद्यार्थियों को इस कोर्स में प्रवेश दिया जाता है।<br>• आईटीआई में प्रवेश हेतु विद्यार्थी 10वीं में उत्तीर्ण हों। मेरिट के आधार पर प्रवेश। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • विभिन्न आईटीआई में यह कोर्स होता है।<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • थिरुवल्लूवर विश्वविद्यालय, वेल्लोर, तमिलनाडु<br>• विभिन्न आईटीआई |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इंटीरियर डिजाइन डिप्लोमा करने के बाद विद्यार्थियों के पास करियर बनाने के लिए बहुत सारे विकल्प होते हैं। जैसे कोई वेडिंग डेकोरेटर, ड्राफ्ट्समैन, सहायक प्रबन्धक, सेटअप डिजाइनर, ऑटोमोटिव इंटीरियर डिजाइनर इत्यादि के रूप में काम कर अपना करियर बना सकता है। |

# फैशन डिजाइन

आमतौर पर वस्त्र, केशसज्जा, व्यवहार आदि की लोकप्रिय या नवीनतम शैली को फैशन कहा जाता है। फैशन डिजाइन से तात्पर्य है कपड़े, गहने और मेकअप आदि की डिजाइन। यह डिजाइन समय व स्थान के साथ बदलते हैं और सांस्कृतिक व सामाजिक दृष्टिकोण से भी प्रभावित होते हैं।

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ फैशन डिजाइन

फैशन डिजाइन कोर्स विशेष रूप से नवीन/रचनात्मक सोच और कल्पनाशील दिमाग के विद्यार्थियों के लिए डिजाइन किया गया है। यह कोर्स विद्यार्थियों को फैशन उद्योग किस प्रकार और किस रफ्तार के साथ काम करता है इसकी जानकारी के साथ ही सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ बदलते रुझानों और आर्थिक दृष्टिकोण के साथ कुछ नया करने के विचार प्रदान करता है। यह कोर्स विद्यार्थियों को विश्लेषणात्मक कौशल के साथ कल्पनाशील होने और तकनीकी परिप्रेक्ष्य में उत्कृष्ट होने के लिए प्रेरित करता है ताकि उन्हें फैशन उद्योग में अन्तर्राष्ट्रीय करियर को पाने का मौका मिले।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ फैशन डिजाइन |
| **कोर्स के बारे में** | बैचलर ऑफ फैशन डिजाइन 4 वर्षीय स्नातक कोर्स है। पाठ्यक्रम सेमेस्टर में आयोजित किया जाता है। प्रत्येक सेमेस्टर की अवधि 6 माह होती है। पूरे पाठ्यक्रम में 8 सेमेस्टर आयोजित किए जाते हैं और इसमें सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी विषय से बारहवीं की परीक्षा कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान प्रवेश परीक्षा भी आयोजित करते हैं। इस प्रवेश परीक्षा में विद्यार्थी की लिखित या कम्प्यूटर आधारित परीक्षा होती है जिसके बाद समूह चर्चा के दौर होते हैं।<br>• जो विद्यार्थी एनआईएफटी में प्रवेश लेने के लिए प्रयास करते हैं उन्हें उक्त परीक्षा पास करने के बाद संस्थान के द्वारा आयोजित सीएटी (क्रिएटिव एबिलिटी टेस्ट), जीएटी (जनरल एबिलिटी टेस्ट) और अंततः जीडी (ग्रुप डिस्कशन)/पीआई (पर्सनल इंटरव्यू) राउंड में भाग लेना होता है। सीएटी और जीएटी संभावित उम्मीदवारों को क्वांट्स, मौखिक क्षमता और छात्र के सामान्य ज्ञान को लेकर जागरूकता के आधार पर निर्णय लेते हैं। जीडी और पीआई के दौर पूरी तरह से उम्मीदवार के ज्ञान, उसकी बॉडी लेंग्वेज, प्रस्तुति कौशल और पीआई के दौरान मानसिक रूप से विद्यार्थी की उपस्थिति के आधार पर निर्णय लेते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फैशन डिजाइन, इंदौर<br>• NIFT, भोपाल<br>• INIFD, भोपाल<br>• SDPS, इंदौर<br>• पर्ल अकादमी, भोपाल |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद<br>• NIFT, दिल्ली/मुम्बई<br>• वीर सावरकर बेसिक ट्रेनिंग सेंटर, दिल्ली<br>• सिम्बायसिस इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन, पुणे, महाराष्ट्र |
| **कोर्स के बाद अवसर** | यह पाठ्यक्रम फैशन डिजानर, प्रोडक्शन डिजाइनर, फैशन स्टाइलिस्ट इत्यादि सहित व्यापक रूप से विद्यार्थियों को नौकरी के अवसर प्रदान करता है। |

# टेक्सटाइल डिजाइन

यहाँ टेक्सटाइल शब्द से तात्पर्य 'कपड़े' से है। टेक्सटाइल डिजाइन के विशेषज्ञ (टेक्सटाइल डिजायनर्स) विभिन्न प्रकार के कपड़ों की डिजाइन व निर्माण प्रक्रिया से संबंधित कार्य करते हैं। इनके द्वारा डिजाइन किए हुए कपड़ों का उपयोग फैशन डिजाइनर्स व इंटीरियर डिजाइनर्स वस्त्र व साज-सज्जा के लिए करते हैं।

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन टेक्सटाइल डिजाइन

टेक्सटाइल डिजाइनिंग कपड़ा डिजाइन से संबंधित डिप्लोमा कोर्स है जिसे फैशन डिजाइनिंग जैसे अन्य डिजाइन कोर्स के साथ भी किया जा सकता है। इस कोर्स के अंतर्गत विद्यार्थियों को डिजाइन अवधारणाओं को विकसित करने, नई आइडियाज़ को तकनीकी विशेषज्ञों के साथ कार्यान्वित करने के लिए स्क्रीन बुनाई या बुने हुए कपड़ों को तैयार करने की क्षमता सहित विशेष ज्ञान और कौशल प्रदान किया जाता है। कपड़ा डिजाइनिंग कोर्स में विद्यार्थियों को कपड़ा, कपड़ा उत्पादों के निर्माण, विकास और उत्पादन के लिए रंग, चित्रकारी, डिजाइन, कम्प्यूटर कौशल विकसित करने के अवसर मिलते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन टेक्सटाइल डिजाइन |
| **कोर्स के बारे में** | टेक्सटाइल डिजाइन में डिप्लोमा एक साल का कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी 55 प्रतिशत अंकों के साथ बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान विद्यार्थी के मेरिट स्कोर के साथ ही प्रवेश परीक्षा और व्यक्तिगत साक्षात्कार में मिलने वाले अंकों के बाद प्रवेश के निर्णय लेते हैं।<br>• IIT हेतु 10वीं की परीक्षा उत्तीर्ण हो। प्रवेश मेरिट के आधार पर। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फैशन डिजाइन, भोपाल<br>• NIFT, भोपाल |

| | |
|---|---|
| | • विभिन्न आईटीआई<br>• बी आर अम्बेडकर पॉलिटेक्निक कॉलेज, ग्वालियर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • विभिन्न आईटीआई |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को करने के बाद विद्यार्थी वस्त्र निर्माण, विज्ञापन क्षेत्र, शिल्प केन्द्र जैसे विभिन्न रोजगार क्षेत्रों में अपना करियर बना सकते हैं। इसके अलावा ड्रेस डिजाइनर, कालीन डिजाइनर, शोध सहायक जैसे करियर को भी चुन सकते हैं। इस कोर्स के पूरा होने के बाद छात्र वस्त्र डिजाइन में स्नातक और स्नातकोत्तर करके अपनी क्षमताओं को और अधिक बढ़ा सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग इन टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी

कपड़ा प्रौद्योगिकी एक व्यापक शैक्षणिक कार्यक्रम है जो विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के उपकरणों, डिजाइन और उत्पाद विकास, यार्न और फैब्रिक बनाने का काम, रंगाई और फिनिशिंग के बारे में विस्तार से समझने के अवसर देता है। इस कोर्स में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम में प्राकृतिक और सिंथेटिक फाइबर के साथ-साथ फाइबर और कपड़े के गुणों की पहचान करना और महत्वपूर्ण शोध भी शामिल हैं। यह कोर्स इंजीनियरिंग, डिजाइन, रसायन विज्ञान, प्रबन्धन, कम्प्यूटर, परिधान, विपणन/बिक्री और गुणवत्ता नियंत्रण में कौशल रखने वालों के लिए फायदेमंद है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग इन टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी |
| **कोर्स के बारे में** | इस स्नातक स्तर के कोर्स की अवधि 4 वर्ष है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं में भौतिक, रसायन और गणित विषय में कम से कम 55 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण होना चाहिए।<br>• कुछ प्रतिष्ठित संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा भी लेते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • श्री वैष्णव इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड साइंस, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • गुजरात टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद, गुजरात<br>• महाराजा सायाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, वडोदरा, गुजरात<br>• राष्ट्रसंत तुकाजी महाराज नागपुर यूनिवर्सिटी, नागपुर, महाराष्ट्र |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस क्षेत्र से पढ़ाई करने के बाद विद्यार्थी बुनाई मिलों, रंगाई का काम, रेशम के कारखाने, शॉपिंग मॉल कार्यकर्ता, शोधकर्ता, टेक्सटाइल इंजीनियर, टेक्नोलॉजिस्ट, प्रोसेस इंजीनियर, तकनीकी विक्रेता, तकनीकी सेवाएँ जैसे क्षेत्र में अपना करियर चुन सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी

इस कोर्स में छात्र योजना, उत्पादन, गुणवत्ता नियंत्रण, बिक्री या विपणन घरेलू उत्पादों की एजेंसियों या कपड़ा उत्पादों और कपड़ा मशीनरी के लिए देश के अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने वाले संस्थानों और उनकी कार्य प्रणाली के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। साथ ही, यह कोर्स विद्यार्थियों को अनुसंधान और सूचना/डेटा हैंडलिंग, मूल्यांकन और सामग्री की व्याख्या, लिखित और मौखिक संचार कौशल में भी दक्ष बनाता है। इसमें फाइबर, कपड़ा, परिधान प्रक्रियाओं, उत्पादों और मशीनरी के सभी पहलुओं के डिजाइन और नियंत्रण के लिए वैज्ञानिक और इंजीनियरिंग सिद्धांतों के सम्बन्ध में छात्र की जानकारी और समझ को बढ़ाने का काम किया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी |
| **कोर्स के बारे में** | टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी डिप्लोमा की अवधि एक वर्ष की है। यह डिप्लोमा स्तर का टेक्सटाइल इंजीनियरिंग कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | इस कोर्स में प्रवेश लेने के लिए छात्र किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा दसवीं उत्तीर्ण हो। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉक्टर बी.आर. अम्बेडकर पोलिटेक्निक कॉलेज, ग्वालियर<br>• श्री वैष्णव पोलिटेक्निक कॉलेज, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • पंजाब इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी, अमृतसर, पंजाब<br>• यूनिवर्सिटी ऑफ मुम्बई, मुम्बई, महाराष्ट्र |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को करने के बाद विद्यार्थी टेक्सटाइल कंपनियों के विभिन्न विभागों और रिसोर्स एण्ड डेवलपमेंट, बिक्री, प्रोसेस इंजीनियरिंग, प्रोडक्शन कंट्रोल, क्वालिटी कंट्रोल और कई अन्य क्षेत्रों में अपने टेक्सटाइल नॉलेज का उपयोग कर अपना करियर बनाने के लिए प्रयास कर सकते हैं। |

* * *

नृत्य
परफॉर्मिंग आर्ट्स
परफॉर्मिंग आर्ट्स
म्यूजिक
फाइन आर्ट्स

# परफॉर्मिंग आर्ट्स

यूनेस्को के अनुसार - परफॉर्मिंग आर्ट्स का क्षेत्र व्यापक है। इसके अंतर्गत केवल गायन, वाद्य संगीत, नृत्य, रंगमंच पर अभिनय, मूक अभिनय तथा कविता पाठ ही नहीं और भी कलाएं शामिल हैं। इनके माध्यम से कलाकार अपनी रचनात्मकता को कई प्रकार से अभिव्यक्त करते हैं। देखा जाए तो ये हमारी सांस्कृतिक धरोहर ही हैं जो इन कलाओं एवं कलाकारों के द्वारा आज भी जीवित है। किसी भी कलाकार द्वारा अपने दमदार अभिनय, प्रभावी आवाज, अंग संचालन या किसी भी अन्य माध्यम द्वारा भावनाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति करना ही कला का एक रूप कहलाता है।

आइए, हम आपकी मुलाकात अनु गुप्ता से करवाते हैं जो आज इसी क्षेत्र में कार्यरत हैं -

## अनु से अनुभूति का सफर

अनु डीएड (डिप्लोमा इन एजुकेशन) की डिग्री हासिल करने के बाद एक सरकारी नौकरी कर रही थी। पर 8 महीने बाद ही अनु ने यह नौकरी छोड़ दी। हालाँकि सरकारी नौकरी के लिए प्रयास करने का दबाव बचपन से ही उस पर था। परन्तु एक 30 दिवसीय ग्रीष्मकालीन कार्यशाला ने उसे एक नई राह दी। इस कार्यशाला में उसका परिचय कत्थक से हुआ और कत्थक का उस पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि बाद में उसने गंधर्व विद्यालय, दिल्ली से कत्थक में ही स्नातक की उपाधि प्राप्त की और अनुभूति नाम से अपना एक केन्द्र खोला। अब अनु प्रति वर्ष लगभग 200 बच्चों को कत्थक में प्रशिक्षित करती है। 'अनुभूति केन्द्र' के माध्यम से आज अनु देशभर के अलग-अलग 7 सुदूर क्षेत्रों में स्थित केन्द्रों पर कत्थक सिखाती है। अनु का कहना है कि 'जीवन में मिलने वाले अनुभवों को लेना और उससे मिलने वाले अवसरों को समझना बहुत जरूरी होता है। यही अनुभव और अवसर जीवन में नए विकल्प खोजने में मदद करते हैं।'

# प्रदर्शन कला

दर्शकों के सामने किसी भी विषय को रचनात्मक व कलात्मक तरीके से प्रस्तुत करना ही प्रदर्शन कला है। इसके अन्तर्गत नाटक, संगीत, नृत्य आदि प्रमुख रूप से शामिल हैं। फाईन आर्ट (ललित कलाओं) को भी इसी श्रेणी में रखा जाता है। मूलतः इन चार श्रेणियों को ही 'परफॉर्मिंग आर्ट' या प्रदर्शन कला के अन्तर्गत माना जाता है।

## कोर्स का नाम : बैचलर इन परफॉर्मिंग आर्ट्स

यह पाठ्यक्रम प्रदर्शन कला से संबंधित विभिन्न कौशल- जैसे नृत्य, संगीत, ड्रामा एवं इनसे जुड़े उपकरणों के उपयोग में विशेष दक्षता प्रदान करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर इन परफॉर्मिंग आर्ट्स |
| **कोर्स के बारे में** | यह स्नातक पाठ्यक्रम है। कुछ विश्वविद्यालयों में यह कोर्स 3 वर्षीय है और कुछ में 4 वर्षीय है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | किसी भी विषय से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • राजा मानसिंह तोमर विश्वविद्यालय, ग्वालियर<br>• डॉक्टर हरिसिंह गौर यूनिवर्सिटी, सागर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ़<br>• गंधर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स के बाद विद्यार्थी विभिन्न संस्थानों में निम्नलिखित पदों पर कार्य कर सकते हैं -<br>• थिएटर/स्टेज मैनेजर के रूप में,<br>• एक्टिंग/डबिंग/थिएटर में,<br>• नृत्य/संगीत के इंस्ट्रक्टर के रूप में,<br>• वे स्वयं का प्रशिक्षण संस्थान भी खोल सकते हैं। |

# संगीत (म्यूजिक)

भारत में संगीत का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। इस कला के अंतर्गत गायन व वादन जैसी क्रियाएं आती हैं। संगीत के भी अनेक प्रकार हैं जैसे शास्त्रीय संगीत, लोक गीत, पॉप संगीत आदि। इस क्षेत्र में अपना करियर बनाने के लिए एक स्नातक डिग्री कोर्स विभिन्न विश्वविद्यालयों में चलाया जाता है।

## कोर्स का नाम : बीए म्यूजिक, बीए ऑनर्स संगीत

इस कोर्स में म्यूजिक से संबंधित विभिन्न अवधारणाओं के बारे में विस्तार से बताया जाता है। यह कोर्स गायन, वाद्य संगीत का संयोजन है। यह कोर्स विद्यार्थी को विभिन्न राग और स्वर को गहराई से समझने में मदद करता है। साथ ही स्वर एवं राग इत्यादि के इतिहास और विज्ञान को भी समझाता है। यह कोर्स भारतीय संगीत के प्रकार और महत्व को भी बताता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए म्यूजिक, बीए ऑनर्स संगीत |
| **कोर्स के बारे में** | यह कोर्स स्नातक डिग्री कोर्स है। इसकी अवधि 3 वर्ष है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | इस कोर्स में वे विद्यार्थी सीधे प्रवेश ले सकते हैं जिन्होंने बारहवीं कक्षा में वैकल्पिक विषय के रूप में संगीत को चुना हो। यदि कोई विद्यार्थी जिन्होंने बारहवीं में संगीत को विषय के रूप में नहीं पढ़ा हो पर जिनकी संगीत में रुचि हो और जो संगीत में अपना करियर बनाना चाहते हों वे भी एक ऑडिशन देकर स्नातक में प्रवेश ले सकते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉक्टर हरिसिंह गौर यूनिवर्सिटी, सागर<br>• नवोदित कला संगीत महाविद्यालय, सागर<br>• राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला यूनिवर्सिटी, भोपाल<br>• संगीत महाविद्यालय, रतलाम<br>• राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला यूनिवर्सिटी, ग्वालियर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ़<br>• सर्टिफिकेट हेतु इग्नू<br>• सर्टिफिकेट हेतु विभिन्न इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट<br>• दिल्ली यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली<br>• भारतीय कला केन्द्र, दिल्ली<br>• अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• पटना यूनिवर्सिटी, पटना, बिहार<br>• भातखंडे म्यूजिक स्कूल, नई दिल्ली<br>• अजमेर म्यूजिक कॉलेज, अजमेर, राजस्थान<br>• वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान<br>• बनारस हिंदु विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस क्षेत्र में स्नातक की डिग्री लेने के बाद संगीत-आधारित करियर के अवसर मिलते हैं। जैसे किसी भी संगीत संस्थान में संगीत शिक्षक |

| | |
|---|---|
| | या संगीत प्रोफेसर के पद पर कार्य कर सकते हैं। साथ ही, संगीत में शोध करके पीएचडी की जा सकती है। यदि कोई विद्यार्थी संगीत में पीएचडी, एमफिल या स्नातकोत्तर की उपाधि ले तो वह किसी भी प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में व्याख्याता के पद के लिए आवेदन कर नौकरी प्राप्त कर सकता है। संगीत निर्देशक, संगीत पत्रकार, वाद्य शिक्षक, संगीत कार्यक्रम के आयोजनकर्ता, संगीत पुस्तकालय, संगीत शिक्षण केन्द्र और संगीत के जिला पर्यवेक्षक के साथ ही बैंड निर्देशक जैसे कार्य इस कोर्स को करने के बाद आसानी से किए जा सकते हैं। यह कोर्स रेडियो, टी.वी. चैनल्स, फिल्मों और विज्ञापन कंपनियों में कार्य करने के अवसर भी देता है। |

## नृत्य

नृत्य भारतीय संस्कृति का एक बहुत पुराना एवं अहम अंग है। चाहे ईश्वर की स्तुति हो या किसी पर्व या खुशी को बाँटना सभी अवसरों पर नृत्य किया जाता है। साथ ही मनोरंजन फिल्मों आदि में भी नृत्य कला का उपयोग होता है। नृत्य के कई प्रकार हैं जैसे शास्त्रीय नृत्य, लोक नृत्य, बॉलीवुड कन्टेम्परारी, ब्रेक डांस आदि। यह क्षेत्र आज भी नवाचार का ही क्षेत्र है। शिक्षक, कलाकार से लेकर कोरियोग्राफर तक सब नृत्य से जुड़े हैं।

### कोर्स का नाम : बीए नृत्य

नृत्य के कोर्स में नृत्यकला सम्बन्धी शास्त्र के प्रमुख सिद्धांत, प्रस्तुति, अभ्यास, कैमरा के समक्ष नृत्य करने का कौशल, संगीत और गति में तालमेल स्थापित कर नृत्य करना सिखाते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए,नृत्य |
| **कोर्स के बारे में** | यह कोर्स स्नातक डिग्री कोर्स है। इसकी अवधि 3 वर्ष है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला यूनिवर्सिटी, भोपाल/ ग्वालियर<br>• डॉ. हरिसिंह गौर सेंट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• सर्टिफिकेट हेतु विभिन्न इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • गंधर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली<br>• कत्थक केन्द्र, दिल्ली<br>• शामक डावर इंस्टिट्यूट ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, नई दिल्ली<br>• पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस क्षेत्र में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद नृत्य आधारित करियर के अवसर प्राप्त होते हैं जैसे- किसी भी नृत्य संस्थान में नृत्य शिक्षक, नृत्य विशेषज्ञ, मंच नर्तक और स्वतंत्र नृत्य शिक्षण संस्थान खोलकर रंगमंच और टी.वी. व फिल्म उद्योग में अपने करियर को दिशा दे सकते हैं।<br>विद्यार्थी स्नातक होने के बाद नृत्य में ही स्नातकोत्तर उपाधि भी ले सकते हैं। यदि किसी विद्यार्थी की रुचि पीएचडी या इससे भी आगे पढ़ने में है तो वे डी लिट (नृत्य) भी कर सकते हैं। इसे करने के बाद वे किसी भी प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी में व्याख्याता के पद के लिए आवेदन कर सकते हैं। |

## ड्रामा

ड्रामा का अर्थ नाट्य कला के माध्यम से कोई कहानी या संदेश देना है। इसके कई प्रकार होते हैं जैसे रंगमंच पर नाट्य प्रस्तुति, थिएटर, नुक्कड़ नाटक आदि। यह एक बहुत ही रोमांचक शाखा है। यहाँ कलाकार एक साथ मिलकर सदा कुछ नया करने का प्रयास करते हैं। अक्सर समाज सुधार हेतु संदेश या दिल को छू जाने वाले मार्मिक संदेश भी दे जाते हैं।

### कोर्स का नाम - बीए (ड्रामा)

इस कोर्स में रंगमंच और उस पर मंचन करना, ड्रामा के सैद्धांतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, रंगमंच के विभिन्न रूप और मूल तत्व, साथ ही दृश्यों को समझना और उनका विश्लेषण करना जैसे कौशल विकसित कराए जाते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए (ड्रामा) |
| **कोर्स के बारे में** | यह तीन वर्षीय स्नातक डिग्री कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इन्दौर |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सावित्रीबाई फुले यूनिवर्सिटी, पुणे, महाराष्ट्र<br>• गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद, गुजरात<br>• नवाब जस्सा सिंग अहलुवालिया शासकीय महाविद्यालय, कपूरथला, पंजाब |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को करने के बाद छात्र नाटककार, व्यावसायिक अभिनेता, निर्देशक, ड्रामा शिक्षक, रेडियो प्रेजेंटर, टीवी अथवा फिल्म उद्योग में अभिनय, रंगमंच पर अभिनय जैसे कार्यों का चयन कर सकता है। साथ ही यदि कोई विद्यार्थी चाहे तो स्वयं का ड्रामा स्कूल भी खोल सकता है। इसी क्षेत्र में स्नातकोत्तर के बाद पीएचडी भी की जा सकती है। |

## ललित कला (फाईन आर्ट)

ललित कला एक रचनात्मक कला है, विशेष रूप से दृश्य कला है, जिसके कार्य को मुख्य रूप से उसकी कल्पनाशील, सौंदर्यवादी या बौद्धिक सामग्री के लिए सराहा जाता है। इसके अंतर्गत चित्रकारी, मूर्तिकला आदि आते हैं।

### कोर्स का नाम : बैचलर इन फाइन आर्ट्स

इस कोर्स में भारतीय कला का इतिहास, मिट्टी के प्रयोग से मूर्तिकला, पोट्रेट पेटिंग करना आदि कलाएँ सिखाई जाती हैं। यह कोर्स खूबसूरत म्यूरल निर्माण में भी विद्यार्थियों को विषय की बारीकियों का सैद्धांतिक और प्रायोगिक अभ्यास करवाकर दक्ष बनाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर इन फाइन आर्ट्स |
| **कोर्स के बारे में** | यह कोर्स तीन वर्षीय स्नातक डिग्री कोर्स है। इस कोर्स को कई महाविद्यालयों में छः सेमेस्टर के दौरान पूरा करवाया जाता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | इस कोर्स को करने के लिए किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं में कम से कम 50 प्रतिशत अंक लेकर पास होना अनिवार्य है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • कॉलेज ऑफ डिजाइन एंड टेक्नोलॉजी, इन्दौर<br>• शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल<br>• शासकीय कमला राजे कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर<br>• नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फाईन आर्ट, पन्ना<br>• राजा मानसिंह तोमर कला एवं संगीत विश्वविद्यालय, भोपाल |

| | |
|---|---|
| | • राजा मानसिंह तोमर कला एवं संगीत विश्वविद्यालय, ग्वालियर<br>• डॉ. हरिसिंह गौर सेंट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• सर्टिफिकेट हेतु विभिन्न इंडस्ट्रीयल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • गंधर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली<br>• इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ़<br>• बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश<br>• जे.जे. स्कूल ऑफ फाईन आर्ट्स, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब |
| **कोर्स के बाद अवसर** | फाईन आर्ट का कोर्स करने के बाद विद्यार्थियों के सामने कई विकल्प खुल जाते हैं जिनमें से किसी एक का चयन कर वे अपना करियर बना सकते हैं। इस क्षेत्र का चुनाव करने के बाद विद्यार्थी स्वयं की आर्ट गैलेरी खोल सकते हैं। किसी इंटीरियर करने वाली कम्पनी से जुड़ सकते हैं, अखबारों, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, बाल साहित्य या कॉमिक छापने वाले प्रतिष्ठित प्रकाशकों से जुड़ सकते हैं या फाईन आर्ट विश्लेषक या आगे पढ़ाई कर किसी मान्यता प्राप्त विद्यालय- महाविद्यालय में शिक्षक के रूप में काम कर सकते हैं। |

* * *

फ़ूड
प्रोडक्शन
इवेंट
मैनेजमेंट
HOSPITAL
TRAVEL
टूरिजम
हॉस्पिटैलिटी

# हॉस्पिटैलिटी एण्ड टूरिज्म

घूमने-फिरने के शौकीन और देश की विरासत, संस्कृति और देश-विदेश की खूबसूरत जगहों को देखना चाहने वाले विद्यार्थियों के लिए हॉस्पिटेलिटी, ट्रेवल एण्ड टूरिज्म बेहतर विकल्प साबित हो सकता है। इसमें घूमने-फिरने के साथ ही उन्हें करियर बनाने का मौका भी मिल सकता है। आज भारत की 'अतिथि देवो भवः' की प्राचीन परम्परा एक खूबसूरत करियर का रूप ले चुकी है। इसके अन्तर्गत आज होटल, रेस्टोरेंट से लेकर एयरलाईन्स तक हर जगह 'अतिथि देवो भवः' का पालन करने वाले क्षमतावान युवाओं की जरूरत है। ऑफिस रिसेप्शन से लेकर होटल, रेस्टोरेंट में खानपान व सुविधाएँ, ठहरना, टूर एण्ड ट्रेवल्स, इवेंट प्लानिंग, क्रूज़ लाइनर, मैनेजमेंट, एयरलाईन्स, एम्युजमेंट पार्क तक अलग-अलग सेक्टर इस इंडस्ट्री में शामिल किए जाते हैं। इस क्षेत्र को चुनने वाले विद्यार्थियों में टूरिस्ट को घुमाने-फिराने, उनके ठहरने, उनके खानपान की व्यवस्था करने जैसे संबंधित कौशल को विकसित करने के अवसर मिलते हैं।

इसी क्षेत्र को अपना करियर बनाकर पिछले पाँच सालों से काम कर रहे प्रमोद रैकवार की सफलता की कहानी विद्यार्थियों की समझ को बढ़ाने और विकल्प को पहचानने की दृष्टि से यहाँ दी गई है -

## प्रमोद रैकवार ने की ऐसे शुरुआत

प्रमोद रैकवार ने मान्यता प्राप्त 'नेशनल स्किल डेवलपमेंट कार्पोरेशन' से तीन महीने का कोर्स पूरा करके हॉस्पिटैलिटी में अपने करियर को एक नई दिशा दी। करियर के शुरुआती दौर में उन्हें एक कम्पनी की कैंटीन में दोपहर के भोजन की आपूर्ति का काम मिला था। हालाँकि यह बहुत ही छोटा काम था परन्तु शुरुआत में इस तरह का काम मिलना भी एक बड़ी सफलता है। आज प्रमोद उसी कम्पनी में आने वाले गणमान्य मेहमानों के सुबह के भोजन (ब्रेकफास्ट) की व्यवस्था करने का काम भी करते हैं। प्रमोद कहते हैं 'करियर की शुरूआत करने के लिए किसी एक क्षेत्र का चुनाव करना जरूरी होता है। साथ ही करियर की शुरुआत में मिलने वाले किसी भी काम को कभी छोटा नहीं आंकना चाहिए, जो भी काम मिले उसका सम्मान करते हुए शुरुआत करनी चाहिए।'

# हॉस्पिटैलिटी (आतिथ्य प्रबंधन)

आतिथ्य प्रबंधन टूरिज्म उद्योग के अंतर्गत आने वाला एक मुख्य उद्योग है। इसके अंतर्गत ईवेंट प्लानिंग, होटल की देखरेख, अतिथियों का ध्यान रखना आदि जैसे कार्य शामिल हैं।

## कोर्स का नाम - बीएससी हॉस्पिटैलिटी एडमिनिस्ट्रेशन

इस कोर्स में विद्यार्थियों को पर्यटन, आतिथ्य प्रबन्धन, यात्रा और टूर संचालन, होटल अर्थशास्त्र से परिचय करवाया जाता है। इसके अतिरिक्त हाऊस-कीपिंग, लाँड्री संचालन, खाद्य सुरक्षा, स्वच्छता और सेनिटेशन सुविधा और सम्पत्ति प्रबन्धन, पोषण और डायटेटिक्स, हॉस्पिटैलिटी कानून, उपभोक्ताओं द्वारा किया जाने वाला व्यवहार, डाटा विश्लेषण इत्यादि के बारे में विस्तार से बताया जाता है। फ्रंट ऑफिस ऑपरेशन और हाऊस-कीपिंग जैसे क्षेत्रों में आवश्यक ज्ञान और कौशल मानकों को हासिल करने के लिए गहन प्रायोगिक काम भी इस कोर्स का हिस्सा है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ साइंस (बीएससी) हॉस्पिटैलिटी और होटल एडमिनिस्ट्रेशन |
| **कोर्स के बारे में** | यह कोर्स तीन वर्ष का है। यह सेमेस्टर आधारित कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • इस क्षेत्र में जाने के लिए किसी भी विषय के साथ कक्षा बारहवीं में कम से कम 50 प्रतिशत अंक होना अनिवार्य है। साथ ही अंग्रेजी भी अनिवार्य विषय के रूप में हो।<br>• इस क्षेत्र में प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय और महाविद्यालय प्रवेश परीक्षा के परिणाम के आधार पर ही प्रवेश देते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, ग्वालियर<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, भोपाल<br>• इंस्टिट्यूट स्टेट इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, इंदौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग एण्ड न्यूट्रीशन, दिल्ली<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• डिपार्टमेंट ऑफ होटल मैनेजमेंट, क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलुरू, कर्नाटक |

| | |
|---|---|
| | • आर्मी इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट एण्ड कैटरिंग टेक्नोलॉजी बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी, केरल<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, लखनऊ, उत्तरप्रदेश<br>• इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, अहमदाबाद, उत्तरप्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस क्षेत्र से पढ़ाई पूरी करने के बाद विद्यार्थियों के लिए भविष्य में करियर की संभावनाएँ विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ जाती हैं जैसे होटल और संबंधित उद्योगों में बावर्ची, अस्पताल और संस्थागत खानपान प्रबन्धक, पर्यवेक्षक, होटल प्रबन्धन, क्रूज/जहाजों में खानपान अधिकारी, पेंट्री प्रबन्धन, पर्यटन विकास निगमों में प्रबन्धक/पर्यवेक्षक, खाद्य तकनीक अधिकारी, स्वयं के फास्ट फूड चेन में काम कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम - डिप्लोमा इन फ्रंट ऑफिस ऑपरेशन/डिप्लोमा इन हाउस कीपिंग ऑपरेशन

सभी होटल, रेलवे, रिज़ोर्ट आदि में ऐसे प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता होती है जो फ्रंट ऑफिस और हाउस कीपिंग के कार्य कुशलता से कर पाएं। इन सभी संस्थानों के यह बहुत अहम कार्य होते हैं। इस हेतु सरकार ने (पर्यटन मंत्रालय) द्वारा यह दो डिप्लोमा संचालित किए जाते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन फ्रंट ऑफिस ऑपरेशन/डिप्लोमा इन हाउस कीपिंग ऑपरेशन |
| **कोर्स के बारे में** | यह एक वर्ष का कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | किसी भी विषय से मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं की परीक्षा पास करने के बाद विद्यार्थी एक वर्षीय डिप्लोमा में प्रवेश ले सकता है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, भोपाल<br>• इंडियन टूरिज्म डेवलपमेंट कार्पोरेशन से संबंधित विभिन्न होटल और कॉलेज |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट कैटरिंग एण्ड न्यूट्रीशन, दिल्ली<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, मुम्बई, महाराष्ट्र |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, चेन्नई, तमिलनाडु<br>• डिपार्टमेंट ऑफ होटल मैनेजमेंट, क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग एण्ड न्यूट्रीशन, पंजाब<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट एण्ड कैटरिंग टेक्नोलॉजी, केरल<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, लखनऊ, उत्तरप्रदेश<br>• इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, अहमदाबाद, गुजरात |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इसमें से कोई एक कोर्स को करने के बाद विद्यार्थी ऑनबोर्ड फ्लाइट सर्विसेज, हॉस्पिटैलिटी सर्विसेज, मैनेजमेंट ट्रेनी, इंटरनेशनल एंड नेशनल होटल चेन में कार्यकारी, अस्पताल और इंस्टिट्यूशनल कैटरिंग, शिपिंग और क्रूज, इवेंट मैनेजमेंट संस्थान (कार्यक्रम योजना सुविधाएँ प्रबन्धन) जैसे अलग-अलग संस्थानों में अपना करियर बना सकते हैं। |

# इवेंट मैनेजमेंट

सम्मेलन, व्यापार प्रदर्शनी, पार्टियाँ, शादियाँ आदि जैसे बड़े आयोजनों की योजना और प्रबंधन का कार्य इवेंट मैनेजमेंट कहलाता है। इवेंट मैनेजमेंट को विद्यार्थियों को घटना का विश्लेषण, योजना, विपणन, उत्पादन और मूल्यांकन जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षित करता है। पिछले कुछ वर्षों में इवेंट मैनेजमेंट की दुनिया में काफी बदलाव आए हैं, खासतौर से नई तकनीकों की मदद से इवेंट को बेहतर बनाने, अलग-अलग लोगों, टीमों और सुविधाओं के बीच समन्वय स्थापित करने, योजनाबद्ध तरीके से काम करना इवेंट मैनेजमेंट के अंतर्गत आता है।

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन इवेंट मैनेजमेंट

यह कोर्स विद्यार्थियों में प्रबन्धक के विभिन्न गुणों को विकसित करने में भी मदद करता है जो उनके काम में सहायक होते हैं जैसे - पारस्परिक कौशल, स्वभाव में लचीलापन, नेतृत्व क्षमता, ऊर्जा, संगठनात्मक कौशल, उत्साह, समय प्रबन्धन इत्यादि। इवेंट मैनेजमेंट में डिप्लोमा करने के बाद करियर की संभावनाएँ बहुत हद तक बढ़ जाती हैं। करियर की दृष्टि से इस क्षेत्र को आतिथ्य प्रबन्धन का क्षेत्र माना जाता है, इसका मुख्स उद्देश्य इवेंट की योजना बनाना और योजनाओं को क्रियान्वित करना होता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन इवेंट मैनेजमेंट |
| **कोर्स के बारे में** | इवेंट मैनेजमेंट में डिप्लोमा एक साल का कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | छात्र किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान/शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से 12वीं कक्षा में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण हो। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • इग्नू, दिल्ली (दूरस्थ शिक्षा)<br>• NIEM, इंदौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • NIEM, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• खालसा कॉलेज, अमृतसर, पंजाब<br>• NAEMD, अहमदाबाद, दिल्ली, जयपुर मुम्बई |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इवेंट मैनेजमेंट में डिप्लोमा करने के बाद छात्र इवेंट मैनेजमेंट, होटल/यात्रा और आतिथ्य उद्योग, विज्ञापन एजेंसियों जैसे नौकरी के अवसरों की ओर अपना कदम बढ़ा सकते हैं या इससे आगे की शिक्षा के लिए भी प्रयास कर सकते हैं।<br>विद्यार्थी इवेंट मैनेजर, इवेंट अकाउंट्स मैनेजर, कस्टमर केयर एक्जीक्यूटिव जैसे पद और काम का चुनाव कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन हॉस्पिटैलिटी एंड कैटरिंग मैनेजमेंट

यह डिप्लोमा स्तर का होटल मैनेजमेंट कार्यक्रम है। यह उन विद्यार्थियों के लिए बेहतर विकल्प हो सकता है जिनका रुझान हॉस्पिटैलिटी, ट्रेवल और टूर के क्षेत्र/उद्योगों में ज्यादा रहता है। इस कोर्स में औद्योगिक प्रशिक्षण के साथ ही होटल प्रशासन, लेखा, विपणन, हाऊसकीपिंग, फ्रंट ऑफिस, खाद्य और पेय प्रबन्धन, कैटरिंग और रख-रखाव आदि कौशल शामिल होते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन हॉस्पिटैलिटी एंड कैटरिंग मैनेजमेंट |
| **कोर्स के बारे में** | डिप्लोमा इन हॉस्पिटैलिटी एंड कैटरिंग मैनेजमेंट एक वर्षीय कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • छात्र कम से कम 45 प्रतिशत के साथ किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से 12वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।<br>• कुछ संस्थानों/महाविद्यालयों में भी इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। |

| | |
|---|---|
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल<br>• इंडियन टूरिज्म डेवलपमेंट कार्पोरेशन से संबंधित होटल और कॉलेज |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सिबसागर कॉमर्स कॉलेज, सिबसागर, असम<br>• गुजरात इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, वडोदरा, गुजरात |
| **कोर्स के बाद अवसर** | कॉलेजों और विश्वविद्यालयों, पर्यटन और अवकाश क्षेत्र (लेज़र सेक्टर), मनोरंजन क्षेत्र, होटल और रेस्तरां, परिवहन क्षेत्र, खानपान अधिकारी, आतिथ्य एक्सिक्यूटिव, खानपान पर्यवेक्षक और सहायक, ग्राहक सेवा कार्यकारी, केबिन क्रू, होस्टेज एंड होस्ट जैसे क्षेत्र में विद्यार्थी अपना करियर बना सकते हैं। |

## फूड प्रोडक्शन

खाद्य उत्पादन (फूड प्रोडक्शन) कोर्स आमतौर पर पाक कौशल, खानपान के खाद्य सिद्धांत, पोषण, स्वच्छता, व्यापार और आतिथ्य प्रबन्धन पर केन्द्रित होते हैं। यह कोर्स करने के बाद विद्यार्थियों को फास्ट फूड रेस्तरां, कैफेटेरिया, स्कूल, अस्पतालों, गैर-लाभकारी संगठनों, सरकारी एजेंसियों और भंडारण सुविधाओं और खेतों में लाभप्रद रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

### कोर्स का नाम - डिप्लोमा इन फूड प्रोडक्शन

होटल, रेस्तराँ, फास्ट फूड आऊटलेट, रिसॉर्ट्स, रेलवे एयर लाइंस, क्रूज लाइनर और अन्य जैसे आतिथ्य-आधारित प्रतिष्ठानों को अपने यहाँ प्रशिक्षित कर्मियों की आवश्यकता होती है। होटल प्रबन्धन के लिए राष्ट्रीय परिषद ऐसे कर्मियों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाती है। उसमें से एक पाठ्यक्रम फूड प्रोडक्शन भी है। इस कोर्स के पाठ्यक्रम में पाकशास्त्र, भंडार संभालना, स्वच्छता और पोषण, वस्तुओं और उनकी अनुमानित लागत, कम्प्यूटर जागरूकता इत्यादि विषयों का अध्ययन करवाया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन फूड प्रोडक्शन |
| **कोर्स के बारे में** | यह 1 वर्ष में पूरा होने वाला डिप्लोमा कोर्स है। इस पाठ्यक्रम को पूरा करने में विद्यार्थी कोर्स के सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों घटकों का अध्ययन करते हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण हो। |

| | |
|---|---|
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, भोपाल<br>• इंडियन टूरिज्म डेवलपमेंट कार्पोरेशन से संबंधित होटल और कॉलेज |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट कैटरिंग एण्ड न्यूट्रीशन, दिल्ली<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, चेन्नई, कर्नाटक<br>• डिपार्टमेंट ऑफ होटल मैनेजमेंट, क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• आर्मी इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट एण्ड कैटरिंग टेक्नोलॉजी बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग एण्ड न्यूट्रीशन, पंजाब<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट एण्ड कैटरिंग टेक्नोलॉजी केरल<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, लखनऊ, उत्तरप्रदेश<br>• इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, अहमदाबाद, गुजरात |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को करने वाले विद्यार्थियों के लिए कुछ विशिष्ट व्यावसायिक विकल्प हैं जिन्हें चुनकर वे अपने लिए बेहतर करियर का चयन कर सकते हैं। ये विकल्प हैं - कुक/शेफ, खाद्य प्रदायक, भोज प्रबन्धक, खरीद प्रबन्धक या खाद्य उत्पादन निदेशक हो सकते हैं। |

## कोर्स का नाम - क्राफ्ट्समेनशीप सर्टिफिकेट कोर्स इन फूड प्रोडक्शन

क्राफ्ट्समेनशीप सर्टिफिकेट कोर्स इन फूड प्रोडक्शन एक प्रमाण-पत्र स्तर का कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी कार्यक्रम है। यह कोर्स वाणिज्यिक खाद्य के संचालन और भोजन पकाने में आवश्यक आवश्यकताओं और पेशेवर कौशल के साथ विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करता है।

कोर्स में जिन विषयों को लिया गया है उनका शिक्षण क्रमवार तरीके से करवाया जाता है जैसे पाककला और उसमें रखी जाने वाली स्वच्छता, पेस्ट्रिज़ और बेकरी तथा उपकरण रख-रखाव और उसमें लगने वाली लागत के बारे में बताया जाता है। साथ ही सामग्री, मेन्यू का ज्ञान, आवश्यक तैयारी के साथ ही साइड डिश की सजावट पर भी ध्यान दिया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | क्राफ्ट्समेनशीप सर्टिफिकेट कोर्स इन फूड प्रोडक्शन |
| **कोर्स के बारे में** | क्राफ्ट्समेनशीप सर्टिफिकेट कोर्स इन फूड प्रोडक्शन कोर्स इन फूड प्रोडक्शन का पाठ्यक्रम 1.5 वर्ष अर्थात् 18 माह का है। यह एक प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम है।<br>डिप्लोमा दो सेमेस्टर में बाँटकर पूरा किया जाता है। इसके बाद विद्यार्थियों को बीस सप्ताह के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण दिया जाता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) या इसके समकक्ष परीक्षा से न्यूनतम बारहवीं उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ प्रतिष्ठित संस्थान कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन करते हैं और विद्यार्थियों के प्रदर्शन के आधार पर और उसके बाद परामर्श के परिणामस्वरूप प्रवेश देते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, ग्वालियर<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, भोपाल<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, भोपाल<br>• इंडियन टूरिज्म डेवलपमेंट कार्पोरेशन से संबंधित होटल और कॉलेज |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट कैटरिंग एण्ड न्यूट्रीशन, दिल्ली<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, चेन्नई, कर्नाटक<br>• डिपार्टमेंट ऑफ होटल मैनेजमेंट, क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग एण्ड न्यूट्रीशन, पंजाब<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट एण्ड कैटरिंग टेक्नोलॉजी, केरल<br>• इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड अप्लाइड न्यूट्रीशन, लखनऊ, उत्तरप्रदेश<br>• इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, अहमदाबाद, गुजरात |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | विद्यार्थियों को यह कोर्स करने के बाद फूड प्रोसेसिंग संगठनों, होटलों, आतिथ्य उद्योग, शीतल पेय कारखानों, चावल मिलों व निर्माण उद्योगों (मेन्युफेक्चरिंग इंडस्ट्री) और पैकेजिंग उद्योगों में रोजगार के अवसर मिल सकते हैं। इस कोर्स को करने के बाद निजी क्षेत्र में नौकरी के लिए भी आवेदन कर सकते है, जिनमें कैडबरी, अमूल, ब्रिटानिया, हिन्दुस्तान लीवर, मेट्रो डायरी, नेस्ले, केलॉग और ऐसे अन्य कई संस्थान शामिल हैं।<br>विद्यार्थी इस क्षेत्र में स्नातक, मास्टर्स डिग्री और पीएच.डी जैसे आगे के अध्ययन के लिए भी प्रयास कर सकते हैं। आवेदक नई वस्तुओं को विकसित करने, मौजूदा परीक्षणों और सभी खाद्य सामग्री की गुणवत्ता को नियंत्रित करने के लिए अनुसंधान प्रयोगशालाओं और अनुसंधान एवं विकास क्षेत्रों में भी काम कर सकते हैं। |

# पर्यटन (टूरिज्म)

यात्रा और पर्यटन उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा कमाने वाले क्षेत्रों में से एक है। इस क्षेत्र में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में करियर के कई अवसर उपलब्ध हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में निदेशक और केन्द्र के पर्यटन विभाग और राज्य अधिकारी, सूचना सहायक, पर्यटक गाइड इत्यादि के अवसर हैं। योग्य पर्यटन पेशेवरों के लिए एक और अच्छी संभावना निजी क्षेत्रों में ट्रेवल एजेंसियाँ, टूर ऑपरेटर, एयरलाइंस, होटल, परिवहन और कार्गो कंपनियाँ इत्यादि हैं।

## कोर्स का नाम - बैचलर इन टूरिज्म स्टडी

यात्रा एवं पर्यटन से संबंधित इस कोर्स में पर्यटन प्रबन्धन, पर्यटन का प्रचार-प्रसार, भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में पर्यटन का परिप्रेक्ष्य, भारतीय इतिहास का संक्षिप्त परिचय, पर्यटन का फाउंडेशन कोर्स, मानविकी और विज्ञान में फाउंडेशन पाठ्यक्रम और मानव पर्यावरण जैसे विषयों को पढ़ाया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर इन टूरिज्म स्टडी |
| **कोर्स के बारे में** | यह तीन वर्षीय स्नातक डिग्री कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कम से कम 50 प्रतिशत अंक के साथ किसी भी विषय से बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण हो। |

| | |
|---|---|
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • इम्पीरियल कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, इन्दौर<br>• जीवाजी यूनिवर्सिटी ग्वालियर, • इग्नू, दिल्ली (दूरस्थ शिक्षा) |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली<br>• इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टूरिज्म एंड ट्रेवल मैनेजमेंट, नई दिल्ली<br>• बुन्देलखण्ड यूनिवर्सिटी, झाँसी, उत्तरप्रदेश<br>• बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, (BHU) बनारस, उत्तरप्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | यह कोर्स करने के बाद विद्यार्थी एयर लाइन्स, स्टाफ, केबिन क्रू, ट्रेवल एक्सिक्यूटिव, टूर ऑपरेटर, ट्रेवल एजेंट, टूरिज्म विभाग में नौकरी, ट्रेवल ट्रेनिंग सलाहकार, टूर ऑपरेशन मैनेजर के रूप में भी काम कर सकते हैं। इसके अलावा इस क्षेत्र में स्वयं की ट्रेवल एजेंसी, ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन, फूड एंड हॉस्पिटैलिटी उद्योग, ट्रांसपोर्ट एवं कार्गो कम्पनी भी शुरू कर सकते हैं। |

* * *

HOTEL
बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन
होटल मैनेजमेंट
HOSPITAL
हॉस्पिटल मैनेजमेंट
ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट
मैनेजमेंट

# प्रबन्धन (मैनेजमेंट)

प्रबन्धन संकाय कई कार्यक्षेत्रों से जुड़ा हुआ है जैसे किसी भी फर्म, व्यवसाय आदि को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रबन्धन कौशल अत्यन्त आवश्यक है। प्रबन्धन से जुड़ी हुई मुख्य 4 ब्रांच हैं जिनके अन्तर्गत - मानव संसाधन विकास, सूचना सेवा आदि आते हैं। विद्यार्थी प्रबन्धन के कार्य से दो प्रकार से जुड़ सकते हैं - 1. विषय में स्नातकोत्तर तक अध्ययन करके 2. प्रबन्धन का अनुभव अर्जित करके।

### फायनेंस मैनेजर अनीता पंदराम

यह सफलता की कहानी है अनीता पंदराम की। ग्राम चार टेकरा, ब्लॉक केसला, जिला होशंगाबाद के आदिवासी समुदाय की बालिका अनीता जब गाँव से 8 किलोमीटर दूर पैदल चलकर स्कूल जाया करती थी तब वह सपने में भी सोच नहीं सकती थी कि वह किसी दिन एक कंपनी में फायनेंस मैनेजर के पद पर कार्य करेगी। उसने अपनी पसंद के विषय कॉमर्स से 12वीं कक्षा उत्तीर्ण की। आगे पढ़ाई के लिए उसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर के बारे में जानकारी मिली। वहाँ से स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल करके वह एक कंपनी में फाइनेंशियल एडवाईज़र के रूप में नियुक्त हुई और आज अनीता उसी कम्पनी में असिस्टेंट फायनेंस मैनेजर के रूप में कार्यरत है।

## प्रबन्धन

कुछ विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किसी व्यवसाय या संस्थान के संगठन या समन्वयन कार्य को प्रबंधन कहा जाता है।

### कोर्स का नाम : बीकॉम मैनेजमेंट

जिन विद्यार्थियों की रुचि प्रबन्धन के कार्य में है वे इस कोर्स की पढ़ाई कर सकते हैं। यह पाठ्यक्रम करने के बाद विद्यार्थियों को कई संस्थाओं, संगठनों, व्यावसायिक क्षेत्रों में अच्छे पदों पर कार्य करने के अवसर प्राप्त होते हैं। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थी संगठन के प्रबन्धन, प्रबन्धन के सिद्धांत, जॉब एनिलिसिस (नौकरी विश्लेषण), अन्तर्राष्ट्रीय मानव संसाधन, रोजगार कानून और कर्मचारी सम्बन्धों के क्षेत्र सम्बन्धी अध्ययन करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीकॉम मैनेजमेंट |
| **कोर्स के बारे में** | यह तीन वर्ष का स्नातक कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • कोर्स में प्रवेश मेरिट-लिस्ट या प्रवेश-परीक्षा के आधार पर होता है।<br>• जो छात्र विज्ञान विषय से बारहवीं की परीक्षा किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड से या समकक्ष परीक्षा 65 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हों वे इस पाठ्यक्रम के लिए पात्र होते हैं।) |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर<br>• डॉक्टर हरिसिंह गौर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • एनआईएमएस विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान<br>• आईएसबीएम, चेन्नई, तमिलनाडुब<br>• हिमालय विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स से स्नातक की डिग्री लेने के बाद छात्र मानव संसाधन प्रबन्धन, परामर्श, विपणन उद्योगों, उद्यमशीलता, सामान्य प्रबन्धन, संचालन प्रबन्धन जैसे प्रमुख क्षेत्रों में काम कर सकते हैं। ये स्वयं का उद्यम भी शुरू सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ बिज़नेस मैनेजमेंट (बीबीएम)

निर्णयात्मक क्षमता एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण रखने वाले जो छात्र मैनेजमेंट के क्षेत्र में जाना चाहते हैं और जिनके पास परियोजना प्रबन्धन तथा संवाद कौशल है या जो शोध कार्य में रुचि रखते हैं वे छात्र बैचलर ऑफबिजनेस मैनेजमेंट कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं। इसके अन्तर्गत छात्र बिजनेस के व्यावहारिक और सैद्धांतिक पहलुओं, प्रबन्धन और नेतृत्व कौशल व तार्किक विश्लेषण कौशल का अध्ययन करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ बिज़नेस मैनेजमेंट (बीबीएम) |
| **कोर्स के बारे में** | बैचलर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट (बीबीएम) 3 वर्षीय कोर्स हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से बारहवीं में कम से कम 45 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हों।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षा भी लेते हैं। |

| | |
|---|---|
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सावित्री बाई फुले विश्वविद्यालय, पूणे, महाराष्ट्र<br>• बैंगलोर विश्वविद्यालय, बेंगलुरू, कर्नाटका<br>• मुम्बई यूनिवर्सिटी, मुम्बई, महाराष्ट्र |
| **कोर्स के बाद अवसर** | यह कोर्स करने के बाद विद्यार्थी सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं, कॉरपोरेट जगत में या निजी फर्म में स्मार्ट प्रोफेशनल्स के रूप में कार्य कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ बिज़नेस मैनेजमेंट स्टडीज (बीबीएस)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को मानव संसाधन प्रबन्धन, प्रबन्धन में अनुशासन की बुनियादी अवधारणाओं के बारे में व्यवहारिक ज्ञान के माध्यम से शिक्षित करना तथा विद्यार्थियों को भावी प्रबन्धकीय भूमिकाओं के लिए तैयार करना है। इसके अन्तर्गत व्यावसायिक एवं कॉर्पोरेट फर्मों में उपयोग किए जाने वाले प्रबन्धन सम्बन्धी कामों का अध्ययन शामिल है, साथ ही मानव संसाधन में शिक्षा की बुनियादी अवधारणाएँ जैसे कि कर्मचारी प्रतिधारण (रिटेंशन), श्रम सम्बन्ध (लेबर रिलेशन) और इसी तरह की अन्य समस्याओं को हल करना है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (बीएमएस) |
| **कोर्स के बारे में** | बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • छात्र कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय से बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण हों।<br>• कुछ संस्थानों द्वारा प्रवेश परीक्षा में मेरिट लिस्ट के आधार पर विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • जागरण लेकसिटी यूनिवर्सिटी, भोपाल<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • एनआईएमएस विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान<br>• आजाद डिग्री कॉलेज, लखनऊ, उत्तरप्रदेश |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | प्रबन्धन अध्ययन के बाद विद्यार्थियों के सम्मुख विभिन्न व्यापारिक क्षेत्रों, व्यवसाय संगठनों, कॉरपोरेट घरानों, शैक्षिक संस्थानों, बैंकों आदि में विपणन, मानव संसाधन, वित्त आदि से संबंधित कॅरियर बनाने के व्यापक अवसर हैं। |

## कोर्स का नाम : बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन

व्यवसाय, नेतृत्व, प्रबन्धन और संचार कौशल में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन एक अच्छा विकल्प है। इस कोर्स के बाद विद्यार्थी आगे एमबीए की पढ़ाई के लिए भी प्रयास कर सकते हैं।

पाठ्यक्रम के अन्तर्गत केस स्टडी, परियोजना प्रस्तुति, औद्योगिक यात्राओं और उद्योगों के विशेषज्ञों से बातचीत के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाता है जो उन्हें सीधे कॉरपोरेट जगत में प्रवेश के अवसर प्रदान करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीबीए (बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन) |
| **कोर्स के बारे में** | • यह 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है।<br>• दूरस्थ शिक्षा या पत्राचार के माध्यम से इसे 5 वर्ष (अधिकतम) की अवधि में भी किया जा सकता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय में कक्षा बारहवीं में 50 से 60 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हों।<br>• कुछ संस्थानों द्वारा प्रवेश परीक्षा में मेरिट लिस्ट के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर<br>• डॉक्टर हरिसिंह गौर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• आई.पी. विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तरप्रदेश |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | बीबीए कोर्स करने के बाद विद्यार्थी विज्ञापन जगत, शैक्षणिक संस्थानों, बैंकिंग, परामर्श, विदेशी मुद्रा, होटल, प्रबन्धन, विनिर्माण उद्योग और विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी सेवाओं के क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं।<br><br>इस कोर्स को करने के बाद कुछ प्रमुख जॉब प्रोफाइल इस प्रकार हैः वित्तीय विश्लेषक, व्यवसाय विकास कार्यकारी, परियोजना प्रबन्धक, तथ्य विश्लेषक, मानव संसाधन (मानव संसाधन) प्रबन्धक, विपणन कार्यकारी और संचालन टीम लीडर। |

# होटल मैनेजमेंट

किसी भी होटल से जुड़े सभी कार्यों को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करना व उनकी देखरेख करना होटल मैनेजमेंट के अंतर्गत आता है। यह ऐसा सेक्टर है जिसमें बहुत तेजी से वृद्धि हो रही है। इसे करने के बाद स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कंपनियों में नौकरी के अवसर उपलब्ध हैं।

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ होटल मैनेजमेंट

बैचलर ऑफ होटल मैनेजमेंट कोर्स में विद्यार्थियों को आतिथ्य क्षेत्र (हॉस्पिटैलिटी) के मूल सिद्धांतों और विभिन्न पहलुओं, समग्र रूप में आतिथ्य (हॉस्पिटैलिटी) उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों, होटल प्रबन्धन, साथ ही कुछ अन्य क्षेत्रों जैसे मार्केटिंग, बिक्री, पब्लिक रिलेशन इत्यादि के बारे में पढ़ाया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ होटल मैनेजमेंट (बीएचएम) |
| **कोर्स के बारे में** | बैचलर ऑफ होटल मैनेजमेंट या बीएचएम एक स्नातक पाठ्यक्रम है। कुछ संस्थानों में यह कोर्स 3 वर्ष का होता है जबकि कुछ संस्थानों में इसी कोर्स की अवधि 4 वर्ष भी होती है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय से बारहवीं कक्षा की परीक्षा कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हों।<br>• कुछ संस्थान इस कोर्स में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षाओं का आयोजन भी करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • होटल प्रबन्धन संस्थान, भोपाल |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, औरंगाबादब, महाराष्ट्र<br>• इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | बैचलर इन होटल मैनेजमेंट में डिग्री लेने वाले विद्यार्थियों के लिए निजी और सार्वजनिक दोनों ही क्षेत्रों में करियर की संभावनाएँ बहुत बढ़ जाती हैं। इस पाठ्यक्रम को करने के बाद कुछ जॉब प्रोफाइल हैं जिनका पदनाम होटल प्रबन्धक, खाद्य प्रबन्धक होटल के लिए सलाहकार, रेस्तरां प्रबन्धक इत्यादि हैं। |

# हॉस्पिटल मैनेजमेंट

अस्पताल के प्रबंधन में मैनेजमेंट के सिद्धांतों के प्रयोग को हॉस्पिटल मैनेजमेंट कहा जाता है। इसके अंतर्गत अस्पताल के प्रबंधन से जुड़ी योजना बनाना, कर्मचारियों की नियुक्ति, अस्पताल के सुचारू संचालन के लिए किया गया प्रबंधन आदि शामिल हैं।

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन

बैचलर इन हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन (BHA) कोर्स का उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा प्रोफेशनल्स को तैयार करना है। यह कोर्स विद्यार्थियों को स्वास्थ्य सेवा उद्योग की समीक्षा और मूल्यांकन करना, मानव, वित्तीय, भौतिक संसाधनों की योजना और प्रबन्धन के तरीके आदि को समझने और बदलाव करने के लिए दृष्टिकोण विकसित करता है।

विद्यार्थियों को नौकरी का अनुभव करने के लिए इंटर्नशीप करवाई जाती है जिससे वे कोर्स के सभी आयामों को समझ सकें। यह कोर्स विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से संवाद करने, समूहों में काम करने, प्राथमिकताएँ निर्धारित करने और प्रभावी ढंग से कार्यभार का प्रबन्धन करने में दक्ष बनाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन |
| **कोर्स के बारे में** | बैचलर ऑफ हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन 3 वर्षीय पूर्णकालिक स्नातक पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से जीव विज्ञान में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों के साथ कक्षा बारहवीं उत्तीर्ण हों।<br>• अलग-अलग संस्थाएँ इस पाठ्यक्रम में प्रवेश देने के लिए प्रवेश परीक्षाओं का भी आयोजन करती हैं। |

| | |
|---|---|
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • दयानंद सागर कॉलेज ऑफ डेंटल साइंस, बेंगलुरू, कर्नाटका<br>• कस्तुरी राम ग्लोबल इंस्टिट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, नईदिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स से स्नातक करने के बाद अस्पतालों में निम्नलिखित पदों पर कार्य कर सकते हैं -<br>अस्पताल प्रशासक (हॉस्पिटल एंड मिनिस्ट्रेटर), ब्लड बैंक प्रशासक, मानव संसाधन भर्ती, सामाजिक और सामुदायिक सेवा प्रबन्धक, अभ्यास प्रबन्धक, हॉस्पिटल सुपरिटेंडेंट, हेल्थकेयर सर्विस मैनेजर, मेडिकल सर्विस मैनेजर, हेल्थकेयर एडमिनिस्ट्रेटर, हेल्थ इंफॉर्मेशन मैनेजर, सार्वजनिक देखभाल स्वास्थ्य सुविधा के लिए प्रशासक आदि हैं। |

लॉ
LAW
LAW
INDIA

# विधि (लॉ)

हर देश की अपनी कानून व्यवस्था होती है। कानून या विधि का मतलब है मनुष्य के व्यवहार को नियंत्रित और संचालित करने वाले नियमों, हिदायतों, पाबंदियों और हकों की संहिता। कानून में अपने अनुपालन की एक नैतिक बाध्यता निहित है, जिसका पालन न करने पर न्यायपालिका द्वारा दण्ड दिया जाता है।

कानून की एक उल्लेखनीय भूमिका समाज को संगठित शैली में चलाने के लिए नागरिकों को उनके अधिकार और जिम्मेदारियों से अवगत कराकर उन्हें कानून के बारे में शिक्षित करने की भी मानी जाती है। कानून केवल दण्ड ही नहीं देता, वह व्यक्तियों या पक्षों के बीच अनुबंध करने, विवाह, उत्तराधिकार, लाभों के वितरण और संस्थाओं को संचालित करने के नियम भी मुहैया कराता है। कानून समाज में नैतिकता की पुष्टि की भूमिका भी निभाता है। कानून से संबंधित इसी प्रकार के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कानून के कोर्स के अन्तर्गत कराया जाता है।

### अब आरुषि मुकदमे लड़ती है

आरुषि एक रूढ़िवादी परिवार में पली-बढ़ी लड़की थी, जहाँ लड़कियों पर कई तरह की पाबंदियाँ होती हैं। यही कारण है कि आरुषि का कानून की पढ़ाई करने का निर्णय सभी को चौंकाने वाला था। उससे भी ज्यादा चौंकाने वाली बात थी आरुषि का यह कहना कि वह न्याय पालिका में लिटिगेशन मतलब मुकदमे लेगी और लड़ेगी। अपना सपना पूरा करने के लिए आरुषि ने मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी, उदयपुर से पाँच वर्ष का बीए, एलएलबी का कोर्स किया।

आरुषि ने पढ़ाई पूरी करने के बाद अलग-अलग जगह पर इंटर्नशिप की, कई कानूनी गतिविधियों में भाग लिया और बहुत कुछ सीखा। फिर आरुषि दिल्ली की एक फर्म में नौकरी करने लगी। आरुषि का सपना है कि वो वापस अपने गृहनगर जाकर वहाँ के लोगों के लिए काम करे। उन्हें कानूनी सहायता दे। उसका कहना है कि इस कोर्स को करने के बाद आप एक आम आदमी से ऊपर उठकर उस कानून के जानकार बन जाते हैं, जिसका पूरा देश पालन करता है।

# वकालत (लॉ)

कक्षा 10+2 के बाद लॉ की पढ़ाई शुरू की जा सकती है। वकील बनने के दो कोर्सेस हैं- पहला, इन्टीग्रेटेड एलएलबी कोर्स जो कि 5 साल का होता है। इसमें कॉलेजों में 5 वर्षीय एलएलबी कोर्स कराया जाता है, जिसमें एलएलबी के साथ बीए/बीकॉम कोई भी विषय लेकर एलएलबी ऑनर्स किया जा सकता है और दूसरा, एलएलबी कोर्स 3 साल का होता है।

एंट्रेस एग्जाम में बैठने के लिए कक्षा 10+2 में कम से कम 55 प्रतिशत अंक होने चाहिए। देश के विभिन्न 'नेशनल लॉ स्कूल्स' में एडमिशन 'कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट' (सीएलएटी) के माध्यम से होता है। अन्य संस्थान लॉ कोर्सेस के लिए अलग-अलग प्रवेश परीक्षाएं आयोजित करते हैं।

संयुक्त विधि प्रवेश परीक्षा (CLAT/क्लेट) राष्ट्रीय विधि विद्यालयों तथा विधि विश्वविद्यालयों के विभिन्न स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों (एलएलबी एवं एलएलएम) में प्रवेश के लिए भारत भर में स्थापित किए गए 15 स्कूल/विश्वविद्यालयों द्वारा बारी-बारी से आयोजित की जाती है।

## कोर्स का नाम : एलएलबी (ऑनर्स)/ इंटीग्रेटेड एलएलबी

इसमें एलएलबी के साथ बीए/बीएससी/बीकॉम कोई भी विषय लेकर एलएलबी ऑनर्स किया जा सकता है। दूसरा एलएलबी कोर्स 3 वर्ष का होता है। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत एडमिनिस्ट्रेटिव लॉ, कॉन्स्टिट्यूशनल लॉ, फैमिली लॉ, इंटरनेशनल लॉ, साइबर लॉ, लेबर लॉ, पेटेंट लॉ, एनवायरमेंटल लॉ, टैक्स लॉ आदि के बारे में पढ़ाया जाता है। इस कोर्स से विद्यार्थियों में इन गुणों का विकास होता है - बेहतर संवाद कौशल, अच्छी याददाश्त, त्वरित प्रतिक्रिया देने का सामर्थ्य, तार्किकता और चीजों का विश्लेषण करने में दक्षता, ध्यान से बातों को सुनने का धैर्य, दायरों से पार जाकर सोचने का हुनर, कानूनी पहलुओं की बेहतर जानकारी व समर्पण के साथ कड़ी मेहनत करने का जज्बा आदि।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | इंटीग्रेटेड एलएलबी |
| **कोर्स के बारे में** | यह 5 वर्षीय एलएलबी कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी बीए, एलएलबी (ऑनर्स) के लिए किसी भी विषय से कक्षा बारहवीं में 55 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• बीएससी, एलएलबी (ऑनर्स) के लिए विज्ञान से कक्षा बारहवीं में 55 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• बीकॉम, एलएलबी के लिए कॉमर्स या विज्ञान विषय से कक्षा बारहवीं में 55 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण हो।<br>• कुछ संस्थान प्रवेश परीक्षा भी आयोजित करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर सेंट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर<br>• नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, भोपाल |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी, बेंगलुरू, कर्नाटक<br>• गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, गांधीनगर, गुजरात<br>• सिंबायोसिस सोसायटीज लॉ कॉलेज, पुणे, महाराष्ट्र<br>• नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, जोधपुर, राजस्थान<br>• नल्सर यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, हैदराबाद, आंध्रप्रदेश<br>• फैकल्टी ऑफ लॉ, यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली<br>• बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी, उत्तरप्रदेश<br>• नेशनल यूनिवसिर्टी ऑफ ज्यूरिस्डिकल साइंसेज, कोलकाता, पश्चिम बंगाल<br>• अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश<br>• गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | कानून के पेशेवर अपने क्लाइंट के लिए वकील और सलाहकार (एडवाइजर) की भूमिका निभाते हैं। कोर्ट में अपनी प्रेक्टिस के अलावा, केन्द्र व राज्य सरकार की जॉब्स, टीचिंग, कार्पोरेट कंपनियों में लीगल एडवाइजर के रूप में भी करियर बनाया जा सकता है। इन दिनों लीगल एक्सपर्ट की मांग न केवल भारत में बल्कि दुनिया के दूसरे देशों में भी लगातार बढ़ रही है। |

# पैरा लीगल

मुख्यतः पैरा लीगल का कार्य वकीलों की सहायता करना है। वे केस तैयार करने, केस के संदर्भ में, शोधकार्य करने या आवश्यक पत्र तैयार करने आदि कार्य करके वकीलों की सहायता करते हैं। पैरा लीगल अपना कार्य केवल किसी वकील के नेतृत्व में ही कर सकते हैं, स्वतंत्र रूप से नहीं। वे कोई भी ऐसी जगह कार्य कर सकते हैं जहाँ किसी भी प्रकार के लॉ से जुड़े काम होते हैं। यह करियर भारत में बहुत नया है, पर प्रचलन में आ रहा है।

## कोर्स का नाम : पैरा लीगल प्रैक्टिस में डिप्लोमा (डीआईपीपी)

जिन विद्यार्थियों की रुचि कानून के क्षेत्र में होती है वे इस कम अवधि के पैरा लीगल डिप्लोमा कोर्स को करके कानूनी सहायक बन सकते हैं। इस कोर्स से विद्यार्थियों में कानून की कार्यात्मक समझ विकसित हो जाती है और वे वकील और कानूनी प्रक्रियाओं से जूझने वाले व्यक्तियों को कानूनी सहायता प्रदान करने की पहल कर सकते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | पैरा लीगल प्रैक्टिस में डिप्लोमा (डीआईपीपी) |
| **कोर्स के बारे में** | पैरा लीगल प्रैक्टिस में डिप्लोमा की न्यूनतम अवधि 1 वर्ष है और कोर्स पूरा करने की अधिकतम अवधि 3 वर्ष है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | पैरा लीगल प्रैक्टिस कोर्स में डिप्लोमा करने के लिए मूल पात्रता मानदण्ड 10+2 या उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में उत्तीर्ण डिग्री या किसी मान्यता प्राप्त कॉलेज या विश्वविद्यालय से समकक्ष योग्यता है। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • इग्नू, भोपाल (पत्राचार) |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस डिप्लोमा कोर्स के बाद छात्र सामान्य कानूनी सेवाओं के साथ अपना करियर शुरू कर सकते हैं। उन्हें कानूनी सलाह के लिए काम पर रखा जा सकता है। वे शोध कार्य और लिपिक कार्य के साथ अपना करियर शुरू कर सकते हैं। अनुभव अर्जित करने के बाद वे ग्राहकों से सीधे निपटने और अदालतों में उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए पर्याप्त विशेषज्ञता हासिल कर सकते हैं। पैरा लीगल प्रेक्टिस में डिप्लोमा के साथ छात्र किसी भी लॉ फर्म से लेकर निजी कंपनियों तक कहीं भी रोजगार पा सकते हैं। |

## बच्चों से जुड़े कानून

बाल अधिकार कानून बच्चों की सुरक्षा, उनके कल्याण और उन्हें उनके व्यक्तिगत अधिकार दिलाने के लिए होते हैं। इसके अंतर्गत बच्चों के मानव अधिकार जैसे- बच्चों को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक दुर्व्यवहार से विशेष संरक्षण, उनकी देखभाल और पोषण संबंधी अधिकार, उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और उनकी विशेष आवश्यकताओं आदि से संबंधित अधिकार शामिल हैं।

बाल संरक्षण में बच्चों के अवैध व्यापार, बालश्रम और शोषण आदि के लिए किशोर न्याय प्रणाली (Juvenile Justice System) बनाई गई है।

### कोर्स का नाम : बैचलर्स ऑफ वोकेशनल एजुकेशन इन चाइल्ड प्रोटेक्शन

इस कार्यक्रम का लक्ष्य दैनिक जीवन में व्यक्तियों को प्रभावित करने वाले कानूनों के सम्बन्ध में विद्यार्थियों को कानूनी रूप से सक्षम बनाने हेतु प्रारंभिक ज्ञान और कौशल विकसित करना है।

जो छात्र इस क्षेत्र में अपना करियर बनाने में रुचि रखते हैं, वे बाल संरक्षण कानून का अध्ययन कर के बच्चों और उनके परिवारों को उनके अधिकारो के संबंध में न्याय दिलाने में सक्षम हो पाएंगे।

इस कोर्स के अन्तर्गत बालकों और उनके बचपन को समझना, बाल संरक्षण के लिए बाल अधिकार नीति और विधान, बाल संरक्षण, भारत में किशोर न्याय प्रणाली, सुविधा समूह और सामुदायिक भागीदारी, बाल विकास, व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास, पोषण और सुरक्षा, विशेष जरूरतों संबंधी विषय माता-पिता और समुदाय के साथ भागीदारी, संगठन और प्रबन्धन संबंधी विषय पढ़ाए जाते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर्स ऑफ वोकेशनल एजुकेशन इन चाइल्ड प्रोटेक्शन |
| **कोर्स के बारे में** | यह तीन वर्ष का कोर्स है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | विद्यार्थी 10+2 या उच्चतर माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण हो। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • इन्दौर स्कूल ऑफ सोशल वर्क, इन्दौर (TISS-SVE के सहयोग से संचालित) |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • सीनी (CINI) Child Protection Resource Center<br>• TISS टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंस, मुम्बई, महाराष्ट्र |
| **कोर्स के बाद अवसर** | सामान्य कानूनी सेवाओं के साथ अपना करियर शुरू कर सकते हैं। एनजीओ में कार्य कर सकते हैं। |

* * *

शिक्षा
लाइब्रेरी साइंस
शारीरिक शिक्षा
प्रारंभिक
बाल्यावस्था
देखभाल एवं शिक्षण
शिक्षण

# शिक्षा (एजुकेशन)

व्यक्ति जन्म लेने से लेकर आजीवन कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। कुछ ज्ञान उसे माँ-पिता, गुरुजनों, उसके आसपास के लोगों द्वारा दिया जाता है और कुछ वह अपने अनुभवों से सीखता है। ज्ञान, जीवन कौशल, मूल्यों, विश्वासों और आदतों के अधिग्रहण की प्रक्रिया को शिक्षा कहा जाता है। शालाओं, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, ट्रेनिंग स्थलों आदि पर दी जाने वाली शिक्षा औपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत आती है। शिक्षा के विभिन्न क्षेत्र और भिन्न उद्देश्य होते हैं। ये उद्देश्य विद्यार्थी, कोर्स और शिक्षा संस्थानों पर निर्भर करते हैं। इस अध्याय में शिक्षा कार्यक्षेत्र से जुड़े कुछ कोर्सेस पर चर्चा की गई है।

इनके अलावा कई ऐसे क्षेत्र हैं जैसे मनोविज्ञान, परफॉर्मिंग आर्ट्स, भाषा शास्त्र, इंजीनियरिंग, भूगोल, विज्ञान, वाणिज्य आदि जिनका उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में किया जाता है।

## पंकज की कहानी : पंकज की जुबानी

'जब मैं 8वीं कक्षा में पढ़ता था, तभी मैंने तय कर लिया था कि मुझे खेलकूद (स्पोर्ट्स) के क्षेत्र में करियर बनाना है। अपने सपने को साकार करने के लिए मैं एक टूर्नामेंट खेलने खुरई गया था, परन्तु द्वितीय स्थान पर रह जाने के कारण नेशनल टीम में मेरा चयन नहीं हो सका। बस, उसी दिन मैंने तय कर लिया कि मुझे अपनी रुचि के क्षेत्र में अपना करियर बनाने के लिए कोई न कोई दूसरी राह खोजनी होगी। कक्षा 12वीं उत्तीर्ण करने के बाद मैंने देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के शारीरिक शिक्षा विभाग (फिज़िकल एजुकेशन) में स्नातक कोर्स हेतु दाखिला लिया। निश्चित ही उस दौरान कड़ी मेहनत और अनुशासन में रहना पड़ा। पर मैंने हिम्मत नहीं हारी और दृढ़ निश्चय करके उत्तरोत्तर अपना मनोबल बनाए रखा। प्रैक्टिकल क्लासेस के दौरान बच्चों को प्रशिक्षित करते समय मैंने संकोची स्वभाव और झिझक पर विजय पाई। अब मैं गर्व से कह सकता हूँ कि विश्वविद्यालय से शारीरिक शिक्षा में स्नातकोत्तर डिग्री पाने के बाद पिछले दो वर्षों से मैं फिजिकल इंस्ट्रक्टर बनकर एक अनुशासन-प्रिय कोच के रूप में कार्यरत हूँ। आज मैं 300 बच्चों की क्लास लेता हूँ, उन्हें अपने अनुभव बाँटता हूँ, उन्हें सिखाता हूँ कि कैसे वे अपने शरीर को चुस्त-दुरुस्त स्वस्थ और क्रियाशील रखें। आज मेरे द्वारा प्रशिक्षित बच्चे भी अनुशासित हैं, राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं और सम्मान पा रहे हैं। बच्चों को स्पोर्ट्स के लिए प्रशिक्षित करते हुए मैं गौरव महसूस करता हूँ क्योंकि हर बच्चे में मैं अपने सपने साकार होते हुए देखता हूँ।'

# शारीरिक शिक्षा (फिज़िकल एजुकेशन)

शारीरिक शिक्षा से तात्पर्य है शरीर की देखभाल और विकास। इसके अन्तर्गत बुनियादी व्यायाम से लेकर विभिन्न खेलों का प्रशिक्षण आता है। आमतौर पर यह विषय अधिकतर विद्यार्थियों का पसंदीदा विषय होता है। इसके साथ ही यह विषय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शासन खेलों के विकास और विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य की देखभाल पर अब बहुत ध्यान दे रहा है। सभी शालाओं में खेलों को भी महत्व दिया जा रहा है। इसलिए, शारीरिक शिक्षा में करियर बनाने हेतु कई विकल्प उपलब्ध हैं ।

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ फिज़िकल एजुकेशन

यह एक स्नातक पाठ्यक्रम है, जो विद्यार्थी को शारीरिक शिक्षा के सिद्धांतों से अवगत कराता है, साथ ही इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत उन्हें शारीरिक शिक्षा प्रदान करने का कौशल विकसित करने में भी मदद मिलती है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ फिज़िकल एजुकेशन (BPEd) |
| **कोर्स के बारे में** | • यदि कक्षा 12वीं के बाद किया जाए,तो यह 3 वर्ष का स्नातक पाठ्यक्रम है।<br>• कुछ विश्वविद्यालय में यह पाठ्यक्रम 2 वर्षों / 4 वर्षों की अवधि का है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • कक्षा 12वीं उत्तीर्ण।<br>• कुछ विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा लेते हैं।<br>• यह कोर्स 2 वर्षों में करने के लिए विद्यार्थी के पास स्नातक डिग्री होने के साथ-साथ शासन से मान्यता-प्राप्त जिला/राष्ट्र/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता का प्रमाण पत्र होना अनिवार्य है अथवा यदि विद्यार्थी स्नातक परीक्षा में 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण होने के साथ इंटर-कॉलेज/ज़ोनल/जिला स्तरीय खेल प्रतियोगिता में 1st, 2nd या 3rd आए हों तो भी वे द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में दाखिला ले सकते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर<br>• बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल<br>• जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर<br>• लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान (LNIPE), ग्वालियर |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान (LNIPE) NERC, गुवाहाटी, आसाम<br>• भारती विद्यापीठ विश्वविद्यालय, पुणे, महाराष्ट्र<br>• शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र<br>• पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स के बाद विद्यार्थी :<br>• किसी भी शैक्षणिक संस्थान में या स्पोर्ट्स अकादमी में शारीरिक शिक्षा के शिक्षक या कोच के रूप में कार्य कर सकते हैं।<br>• इस कोर्स के बाद विद्यार्थी किसी एक खेल या संबंधित विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के स्नातकोत्तर और डिप्लोमा कोर्स भी कर सकते हैं। |

## प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

जन्म से लेकर 8 वर्ष तक की उम्र को प्रारंभिक बाल्यावस्था कहा जाता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का अर्थ है, इस उम्र के बच्चों को दी गई शिक्षा और देखभाल। यह न केवल बच्चों को शालेय शिक्षा के लिए तैयार करती है, वरन् उनके शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास की नींव भी रखती है। यह शिक्षा का एक बहुत ही अहम् अंग है। इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए विद्यार्थी 12वीं के बाद 2 प्रकार के कोर्स कर सकते हैं- डिग्री और डिप्लोमा।

### कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन

यह शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु आयोजित डिप्लोमा कोर्स है अर्थात् विद्यार्थी इस कोर्स को पूर्ण करने के बाद नर्सरी शिक्षक के रूप में कार्य कर सकते हैं। यह कोर्स बच्चों के साथ कार्य करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करता है। इस दौरान विद्यार्थी सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्राप्त करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन |
| **कोर्स के बारे में** | यह एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम है, जिसे 2 सेमेस्टर में बाँटा गया है। इसे रेग्युलर और डिस्टेंस, दोनों तरीकों से किया जा सकता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • कक्षा 12वीं में किसी भी संकाय से 50 प्रतिशत से अधिक अंकों से उत्तीर्ण।<br>• कुछ विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा भी संचालित करते हैं। |

| | |
|---|---|
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • प्रदेश स्थित IGNOU के विभिन्न सेंटर्स (डिस्टेंस कोर्स)।<br>• रेग्युलर कोर्स के लिए प्रदेश में कोई शासकीय कॉलेज नहीं है।<br>• विभिन्न प्रायवेट कॉलेज यह कोर्स संचालित करते हैं। |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • मुम्बई यूनिवर्सिटी, मुम्बई, महाराष्ट्र |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स के बाद विद्यार्थी :<br>• विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में नर्सरी शिक्षक के रूप में कार्य कर सकते हैं।<br>• आँगनवाड़ी और शिशुगृह में भी कार्य कर सकते हैं।<br>• उन NGO में कार्य कर सकते हैं जो प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल या शिक्षा से जुड़े कार्य करते हैं। |

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ वोकेशनल स्टडीज इन अर्ली चाइल्ड डेवलपमेंट/बैचलर ऑफ वोकेशनल स्टडीज इन अर्ली चाइल्डहुड सेंटर मैनेजमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप

बैचलर ऑफ वोकेशनल स्टडीज कोर्स इस प्रकार विकसित किए गए हैं कि ये पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के कौशल को विकसित करने पर अधिक ध्यान देते हैं। साथ ही ऐसे कोर्सेस में यह प्रावधान भी रहता है कि शुरुआत में कुछ सेमेस्टर करके डिप्लोमा ले सकते हैं और यदि इन्हें पूर्णकालिक करें तो स्नातक स्तर की डिग्री मिल सकती है।

बैचलर ऑफ वोकेशनल स्टडीज इन अर्ली चाइल्ड डेवलपमेंट और बैचलर ऑफ वोकेशनल स्टडीज इन अर्ली चाइल्डहुड सेंटर मैनेजमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप कोर्स विद्यार्थी को प्रारंभिक बाल्यावस्था के लिए एक कुशल शिक्षक और देखभालकर्ता के रूप में तैयार करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | • बैचलर ऑफ वोकेशनल स्टडीज इन अर्ली चाइल्ड डेवलपमेंट<br>• बैचलर ऑफ वोकेशनल स्टडीज इन अर्ली चाइल्डहुड सेंटर मैनेजमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप |
| **कोर्स के बारे में** | • ये 3 वर्षीय पाठ्यक्रम हैं, जिन्हें 6 सेमेस्टर में बांटा गया है।<br>• पहले 2 सेमेस्टर पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी को डिप्लोमा मिल सकता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | कक्षा 12वीं में किसी भी संकाय से उत्तीर्ण। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | कोई भी शासकीय कॉलेज नहीं है। |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • TISS-SVE के सेंटर भारत में विभिन्न स्थानों पर स्थित<br>• अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स के बाद विद्यार्थी :<br>• विभिन्न डे-केयर सेंटर, चाइल्ड केयर सेंटर, आँगनवाड़ी आदि में कार्य कर सकते हैं।<br>• स्वयं का चाइल्ड केयर सेंटर भी खोल सकते हैं। |

## विशेष शिक्षा (स्पेशल एजुकेशन)

कई बच्चों में जन्मजात विकृति या विकलांगता होती है जिससे उन्हें दैनिक क्रियाकलापों व शिक्षा अर्जित करने में बाधाएं आती हैं। सभी को शिक्षा का समान अवसर व अधिकार मिल सके, इसलिए समावेशी शिक्षा के अवसर सरकार द्वारा उपलब्ध कराएं गए हैं जिसके अंतर्गत विकृति या विकलागंता से ग्रस्त बच्चों को विशेष सहायता प्रदान करना अनिवार्य है। इनके पुनर्वास व शिक्षा हेतु कुछ विशिष्ट तरीकों का उपयोग किया जाता है इस हेतु विशेष शिक्षक इन बच्चों के साथ कार्य करते हैं। यह सभी शालाओं एवं पुनर्वास केन्द्रों में कार्य करते हैं।

### कोर्स का नाम : बीएड स्पेशल एजुकेशन

यह एक स्नातक पाठ्यक्रम है, जो विद्यार्थियों को विशेष बच्चों की आवश्यकताओं से अवगत कराते हुए उन्हें शिक्षित करने के विभिन्न तरीकों की समझ और कौशल विकसित करने में सहायता करता है। विद्यार्थियों के लिए किसी ऐसे संस्थान से यह डिग्री प्राप्त करना अधिक उपयोगी होगा जो कि भारतीय पुनर्वास परिषद् (रिहैबिलिटेशन काउंसिल ऑफ इंडिया) से मान्यता प्राप्त हो।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीएड स्पेशल एजुकेशन |
| **कोर्स के बारे में** | यह 2 वर्षीय पाठ्यक्रम है, पाठ्यक्रम के दौरान विद्यार्थी स्वयं की विशेषज्ञता के विषय का चयन कर सकते हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | स्नातक डिग्री |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • CRC, भोपाल<br>• SS कॉलेज, भोपाल<br>• स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर<br>• अमर ज्योति स्कूल एंड रिहैबिलिटेशन सेंटर, ग्वालियर<br>• दिग्दर्शिका इंस्टिट्यूट ऑफ रिहैबिलिटेशन एंड रीसर्च, भोपाल |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • BEd कॉलेज फॉर स्पेशल एजुकेशन, पालमपुर, गुजरात<br>• राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, सिकंदराबाद, तेलंगाना<br>• CRC अहमदाबाद, गुजरात • जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली<br>• डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स के बाद विद्यार्थी एक विशेष शिक्षक के रूप में स्कूलों में, पुनर्वास केन्द्रों में कार्य कर सकते हैं। |

## शिक्षण

शिक्षक के रूप में कार्य करना एक ऐसा करियर विकल्प है जिसके बारे में सभी जानते हैं। कई विद्यार्थी शिक्षक बनने की आकांक्षा भी रखते हैं। शिक्षक प्राथमिक शालाओं से लेकर विश्वविद्यालयों में कार्य करते हैं। एक शिक्षक के रूप में कार्य करने के लिए आवश्यक है कि उन्हें अपने विषय का पर्याप्त ज्ञान हो जिसे वे सरलता से विद्यार्थियों से बाँट सकें। शिक्षक अक्सर विद्यार्थियों के रोल मॉडल होते हैं, अतः उनका व्यवहार और जीवन मूल्य सकारात्मक होना ज़रूरी है।

### कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ एजुकेशन (BEd)

यह एक प्रोफेशनल डिग्री है जो विद्यार्थियों को शिक्षा और शिक्षण से जुड़े सिद्धांत और कौशल प्रदान करती है। भारतीय नियम के अनुसार यह पाठ्यक्रम पूर्ण करने के बाद ही विद्यार्थी एक शिक्षक के रूप में कार्य कर सकते हैं। कई कॉलेजों में यह कोर्स स्नातक (BA/BSc) के साथ भी होता है। यह डिग्री कई कॉलेज देते हैं किन्तु विद्यार्थियों के लिए यह बेहतर होगा कि वे BEd राष्ट्रीय शिक्षा परिषद (NCTE) से मान्यता प्राप्त कॉलेज से ही यह कोर्स करें।

नोटः इस पाठ्यक्रम में NCTE द्वारा कई सुधार प्रस्तावित हैं जो आगामी वर्षों में पूरे देश के BEd कॉलेजों में लागू होंगे।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए बीएड, बीएससी बीएड |
| **कोर्स के बारे में** | • बीएड स्नातक स्तर की प्रोफेशनल डिग्री है। इसकी अवधि 2 वर्ष है।<br>• बीए बीएड और बीएससी बीएड 4 वर्षीय पाठ्यक्रम हैं। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • बी एड के लिए स्नातक में 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण<br>• बीए बीएड के लिए कक्षा 12वीं में आर्ट्स, विज्ञान या कॉमर्स संकाय से उत्तीर्ण। (प्रत्येक कॉलेज के न्यूनतम अंक भिन्न हैं) |

| | |
|---|---|
| | • बीएससी बीएड, के लिए कक्षा 12वीं में विज्ञान संकाय से उत्तीर्ण। (प्रत्येक कॉलेज के न्यूनतम अंक भिन्न हैं) |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • रीजनल इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन, भोपाल<br>• रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल<br>• मध्यप्रदेश भोज ओपन विश्वविद्यालय, भोपाल (डिस्टेंस कोर्स)<br>• गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, खण्डवा<br>• नीलकंठ शिक्षा महाविद्यालय, भिण्ड<br>• गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, छतरपुर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • मुम्बई यूनिवर्सिटी, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• सावित्रीबाई फूले विश्वविद्यालय, पुणे, महाराष्ट्र<br>• सेकेण्डरी ट्रेनिंग कॉलेज, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• डॉ.सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़<br>• भिलाई मैत्री कॉलेज, दुर्ग, छत्तीसगढ़<br>• नेताजी सुभाष कॉलेज, रायपुर, छत्तीसगढ़<br>• श्री गायत्री कॉलेज ऑफ एजुकेशन, अहमदाबाद, गुजरात<br>• गवर्नमेंट बीएड कॉलेज, सूरत, गुजरात |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी किसी भी शैक्षणिक संस्थान (स्कूल, कोचिंग आदि) में शिक्षक के रूप में कार्य कर सकते हैं। यदि वे और पढ़ना चाहें तो एमएड (स्नातकोत्तर) और विभिन्न डिप्लोमा कोर्स भी कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन (डीएलएड)

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है कि विद्यार्थी कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने से संबंधित सिद्धांतों की समझ और आवश्यक दृष्टिकोण और कौशल विकसित करें। इस कोर्स में सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान पर जोर दिया जाता है और कोर्स उत्तीर्ण करने के बाद विद्यार्थी इस आयु के बच्चों को पढ़ाने में निपुण हो जाते हैं। पहले इस पाठ्यक्रम को डिप्लोमा इन एजुकेशन, BTC आदि नामों से जाना जाता था किन्तु अब इन सभी कोर्स को डीएलएड के ही नाम से जाना जाता है। यह कोर्स राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE) से मान्यता प्राप्त कॉलेज से करना ज्यादा लाभदायी होगा ।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन (डीएलएड) |
| **कोर्स के बारे में** | यह 2 वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम है। इसे नियमित और डिस्टेंस दोनों माध्यमों से किया जा सकता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | किसी भी मान्यता बोर्ड से 12वीं में 50 प्रतिशत से अधिक अंकों से उत्तीर्ण। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग, अधिकतर जिलों में हैं ।<br>• गुलाबबाई यादव डी.एड. शिक्षण संस्थान, खरगोन<br>• इन्दौर महाविद्यालय, झाबुआ<br>• भोज ओपन विश्वविद्यालय, मध्यप्रदेश (डिस्टेंस)<br>• IGNOU (डिस्टेंस) |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग, अधिकतर जिलों में हैं ।<br>• गवर्नमेन्ट बेसिक ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट, रायपुर/ बिलासपुर/ राजनांदगांव, छत्तीसगढ़<br>• पंडित सुन्दरलाल शर्मा (ओपन) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी किसी भी शैक्षणिक संस्थान (स्कूल, कोचिंग आदि) में कक्षा 1 से लेकर 8 तक के शिक्षक के रूप में कार्य कर सकते हैं। |

## पुस्तकालय विज्ञान (लाइब्रेरी साइंस)

पुस्तकालय विज्ञान (Library Science या Library and Information Science) के अन्तर्गत पुस्तकालयों की कार्यप्रणाली से संबंधित विशिष्ट प्रविधियों, तकनीक एवं प्रक्रिया का अध्ययन एवं अध्यापन किया जाता है। इस क्षेत्र में बहुत सारे अवसर उपलब्ध हैं और आने वाले समय में अवसर और अधिक बढ़ने की संभावना है।

### कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ लाइब्रेरी एंड इनफॉर्मेशन साइंस/बैचलर ऑफ लाइब्रेरी साइंस

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को पुस्तकालय के प्रबन्धन, किताबों का सूचीकरण और वर्गीकरण आदि विषयों में निपुण बनाता है। यह कोर्स उन विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है, जिन्हें किताबों में रुचि है, जो बहुत सारी जानकारी व पुस्तकों का व्यवस्थित आयोजन कर सकते हैं और विभिन्न लोगों के साथ कार्य कर सकते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ लाइब्रेरी साइंस/बैचलर ऑफ लाइब्रेरी एंड इनफॉर्मेशन साइंस |
| **कोर्स के बारे में** | यह 1 वर्षीय पाठ्यक्रम है जो 2 सेमेस्टर में बँटा है। इसे नियमित (रेग्युलर) और डिस्टेंस माध्यम से किया जा सकता है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी विषय में स्नातक में 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • महारानी लक्ष्मीबाई गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, इन्दौर<br>• महारानी लक्ष्मीबाई गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, ग्वालियर<br>• विजयाराजे गवर्नमेंट गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, ग्वालियर<br>• सरोजिनी नायडू गवर्नमेंट गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • कमला नेहरू महाविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र<br>• VMOU, कोटा, राजस्थान<br>• गवर्नमेन्ट वी.वाई.टी. पी.जी. ऑटोनोमस कॉलेज, दुर्ग, छत्तीसगढ़ |
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस कोर्स को पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी इन स्थलों पर कार्य कर सकते हैं -<br>• शालाओं/विश्वविद्यालय/कॉलेज के पुस्तकालयों में<br>• पब्लिक लाइब्रेरी में,<br>• प्रायवेट पुस्तकालयों में,<br>• प्रायवेट कंपनियों में- जहाँ अधिक मात्रा में जानकारी को संग्रहित करने की आवश्यकता हो,<br>• न्यूज़ एजेंसी के पुस्तकालयों में,<br>• संग्रहालयों में आदि। |

क्रिमिनोलॉजी
राजनीति विज्ञान
सोशल साइंस
इतिहास
फिलोसफी
भाषाविज्ञान
एंथ्रोपोलॉजी
जियोग्राफी

# सामाजिक विज्ञान और मानव विज्ञान (ह्यूमेनिटीज़)

हम और हमारे आसपास के लोगों से मिलकर हमारा समाज बनता है। किसी भी समाज को उसकी संस्कृति, भाषा, साहित्य, धर्म, इतिहास, दर्शन एवं विभिन्न कलाओं के माध्यम से पढ़ना और समझना सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत आता है। इसके अंतर्गत मानव सभ्यता के विकास में भूमिका निभाने वाले सभी क्षेत्रों का अध्ययन किया जाता है। बहुत से कॉलेजों में इसे लिबरल आर्ट्स के रूप में भी पढ़ाया जाता है। आइये मिलते हैं मंजरी से जो मनोविज्ञान के क्षेत्र में लोगों को सहयोग करती है।

### परामर्शदाता मंजरी उपमन्यु - भोपाल

मंजरी उपमन्यु मनोविज्ञान क्षेत्र से स्नातक है। उसने इग्नू से दूरस्थ शिक्षा पद्धति के माध्यम से मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूर्ण की। पढ़ाई के साथ-साथ उसने कई जगह पर पार्ट टाइम नौकरी भी की। इसी दौरान मंजरी ने एक कॉलेज में पढ़ना शुरू किया। उसने देखा कि जब विद्यार्थी तनाव में रहता है तो उसका प्रदर्शन स्तर गिरता जाता है। मंजरी ने विद्यार्थियों की इसी समस्या को ध्यान में रखकर एक काउंसलिंग केन्द्र की शुरूआत की, जिसमें वह दृश्य-दृव्य पद्धति के माध्यम से काउंसलिंग करती थी और अनेक लोगों तक अपनी पहुँच बनाती थी। मंजरी का कहना है 'सामाजिक विज्ञान विषय समाज के विज्ञान से जुड़ा हुआ है। यदि कोई विद्यार्थी समाज की आवश्यकताओं और चुनौतियों को पहचान लेता है तो इस क्षेत्र में अपनी पहचान बनाना और आमदनी के रास्ते खोजना बहुत ही आसान काम है।'

## भाषा

भाषा किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे शक्तिशाली संचार साधनों में से एक है। वैश्वीकरण के इस युग में एक से अधिक भाषाओं के जानकार विद्यार्थियों के लिए बेहतर जॉब के अवसर हैं।

भाषा विज्ञान विद्यार्थियों को भाषा के प्रति अपना दृष्टिकोण विकसित करने, उसका वर्गीकरण करने और उसे जाँचने के लिए सक्षम बनाता है। साथ ही भाषा और बोली कैसे काम करती है इसे विस्तार से समझने के अवसर देता है। भाषा की पढ़ाई के दौरान छात्र देश व दुनिया में बोली जाने वाली विभिन्न बोलियों की संरचना, उपयोग, प्राप्ति और भाषा में संशोधन अथवा उन्नयन को समझते हैं।

## कोर्स का नाम : बीए भाषा शास्त्र (लिंग्विस्टिक)

इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत मानव बोली की तार्किक जाँच करने के साथ ही भाषा की संरचना, प्रकृति और बोली की विविधता के बारे में विस्तार से सिखाया जाता है। यह पाठ्यक्रम स्वर विज्ञान, ध्वनि विज्ञान, आकृति विज्ञान, शब्दार्थ, व्याकरण, समाज शास्त्र, साथ ही उसकी व्यावहारिकता को भी शामिल करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए भाषा शास्त्र (लिंग्विस्टिक) |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय से कक्षा बारहवीं में उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कुछ संस्थान प्रवेश परीक्षा और व्यक्तिगत साक्षात्कार का भी आयोजन करते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • डॉक्टर हरिसिंह गौर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, सागर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश<br>• लखनऊ यूनिवर्सिटी, लखनऊ, उत्तरप्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | भाषा शास्त्र से स्नातक करने के बाद विद्यार्थी प्रकाशन, शिक्षण और सरकारी सेवाओं, प्रूफ-रीडिंग, शब्दकोष-संकलन, संपादन, भाषण आदि क्षेत्र में अपना करियर बना सकते है। |

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ आर्ट्स इन लैंग्वेज

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को संचार कौशल, व्याकरण की संरचना, भाषा के लेखन, बोलने, सुनने की समझ, संवेदनशीलता के साथ भाषा कौशल को विकसित करता है। इस पाठ्यक्रम को पढ़ने हेतु विद्यार्थी को स्वयं के लिए एक भाषा का चयन करना पड़ता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ आर्ट्स इन लैंग्वेज |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय में कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कुछ संस्थान प्रवेश परीक्षा और व्यक्तिगत साक्षात्कार का भी आयोजन करते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, सागर |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश<br>• गुरू नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब<br>• दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान<br>• मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब |
| **कोर्स के बाद अवसर** | भाषाओं में स्नातक के बाद विद्यार्थियों के लिए विभिन्न करियर की संभावनाएँ बढ़ जाती है जैसे भाषा शिक्षक, अनुवादक, संपादक, भाषा प्रक्रिया के अधिकारी, दुभाषिया, भाषा अनुसंधान विश्लेषक, पर्यटन, होटल में जनसंपर्क अधिकारी आदि। कुछ वैश्विक संगठनों में भी यह पाठ्यक्रम करियर बनाने में मदद करता है जैसे संयुक्त राष्ट्र संगठन UNO विदेश मंत्रालय, भारतीय रिजर्व बैंक RBI आदि। कुछ व्यापार भी दुभाषियों को आकर्षक रोजगार और करियर देता है जैसे व्यापार फर्मों, ट्रेवल एजेंसियाँ आदि। |

## मनोविज्ञान

मनोविज्ञान का अर्थ 'मन और व्यवहार का अध्ययन है।' जिन विद्यार्थियों को व्यक्ति के मन, सोच, व्यक्तित्व, व्यवहार आदि समझने और लोगों की सहायता करने में रुचि है, वे मनोविज्ञान को अपने करियर क्षेत्र के रूप में चुन सकते हैं। प्रायः मनोविज्ञान का उपयोग शिक्षा स्वास्थ्य और खेल के क्षेत्र में किया जाता है।

### कोर्स का नाम : बीए मनोविज्ञान (साइकॉलॉजी)

यह पाठ्यक्रम मनोविज्ञान के मूल सिद्धान्त समझने में विद्यार्थी की सहायता करता है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को मनोविज्ञान से जुड़ी विभिन्न विशेषज्ञताओं और विभिन्न क्षेत्रों में उनके उपयोग से परिचित कराता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए मनोविज्ञान (साइकॉलॉजी) |
| **कोर्स के बारे में** | यह तीन वर्ष का स्नातक पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय में कक्षा बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण हो। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल |

| | |
|---|---|
| | • बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल,मप्र<br>• इग्नू, दिल्ली (दूरस्थ शिक्षा)<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, मप्र |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • जामिया मिलिया इस्मामिया, नई दिल्ली<br>• दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली<br>• अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश<br>• बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | यह कोर्स करने के बाद विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के स्नातकोत्तर और डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं। इसके बाद वे स्कूलों में परामर्शदाता के रुप में, थेरेपिस्ट के रूप में, करियर परामर्शदाता के रूप में, पुनर्वास के क्षेत्र में, विभिन्न अस्पतालों में, स्वास्थ्य के क्षेत्र में परामर्शदाता के रूप में आदि कार्य कर सकते हैं। |

## अर्थशास्त्र

धन के उत्पादन, उपभोग और हस्तान्तरण से संबंधित ज्ञान की शाखा को अर्थशास्त्र कहते हैं। इस क्षेत्र के उपयोग विस्तृत है। व्यक्ति दैनिक जीवन के कार्यों से लेकर रिर्जव बैंक ऑफ इण्डिया तक में इस क्षेत्र के ज्ञान का उपयोग करता है।

### कोर्स का नाम : बीए अर्थशास्त्र ( इकोनॉमिक्स )

बीए अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम को परिभाषा, प्रकृति, कार्यक्षेत्र, अवधारणा, उपयोगिता, उत्पादन, बाजार, एकाधिकार आदि जैसे क्षेत्रों में बांटकर विद्यार्थियों को शिक्षित किया जाता है साथ ही अर्थशास्त्र की विभिन्न अवधारणाओं और अर्थव्यवस्था की प्रक्रियाओं का विश्लेषण करने के गुणात्मक और मात्रात्मक दृष्टिकोण/कौशल को विकसित किया जाता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए अर्थशास्त्र (इकोनॉमिक्स) |
| **कोर्स के बारे में** | बी.ए. अर्थशास्त्र 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय में कम से कम 50 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण हो। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • डॉक्टर हरिसिंह गौर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल<br>• इग्नू, दिल्ली (दूरस्थ शिक्षा) |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तरप्रदेश<br>• बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी, उत्तरप्रदेश<br>• दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली<br>• सिम्बायोसिस स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, पुणे, महाराष्ट्र<br>• मद्रास स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स चैन्नई, तमिलनाडु |
| **कोर्स के बाद अवसर** | अर्थशास्त्र के स्नातकों के लिए कई सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में करियर के अवसर हैं। विद्यार्थी सरकारी क्षेत्र में, भारतीय आर्थिक सेवाओं, भारतीय रिजर्व बैंक, पीएसयू और अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में नौकरियों के लिए प्रयास कर सकते हैं। निजी क्षेत्र, निजी बैंकों, MNCs, BPO, व्यावसायिक पत्रिकाओं और समाचार पत्रों जैसे क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसर मिलते हैं। विद्यार्थी अर्थशास्त्र में बीए के साथ यदि एलएलबी करते हैं तो वे कॉर्पोरेट वकील के रूप में भी सफल करियर बना सकते हैं। |

# समाजशास्त्र ( सोशियोलॉजी )

समाजशास्त्र मानव समाज, सामाजिक रिश्ते, संस्कृति और सम्बन्धों का व्यवस्थित अध्ययन है, जो आर्थिक दृष्टिकोण, सामाजिक वर्ग, जाति और अन्य कारकों पर विचार करने की स्वतंत्रता देता है।

## कोर्स का नाम : बीए इन समाजशास्त्र ( सोशियोलॉजी )

पाठ्यक्रम में पढ़ाए जाने वाले मुख्य विषय एप्लाइड सोशियोलॉजी, तुलनात्मक समाजशास्त्र, सांस्कृतिक समाज शास्त्र, सामूहिक व्यवहार, अपराध व समुदाय और जनसांख्यिकी आदि हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए समाजशास्त्र ( सोशियोलॉजी ) |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय में कम से कम 50 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कुछ संस्थान प्रवेश परीक्षा और व्यक्तिगत साक्षात्कार का भी आयोजन करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल<br>• इग्नू, दिल्ली (दूरस्थ शिक्षा)<br>• जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर |

| | |
|---|---|
| | • डॉक्टर हरिसिंह गौर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, सागर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ, उत्तर प्रदेश<br>• बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश<br>• मुम्बई यूनिवर्सिटी, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली<br>• भारतीय सांख्यकीय संस्थान, बेंगलुरू, कर्नाटक |
| **कोर्स के बाद अवसर** | समाज शास्त्र में यह डिग्री व्यवसाय, उद्योग और संगठनों की दुनिया में प्रवेश करने के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करता है। अन्य करियर विकल्प हैं - शिक्षण, अनुसंधान, सामाजिक क्षेत्र, मीडिया और संचार अध्ययन, कानून, मानव संसाधन, मानव अधिकार संगठन आदि। |

# दर्शनशास्त्र (फिलॉसफी)

जिनकी रुचि भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन, विचारकों, मानव जीवन के बुनियादी सवालों, नैतिक और वैज्ञानिक तर्क, कला और समाज के बारे में जानने की है वे दर्शनशास्त्र का अध्ययन कर सकते हैं।

## कोर्स का नाम : बीए दर्शनशास्त्र (फिलॉसफी)

यह पाठ्यक्रम धर्म, आध्यात्मिकता, नैतिकता, जीवन और अस्तित्व से संबंधित विभिन्न विचारों के बारे में सोचने के साथ ही, उनके पीछे के तर्क की पड़ताल करने के अवसर देता है। यह विषय नए विचारकों का निर्माण करता है और विद्यार्थियों में तार्किक सोच के कौशल विकसित करने में मदद करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए दर्शनशास्त्र (फिलॉसफी) |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय में कम से कम 50 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कुछ संस्थान प्रवेश परीक्षा और व्यक्तिगत साक्षात्कार का भी आयोजन करते हैं। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, सागर |

| | |
|---|---|
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, उत्तर प्रदेश<br>• गुरू नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब<br>• दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान<br>• मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब |
| **कोर्स के बाद अवसर** | दर्शनशास्त्र में स्नातक के साथ मास्टर डिग्री के साथ शिक्षा पूरी करने के बाद विद्यार्थी मानव संसाधन, साक्षात्कारकर्ता, सलाहकार, सार्वजनिक सेवा, पत्रकारिता, अनुसंधान, कानून एवं शिक्षा जैसे क्षेत्रों में अपना करियर बना सकते हैं। |

## अपराध विज्ञान (क्रिमिनोलॉजी)

अपराध एवं अपराधियों के वैज्ञानिक अध्ययन को क्रिमिनोलॉजी कहा जाता है।

### कोर्स का नाम : बीए अपराध विज्ञान (क्रिमिनोलॉजी)

बीए अपराध विज्ञान (क्रिमिनोलॉजी) एक चुनौतीपूर्ण कोर्स है। इस पाठ्यक्रम में अपराध की घटना से जुड़े हुए अभ्यास और केस हल करने के अवसर मिलते हैं। बीए अपराध विज्ञान के विद्यार्थियों को आपराधिक व्यवहार, अपराध का कारण और पीड़ित और समाज पर इसके प्रभाव को समझने के लिए तैयार करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए अपराध विज्ञान (क्रिमिनोलॉजी) |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है । |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से कक्षा बारहवीं में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण हो। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, सागर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • तमिलनाडु ओपन यूनिवर्सिटी, चैन्नई, तमिलनाडु |
| **कोर्स के बाद अवसर** | यह कोर्स करने के बाद विद्यार्थी अपराध अन्वेषक, अपराध शोधकर्ता, परामर्श, चिकित्सा, जाँच अधिकारी, अपराध प्रयोग शाला, कानून, जेल प्रबन्धन से लेकर सामाजिक कार्यकर्ता के क्षेत्र में करियर विकल्प तलाश कर सकते हैं। |

## कोर्स का नाम : राजनीति विज्ञान

यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए आदर्श है जो देश-विदेश के प्रशासनिक पहलुओं के तंत्र को सीखने में रुचि रखते हैं। इस विषय से अध्ययन करने के बाद विद्यार्थी न केवल आधुनिक राजनीतिक परिदृश्यों की समझ बढ़ाते हैं बल्कि राजनीतिक विकास के इतिहास को भी अपनी सोच, विचार, विश्लेषण और निर्णय में शामिल करते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए राजनीति विज्ञान |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय में कम से कम 50 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कुछ संस्थान प्रवेश परीक्षा और व्यक्तिगत साक्षात्कार का भी आयोजन करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • लेडी श्री राम कॉलेज फॉर विमेन, दिल्ली<br>• मिरांडा हाऊस कॉलेज, दिल्ली<br>• फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे, महाराष्ट्र<br>• प्रेसीडेंसी यूनिवर्सिटी, कोलकाता, पश्चिम बंगाल<br>• कमला नेहरू कॉलेज फॉर विमेन, कपूरथला, पंजाब<br>• जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• लखनऊ यूनिवर्सिटी, लखनऊ, उत्तरप्रदेश<br>• पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब<br>• दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना<br>• कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता, प.बंगाल<br>• बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, उत्तरप्रदेश |
| **कोर्स के बाद अवसर** | राजनीति विज्ञान में स्नातक करने के बाद विद्यार्थियों को अपना करियर चुनने के लिए आमतौर पर सार्वजनिक सेवा, मीडिया, शिक्षा, सामाजिक सेवा, प्रकाशन, राजनीति विज्ञान आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर मिलते हैं। |

# मानवशास्त्र

मानवशास्त्र का अध्ययन या मनुष्य का अध्ययन एक व्यापक क्षेत्र है। इस अध्ययन में मानव विकास का अपना महत्व है। मानवशास्त्र को समाज शास्त्रीय, जैविक, भाषा विज्ञान और पुरातत्व इन चार बुनियादी वर्गों में बाँटा जाता है। साथ ही इसके अन्तर्गत मानव जाति की समस्याओं के समाधान के प्रयास भी आते हैं।

## कोर्स का नाम : बीए मानवशास्त्र (एन्थ्रोपोलॉजी)

इसके अन्तर्गत विभिन्न संस्कृतियों का अध्ययन करना, डेटा विश्लेषण करना, मौखिक संचार कौशल को बेहतर बनाना आदि आता है, साथ ही यह विषय विद्यार्थियों में टीम वर्क के संचालन में उनकी क्षमता और कुशल नेतृत्व क्षमता को बढ़ाने में भी मदद करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए मानवशास्त्र (एन्थ्रोपोलॉजी) |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय में कम से कम 50 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कुछ संस्थान प्रवेश परीक्षा और व्यक्तिगत साक्षात्कार का भी आयोजन करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • एमवीआर डिग्री कॉलेज, विशाखापट्नम, आन्ध्र प्रदेश<br>• न्यू आर्ट्स कॉमर्स एंड साइंस कॉलेज, अहमदाबाद, गुजरात<br>• नेशनल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश<br>• अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश<br>• बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश<br>• जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली<br>• दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली |
| **कोर्स के बाद अवसर** | बीए एंथ्रोपोलॉजी करने के बाद विद्यार्थी विभिन्न स्नातकोत्तर कर शिक्षा, अनुसंधान, व्यवसाय, संरक्षण, सामुदायिक विकास, स्वास्थ्य सेवा और सरकारी उपक्रमों में अपना करियर बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी सरकारी संगठनों, निजी गैर सरकारी संगठनों आदि में भी अपना करियर बना सकते हैं। एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे |

| | |
|---|---|
| | ऑफ इंडिया भारत में मानव विज्ञान स्नातकों का एक प्रमुख भर्ती केन्द्र है। इस पद पर काम करने वाले अभ्यार्थियों की आवश्यकता केन्द्र और राज्य दोनों स्तरों पर होती है। |

# भूगोल

भूगोल सम्पूर्ण पृथ्वी का अध्ययन है, जिसमें भूमि, स्थलाकृति, लोग और घटनाएँ जैसे पहलू शामिल है।

## कोर्स का नाम : बीए भूगोल ( ज्योग्राफी )

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के व्यावहारिक कौशल, अनुभव, वाणिज्य, परिवहन और पर्यटन, व्यवसाय, कानून और वित्त जैसे में उपयोगी है, जिसमें छात्र विभिन्न कामों को करना सीखते हैं जैसे- मानचित्रों का निर्माण, तटीय ज़ोन प्रबन्धन, भूमि उपयोग विश्लेषण, लैंडस्केप बनाना, विकास सर्वेक्षण, ज़ोनिंग अन्वेषण आदि।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए भूगोल (ज्योग्राफी) |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय पाठ्यक्रम है जो दो हिस्सों में पूरा किया जाता है। एक हिस्सा सैद्धांतिक समझ को बनाने सम्बन्धी और दूसरा हिस्सा फिल्डवर्क का है जो कि पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य अंग है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय में कम से कम 50 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कुछ संस्थान प्रवेश परीक्षा और व्यक्तिगत साक्षात्कार का भी आयोजन करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• एक्सीलेंस कॉलेज, भोपाल |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ, उत्तर प्रदेश<br>• बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश<br>• इंस्टीट्यूट ऑफ ज्यो-इंफार्मेटिक्स एंड रिमोट सेंसिंग, कोलकाता, पश्चिम बंगाल<br>• जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली<br>• दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | सेटेलाइट टेक्नोलॉजी और ज्योग्राफिकल इंफॉर्मेशन सिस्टम (जीआईएस), एनजीओ ज्योग्राफिकल सर्वे ऑफ इंडिया, मेट्रोलॉजिकल डिपार्टमेन्ट, रीसर्च इंस्टिट्यूट, स्कूल-कॉलेज, मैप पब्लिशर व ट्रेवल एजेंसियों आदि में भूगोल विशेषज्ञों की जॉब के अवसर मिल सकते हैं। विद्यार्थी चाहें तो फ्रीलांसर व कंसल्टेंट के अलावा विदेश जाकर भी अपनी क्षमता आजमा सकते हैं। |

# इतिहास

इतिहास का अध्ययन किसी व्यक्ति को संस्कृति और समाज को समझने में मदद करता है। यह उन कारकों को समझने में मदद करता है जो सभ्यता के विकास को प्रभावित करते हैं जैसे संस्कृति, अर्थव्यवस्था, धर्म, शक्ति आदि।

## कोर्स का नाम : बीए प्राचीन इतिहास/आधुनिक इतिहास

विद्यार्थियों को बीते युग की संस्कृति और सभ्यता के बारे में जानने के अवसर देता है। यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए भी आदर्श है जो मानव विज्ञान, पुरातत्व, सार्वजनिक प्रशासन आदि जैसे क्षेत्रों में अपना कैरियर बनाना चाहते हैं।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बीए प्राचीन इतिहास/आधुनिक इतिहास |
| **कोर्स के बारे में** | यह 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त शिक्षा मण्डल (बोर्ड) से किसी भी विषय में कम से कम 50 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण हो।<br>• इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कुछ संस्थान प्रवेश परीक्षा और व्यक्तिगत साक्षात्कार का भी आयोजन करते हैं। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • डॉ. हरिसिंह गौर सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, सागर<br>• देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश<br>• गुरू नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब<br>• दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>• राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान<br>• मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, पंजाब |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | विद्यार्थी कई सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में रोजगार पा सकते हैं और स्नातकोत्तर भी कर सकते है। स्नातक इतिहास डिग्री धारकों को रोजगार देने वाले कुछ क्षेत्र हैं शिक्षा, पुरातत्व, सार्वजनिक सेवा, निजी क्षेत्र और यात्रा एवं पर्यटन, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक। आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अलावा देश-विदेश में ऐसे बहुत से पुरातत्व सम्बन्धी संस्थान हैं, जहाँ शोधकर्ता, सर्वेक्षक और आर्कियोलॉजिस्ट, असिस्टेंट आर्कियोलॉजिस्ट आदि पदों पर इतिहास के प्रोफेशनल्स के लिए रोजगार उपलब्ध हैं। विदेश मंत्रालय के हिस्टोरिकल डिवीजन, शिक्षा मंत्रालय, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, विश्वविद्यालयों आदि में भी रोजगार के अच्छे मौके मिलते हैं। |

* * *

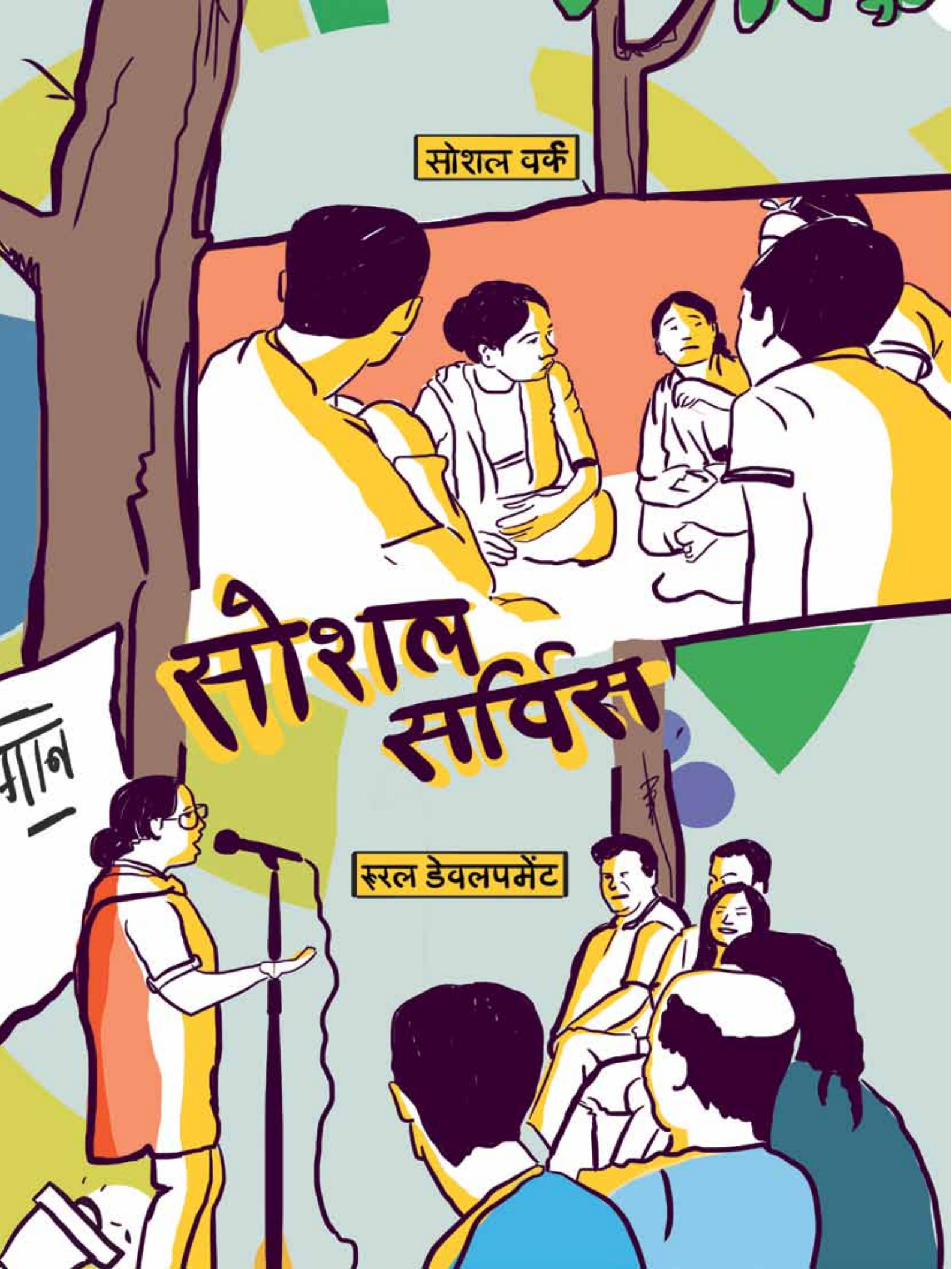
सोशल वर्क
सोशल सर्विस
रूरल डेवलपमेंट

# सोशल सर्विस

सोशल सर्विस के अन्तर्गत समाज के लोगों के बीच रहकर उनके हित के लिए कल्याणकारी कार्य करने से संबंधित विभिन्न कोर्स शामिल रहते हैं जिसमें विद्यार्थियों को समाज के सभी वर्गों की मूलभूत सुविधाओं जैसे कि उनकी आजीविका, पोषण, मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य, शिक्षा, सशक्तिकरण इत्यादि को समाज के सभी वर्गों को उपलब्ध कराने के सम्बन्ध में शिक्षित किया जाता है।

ऐसे कई विषय हैं- जैसे शिक्षा, कानून, स्वास्थ्य, अर्थशास्त्र, कृषि आदि जिनके विशेषज्ञ भी सोशल सर्विस क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं। वे अपनी विशेषज्ञता का उपयोग इस क्षेत्र में बखूबी कर सकते हैं। समाज सेवा को लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ने वाले विद्यार्थी भी अपने करियर में आदर्श रावत की तरह ही सफल हो सकते हैं -

## आदर्श रावत की अलग सोच

आदर्श रावत ग्राम पथरोटा, जिला होशंगाबाद के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र थे। शुरुआत में इंजीनियरिंग की पूर्व तैयारी करते समय आदर्श ने महसूस किया कि यह क्षेत्र उनके लिए नहीं है। उनकी रुचि समाज के लिए काम करने में है। तभी उनकी मुलाकात एक सोशल साइंस के विद्यार्थी से हुई। उससे प्रेरणा लेकर आदर्श ने टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान में प्रवेश लिया। संस्थान की ओर से उन्हें स्कॉलरशीप मिली, जिससे वे पढ़ाई का खर्च वहन कर सके। अब तक हिन्दी माध्यम से पढ़े आदर्श के सामने दूसरी बड़ी चुनौती थी अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई करना। आदर्श ने कड़ी मेहनत कर उस चुनौती का भी सामना किया। पढ़ाई के दौरान प्लेसमेंट के लिए आने वाली अनेक कंपनियों में से एक थी - देवास जिले के बागली विकास खण्ड में महिलाओं के हित के लिए कार्यरत 'प्रगति सहयोग संस्था'। आज आदर्श इस संस्थान में प्रोग्राम अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं और अपनी टीम के साथ महिलाओं को स्वसहायता समूह के माध्यम से स्वावलम्बी बनाने के कार्य में जुटे हुए हैं। अपनी रुचि के कार्य से जुड़े हुए आदर्श अपने काम से बहुत संतुष्ट हैं। वे सभी विद्यार्थियों को यही सलाह देते हैं कि करियर के रूप में कोई भी विषय चुनने से पहले यह जानना जरूरी है कि हमारी रुचि किस काम में है और हम जीवन में क्या करना चाहते हैं?

# समाज कार्य (सोशल वर्क)

समाज कार्य एक शैक्षिक एवं व्यावसायिक विधा है जो सामुदायिक संगठन एवं अन्य विधियों द्वारा लोगों एवं समूहों के जीवन स्तर को उन्नत बनाने का प्रयत्न करती है। समाज कार्य से तात्पर्य सामाजिक कामकाज और समग्र विकास को बढ़ाने के प्रयास में व्यक्तियों, परिवारों, समूहों और समुदायों के साथ कार्य करने से है।

## कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ सोशल वर्क

यह पाठ्यक्रम सामाजिक विकास के क्षेत्र में कार्य करने में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है। पाठ्यक्रम में शामिल अध्ययन के प्रमुख विषयों में समाज, समाज शास्त्र, सामाजिक कार्य, जीवन के माध्यम से मानव विकास और सामाजिक कार्यों के लिए कानून का परिचय शामिल है। यह विद्यार्थियों को समाज की भावनाओं और मनोवैज्ञानिक समस्याओं से निपटने में मदद करने के लिए व्यावसायिक कौशल और पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने में मदद करता है।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ सोशल वर्क |
| **कोर्स के बारे में** | यह तीन वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है जो कुछ संस्थानों द्वारा 6 सेमेस्टर में विभाजित है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • कक्षा बारहवीं में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण।<br>• कुछ संस्थानों द्वारा प्रवेश परीक्षा और व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर प्रवेश। |
| **मध्यप्रदेश स्थित कॉलेज** | • भोपाल स्कूल ऑफ सोशल साइंस, भोपाल<br>• इन्दौर स्कूल ऑफ सोशल वर्क, इंदौर<br>• इग्नू (इंदिरा गांधी ओपन यूनिवर्सिटी) (दूरस्थ शिक्षा)<br>• नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | कुछ संस्थान जहाँ छात्र इस पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते है -<br>• डिपार्टमेंट ऑफ सोशल वर्क, दिल्ली विश्वविद्यालय<br>• टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंस, मुम्बई, महाराष्ट्र<br>• डॉ. अम्बेडकर इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंस, आगरा, उत्तरप्रदेश<br>• जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली<br>• इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली<br>• निर्मला निकेतन, मुम्बई<br>• कर्वे इंस्टिट्यूट, पुणे, महाराष्ट्र<br>• अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (AMU), अलीगढ़ , उत्तरप्रदेश<br>• लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तरप्रदेश |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | सामाजिक कार्य का क्षेत्र व्यापक है जिसमें नौकरी के बहुत सारे अवसर उपलब्ध हैं जैसे छात्र जनसांख्यिकी, अस्पतालों, क्लीनिक, स्वास्थ्य उद्योग, शिक्षा क्षेत्र, सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों, मानवाधिकार एजेन्सियों, वृद्धाश्रमों, सामुदायिक केन्द्रों, आपदा प्रबन्धन विभाग, करियर परामर्श आदि क्षेत्रों में कार्य कर सकते हैं। सोशल वर्क में बीए के बाद जो छात्र आगे की पढ़ाई करना चाहते हैं, वे मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एमएसडब्ल्यू) एमए, पीएचडी भी कर सकते हैं। |

## ग्रामीण विकास (रूरल डेवलपमेंट)

भारत की साठ प्रतिशत से अधिक आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में बसती है। प्रायः इन्हें शहरी क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों का पूरा लाभ नहीं मिल पाता है इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों के विकास का ध्यान रखने की दृष्टि से ग्रामीण विकास और प्रबन्धन में शिक्षित विद्यार्थियों की बहुत मांग है।

### कोर्स का नाम : बैचलर ऑफ आर्ट्स - ग्रामीण विकास

इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत छात्र ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठनों द्वारा किए जाने वाले सामाजिक एवं आर्थिक विकास के कार्यक्रम और तकनीकों के बारे में जान सकेंगे तथा राष्ट्र के विकास और समृद्धि में ग्रामीणों के योगदान के अवसर प्रदान करने तथा उनकी समस्याओं का निराकरण करने के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे।

| | |
|---|---|
| **कोर्स का नाम** | बैचलर ऑफ आर्ट्स - ग्रामीण विकास |
| **कोर्स के बारे में** | यह तीन वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है। |
| **शैक्षणिक योग्यता** | • कक्षा बारहवीं में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण।<br>• कुछ संस्थानों द्वारा प्रवेश परीक्षा और व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर प्रवेश। |
| **म.प्र. स्थित कॉलेज** | • कस्तूरबा ग्राम रूरल इंस्टिट्यूट, इन्दौर |
| **प्रदेश के बाहर स्थित कॉलेज** | • इंस्टिट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट, जयपुर, राजस्थान<br>• भारतीय प्रबन्ध संस्थान, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल<br>• जेवियर इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, भुवनेश्वर, ओडिशा<br>• नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ रूरल डेवलपमेंट (NIRD) हैदराबाद, तेलंगाना<br>• नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी, गाजियाबाद, उत्तप्रदेश |

| | |
|---|---|
| **कोर्स के बाद अवसर** | इस क्षेत्र में रोजगार के व्यापक अवसर हैं जैसे -<br>सरकारी क्षेत्र में ग्रामीण प्रबन्धन के रूप में ग्राम विकास अधिकारी (बीडीओ), ग्रामीण सरकारी क्षेत्र, कृषि व्यवसाय, उद्यम, कृषि विपणन और कृषि उत्पादों के प्रबन्धन के रूप में काम कर सकते हैं। ग्रामीण प्रबन्धक अपना स्वयं का एनजीओ भी खोल सकते हैं या किसी एनजीओ में भी काम कर सकते हैं। छात्र विकास शील योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रबन्धन के लिए भी काम कर सकते हैं। इस पाठ्यक्रम के बाद विद्यार्थियों को न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी करियर के बड़े अवसर मिल सकते हैं। ग्रामीण प्रबन्धन के सभी कार्यात्मक क्षेत्रों जैसे कि मानव संसाधन विकास, परियोजना कार्यान्वयन, सामान्य प्रबन्धन, वित्त, विपणन, खरीद, ग्रामीण आधारित उद्यमों के सभी क्षेत्रों में काम कर सकते हैं। |

उपरोक्त में से कोई भी डिग्री पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी निम्न विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त करने हेतु डिप्लोमा या स्नातकोत्तर कोर्स कर सकते हैं :

- मानव संसाधन प्रबंधन
- सामुदायिक विकास (ग्रामीण व शहरी)
- महिला बाल विकास
- मेडिकल एंड सायकियाट्रिक सोशल वर्क
- लेबर वेलफेयर एंड पर्सनल मैनेजमेंट
- जेण्डर स्टडिज़
- पब्लिक पॉलिसी

* * *

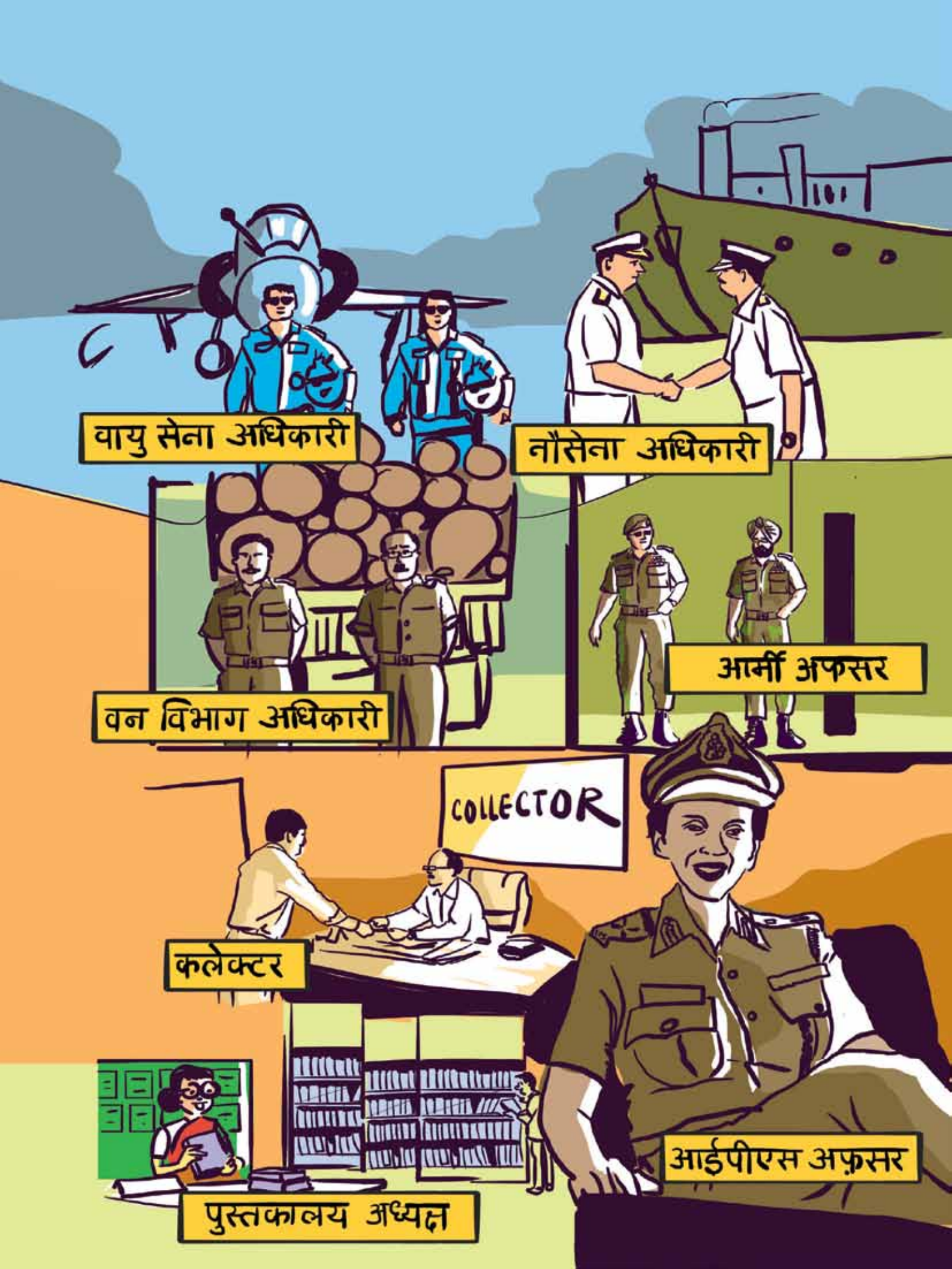
वायु सेना अधिकारी
नौसेना अधिकारी
वन विभाग अधिकारी
आर्मी अफसर
COLLECTOR
कलेक्टर
आईपीएस अफ़सर
पुस्तकालय अध्यक्ष

# सिविल सर्विसेस व डिफेन्स सर्विसेस

सिविल सेवा का अभिप्राय शासकीय सेवा की एक शाखा से है। इसमें सशस्त्र सेनाओं से संबंधित विभाग नही आतें हैं। सिविल सेवको से तात्पर्य शासकीय अधिकारियों का ऐसा समूह जो कार्यक्रमों और योजनाओं के लिए कार्य करते हैं। इनका चयन योग्यता के आधार पर होता है इसके लिए संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती है। संघ लोकसेवा आयोग (यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन, UPSC) भारत के संविधान द्वारा स्थापित एक संवैधानिक निकाय है जो भारत सरकार के लोकसेवा के पदाधिकारियों की नियुक्ति के लिए परीक्षाओं का संचालन करती है। इनका प्रमुख कार्य केन्द्र व राज्यों की लोकसेवा के सदस्यों का चयन करना है। इसके लिए यह विभिन्न परीक्षाएं संचालित करती है।

## भारतीय सशस्त्र सेनाएं

भारतीय सशस्त्र सेनाएँ भारत की तथा इसके प्रत्येक भाग की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उत्तरदायी हैं। भारतीय सशस्त्र सेनाओं की सर्वोच्च कमान भारत के राष्ट्रपति के पास है। राष्ट्र की रक्षा का दायित्व मंत्रिमंडल के पास होता है। इसका निर्वहन रक्षा मंत्रालय द्वारा किया जाता है, जो सशस्त्र बलों को देश की रक्षा के संदर्भ में उनके दायित्व के निर्वहन के लिए नीतिगत रूपरेखा और जानकारियाँ प्रदान करता है।

भारतीय शस्त्र सेना में मुख्यतः तीन प्रभाग हैं- भारतीय थलसेना, भारतीय नौसेना, भारतीय वायुसेना और इसके अतिरिक्त भारतीय सशस्त्र बलों, भारतीय तटरक्षक बल और अर्धसैनिक संगठनों द्वारा भी योगदान दिया जाता है। यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सैन्य बल है। भारतीय सशस्त्र सेना के किसी भी प्रभाग में कार्य करना बहुत गौरव की बात है और देश के प्रति समर्पण और योगदान का एक बहुत अद्भुत तरीका है।

### सैनिक बनकर गर्वोन्नत है विजय जाट

मैं धार जिला (म.प्र.) के छोटे से गाँव बाछनपुर में पैदा हुआ, वही पला-बढ़ा और वहीं प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। गाँव में मनोरंजन के कोई साधन नही थे। इसलिए अधिकांश समय साथियों के साथ खेलने या टीवी देखने में बीतता था। टीवी या फिल्मों में फौजियो को देखकर मेरे मन में भी फौजी बनने का सपना पलने लगा। फौजियों की वर्दी, उनका अनुशासन, उनका देश सेवा का जज्बा और बलिदान देखकर मैंने भी फौज में जाने का निर्णय ले लिया। शारीरिक रूप से कमजोर होने के कारण मैंने गाँव में दौड़ने का अभ्यास शुरू कर दिया। 12वीं कक्षा उत्तीर्ण होने के बाद मैंने महू और उज्जैन में फौजी दौड़ में भाग लिया। अंततः तीसरी बार महू में 2011 में दौड़ में चयन होने के बाद मैंने सभी टेस्ट पास किए। ट्रेनिंग के बाद मेरी पोस्टिंग अलग-अलग स्थानों पर हुई। वर्तमान में मेरी पोस्टिंग जयपुर में है। आज मुझे और मेरे पूरे गाँव को मेरे भारतीय सैनिक होने पर गर्व है।

## यूपीएससी (UPSC) द्वारा आयोजित परीक्षाएं

संघ लोकसेवा आयोग (UPSC) सरकार की केन्द्रीय एजेंसी है जिसे केन्द्र सरकार की विभिन्न सेवाओं में अधिकारियों और कर्मचारियों की भर्ती के लिए परीक्षा आयोजित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह आयोग हर साल सिविल सेवा परीक्षा के साथ ही विभिन्न अन्य महत्वपूर्ण सरकारी पदों के लिए भी परीक्षाएँ आयोजित करता है। UPSC द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा में उम्मीदवार को IAS, IPS आदि विभिन्न पदों पर भर्ती किया जाता है।

परीक्षा का आयोजन पूरी तरह से अलग-अलग चरणों में किया जाता है जैसे - प्रारंभिक परीक्षा, सिविल सेवा मेन्स और व्यक्तित्व परीक्षण एवं साक्षात्कार इन तीनों स्तरों पर परीक्षा पास करना अनिवार्य होता है। इसी के बाद प्रशासनिक पद पर नियुक्ति की जाती है। यह त्रिस्तरीय परीक्षा इस प्रकार है -

1. **प्रारंभिक परीक्षा, इसमें दो पेपर होते हैं –**

   **पहला पेपर** – सामान्य अध्ययन का होता है। इस पेपर में कुल 100 प्रश्न होते हैं जिसके कुल अंक 200 होते हैं। इसे 2 घण्टे में पूरा करना होता है। इस पेपर के अंकों को सिविल सेवा मेन्स परीक्षा में जोड़ा जाता है।

   **दूसरा पेपर** – बौद्धिक क्षमता परखने (Aptitute Test) के लिए होता है। इस पेपर में 200 अंकों के कुल 80 प्रश्न होते हैं जिसे 2 घण्टे में पूरा करना होता है। इस पेपर को भी उत्तीर्ण करना जरूरी है। उम्मीदवार को इस पेपर में कम से कम 33 प्रतिशत अंक प्राप्त होने चाहिए। हालाँकि, मेन्स परीक्षा में इस पेपर के अंक नहीं जोड़े जाते हैं। प्रारंभिक परीक्षा में नकारात्मक अंक की गणना भी की जाती है। प्रत्येक गलत जवाब पर, हर प्रश्न के लिए निर्धारित अंकों का एक तिहाई अंक सही उत्तरों के प्राप्तांक में से कम हो जाते हैं। प्रारंभिक परीक्षा में विद्यार्थी अनुमान के आधार पर उत्तर नहीं दे सकते।

2. **मुख्य परीक्षा** – मुख्य परीक्षा में कुल 9 पेपर होते हैं। प्रत्येक पेपर को हल करने के लिए 3 घण्टे का समय दिया जाता है। इसमें से पेपर भाग ए - हिन्दी भाषा का होता है जिसके कुल अंक 300 और पेपर भाग बी - अंग्रेजी भाषा का होता है, जिसके कुल अंक 300 हैं। इसके अतिरिक्त 7 पेपर होते हैं जो इस प्रकार हैं -

   पेपर 1 - निबन्ध

   पेपर 2 - भारतीय विरासत और संस्कृति, विश्व और समाज का भूगोल और इतिहास

   पेपर 3 - शासन, संविधान, राजनीति, सामाजिक न्याय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

   पेपर 4 - प्रौद्योगिकी, आर्थिक विकास, जैव-विविधता, पर्यावरण, सुरक्षा और आपदा प्रबन्धन

   पेपर 5 - नैतिकता, अखण्डता और योग्यता

   पेपर 6 और पेपर 7 ऐच्छिक या वैकल्पिक/ऑप्शनल पेपर होते हैं जिसे अभ्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार चुनते हैं। शेष 5 पेपर के विषय आयोग द्वारा निर्धारित रहते हैं। मुख्य परीक्षा के प्रत्येक पेपर के कुल अंक 250 होते हैं। इस तरह से मुख्य परीक्षा के कुल प्राप्तांक 1750 होते हैं।

3. **व्यक्तित्व परीक्षण एवं साक्षात्कार** – साक्षात्कार एवं व्यक्तित्व परीक्षण 275 अंकों का होता है। परीक्षा का यह भाग मुख्य परीक्षा के परिणाम घोषित होने के बाद ही आता है। अभ्यार्थी उस भाषा को वरीयता दे सकते हैं जिसमें वे साक्षात्कार करना पसंद करते हैं। आवश्यकतानुसार यूपीएससी अनुवादकों की व्यवस्था भी करता है। परीक्षा के इस चरण में प्राप्त किए गए अंकों को यूपीएससी (UPSC) द्वारा मुख्य में प्राप्त अंकों के साथ जोड़ दिया जाता है।

## सिविल सेवा परीक्षा (CSE / IAS)

यह वह परीक्षा है जिसके माध्यम से भारतीय नागरिक सेवाओं के लिए अधिकारियों का चयन किया जाता है इसके माध्यम से योग्य उम्मीदवारों को विभिन्न सेवाओं में IAS, IPS, IFS, IRS, IDES, IIS आदि सरकारी सेवाओं में उनके अंकों और रैंकिंग के अनुसार भर्ती किया जाता है।

**शैक्षणिक योग्यता :** सीएसई के लिए उम्मीदवार को इस पद पर परीक्षा देने के लिए कम से कम स्नातक होना अनिवार्य होता है।

**आयु एवं प्रयासों की संख्या :** UPSC द्वारा परीक्षा में भाग लेने वाले उम्मीदवारों के लिए आयु सीमा पूर्व-निर्धारित है। विभिन्न श्रेणियों में उम्मीदवारों की आयु, आयु में छूट और प्रयासों की अधिकतम संख्या भी निर्धारित की गई है -

| श्रेणी | न्यूनतम आयु | अधिकतम आयु | आयु में छूट | प्रयासों की अधिकतम संख्या |
|---|---|---|---|---|
| सामान्य | 21 वर्ष | 30 वर्ष | | 4 बार |
| ओबीसी | 21 वर्ष | 33 वर्ष | 3 वर्ष | 7 बार |
| एससी/एसटी | 21 वर्ष | 35 वर्ष | 5 वर्ष | कोई सीमा नहीं |
| 'दिव्यांगता अधिकार विधेयक' के मापदंडों के अनुसार दिव्यांग श्रेणी में आने वाले व्यक्ति | - | - | 10 वर्ष | - |

## भारतीय इंजीनियरिंग सेवा परीक्षा (IES)

UPSC द्वारा भारत सरकार के तकनीकी और प्रबन्धकीय कार्यों को पूरा करने के लिए इंजीनियरिंग सेवा परीक्षा आयोजित की जाती है। परीक्षा पास करने के बाद चयनित लोगों को आयोग द्वारा सिविल इंजीनियरिंग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड टेली-कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग

संबंधी पदों पर विभिन्न इंजीनियरिंग सेवाओं में विभिन्न विभागों में भर्ती किया जाता है। आईईएस अधिकारी को बिजली, सड़क, विनिर्माण आदि सहित तकनीकी क्षेत्र में कार्य करने के अवसर प्राप्त होते हैं। इसकी परीक्षा तीन चरणों में (प्रीलिम्स, मेन्स और व्यक्तिगत परीक्षण एवं साक्षात्कार) आयोजित की जाती है।

**चरण 1 – प्रारंभिक :** प्रारंभिक परीक्षा में 2 पेपर आयोजित किए जाते हैं, जिसमें से पहले पेपर (जनरल स्टडीज और इंजीनियरिंग एप्टिट्यूड) में पूछे जाने वाले प्रश्नों का स्वरूप बहुविकल्पीय होता है। साथ ही इन प्रश्नों को 2 घण्टों में हल करना होता है। इस पेपर के कुल अंक 200 हैं। इसी तरह से दूसरा पेपर (इंजीनियरिंग संकाय) 300 अंकों का होता है जिसे पूरा करने के लिए आयोग 3 घण्टे का समय देता है।

**चरण 2 – मुख्य :** मुख्य परीक्षा में भी 2 पेपर आयोजित किए जाते हैं जिनमें से पहले पेपर (इंजीनियरिंग एप्टिट्यूड) में पूछे जाने वाले प्रश्नों का स्वरूप परम्परागत (कन्वेंशनल) होता है, जिसे हल करने के लिए आयोग द्वारा 3 घण्टे का समय दिया जाता है और कुल अंक 300 होते हैं। इसी तरह दूसरे पेपर (इंजीनियरिंग संकाय) के भी कुल अंक 300 निर्धारित हैं, जिसे हल करने के लिए आयोग 3 घण्टे का समय देता है।

**चरण 3 – व्यक्तित्व परीक्षण एवं साक्षात्कार :** इसके लिए आयोग ने कुल 200 अंक निर्धारित किए हैं।

**शैक्षणिक योग्यता** – इंजीनियरिंग सेवा परीक्षा में बैठने के लिए उम्मीदवार को कम से कम इंजीनियरिंग में स्नातक होना अनिवार्य होता है।

**आयु एवं प्रयासों की संख्या** – UPSC द्वारा परीक्षा में भाग लेने वाले उम्मीदवारों के लिए आयु सीमा पूर्व निर्धारित है। विभिन्न श्रेणियों में उम्मीदवारों की आयु, आयु में छूट और प्रयासों की अधिकतम संख्या भी निर्धारित की गई है -

| श्रेणी | न्यूनतम आयु | अधिकतम आयु | आयु में छूट | प्रयासों की अधिकतम संख्या |
|---|---|---|---|---|
| सामान्य | 21 वर्ष | 30 वर्ष | | 4 बार |
| ओबीसी | 21 वर्ष | 33 वर्ष | 3 वर्ष | 7 बार |
| एससी/एसटी | 21 वर्ष | 35 वर्ष | 5 वर्ष | कोई सीमा नहीं |
| 'दिव्यांगता अधिकार विधेयक' के मापदंडों के अनुसार दिव्यांग श्रेणी में आने वाले व्यक्ति | - | - | 10 वर्ष | - |

## भारतीय वन सेवा परीक्षा (IFOS)

भारतीय वन सेवा परीक्षा भारत की वन सेवा में भर्ती के लिए आयोजित की जाती है। IFOS अधिकारी पर जिला प्रशासन का नियंत्रण नहीं होता है। ये एक स्वतंत्र इकाई के रूप में काम करते हैं और अपने स्वयं के डोमेन में प्रशासनिक, न्यायिक और वित्तीय शक्तियों का उपयोग करते हैं। चयनित आवेदक राज्य के वन विभागों में सभी शीर्ष पदों पर नियुक्त किए जाते हैं। IFOS सेवाएँ विभिन्न राज्य संवर्गों और संयुक्त संवर्गों के अन्तर्गत आती हैं। परीक्षा में चयनित उम्मीदवारों को राज्य और केन्द्र दोनों सरकारों की सेवा करने का अधिकार होता है। सेवा में लागू मुख्य जनादेश राष्ट्रीय वन नीति है, जो पर्यावरणीय स्थिरता और पारिस्थितिक संतुलन के रखरखाव को सुनिश्चित करती है।

इसकी परीक्षा तीन चरणों (प्रारंभिक, मुख्य और व्यक्तित्व-परीक्षण एवं साक्षात्कार) में आयोजित की जाती है।

**चरण 1 – प्रारंभिक :** प्रारंभिक परीक्षा में 2 पेपर होते हैं जिसमें से पहले पेपर (जनरल इंग्लिश) में पूछे जाने वाले प्रश्नों का स्वरूप बहुविकल्पीय होता है। साथ ही इन प्रश्नों को 2 घण्टे में हल करना होता है। इस पेपर के कुल अंक 200 हैं। इसी तरह से दूसरा पेपर (जनरल नॉलेज) 200 अंकों का होता है, जिसे पूरा करने के लिए आयोग 2 घंटे का समय देता है।

**चरण 2 – मुख्य :** मुख्य परीक्षा में 4 पेपर आयोजित किए जाते हैं, जिनमें विषयों का चयन विद्यार्थियों को स्वयं करना होता है। प्रत्येक विषय के 2-2 पेपर लिए जाते हैं और आयोग द्वारा प्रत्येक पेपर के कुल 200 अंक निर्धारित किए गए हैं।

**चरण 3 – व्यक्तित्व परीक्षण एवं साक्षात्कार :** इसके लिए आयोग द्वारा कुल 300 अंक निर्धारित किए गए हैं।

**शैक्षणिक योग्यता :** उम्मीदवार के पास किसी मान्यता-प्राप्त विश्वविद्यालय से कृषि या वानिकी या इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री या समकक्ष स्नातक की डिग्री होनी चाहिए जैसे - पशुपालन और पशु-चिकित्सा विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, भूविज्ञान, गणित, भौतिकी, सांख्यिकी और जूलॉजी।

**आयु एवं प्रयासों की संख्या :** UPSC द्वारा परीक्षा में भाग लेने वाले उम्मीदवारों के लिए आयु सीमा पूर्व निर्धारित है। विभिन्न श्रेणियों में उम्मीदवारों की आयु, आयु में छूट और प्रयासों की अधिकतम संख्या भी निर्धारित की गई है -

| श्रेणी | न्यूनतम आयु | अधिकतम आयु | आयु में छूट | प्रयासों की अधिकतम संख्या |
|---|---|---|---|---|
| सामान्य | 21 वर्ष | 30 वर्ष | | 7 बार |
| ओबीसी | 21 वर्ष | 33 वर्ष | 3 वर्ष | 9 बार |
| एससी/एसटी | 21 वर्ष | 35 वर्ष | 5 वर्ष | कोई सीमा नहीं |
| 'दिव्यांगता अधिकार विधेयक' के मापदंडों के अनुसार दिव्यांग श्रेणी में आने वाले व्यक्ति | - | - | 10 वर्ष | 9 बार |

## सहायक भविष्य निधि आयुक्त (APFC)

यूपीएससी हर साल सहायक भविष्य निधि आयुक्तों के पद के लिए परीक्षा आयोजित करता है। एपीएफसी के मुख्य कर्तव्यों में लेखा, रिकवरी, प्रवर्तन, प्रशासन, नगदी, कानूनी, कम्प्यूटर और पेंशन के काम को देखना है जिसमें वैधानिक और प्रशासनिक कार्य शामिल है। एपीएफसी दावों के निपटान के लिए काम करते हैं, कैशबुक के सामान्य प्रशासन/रखरखाव/ बैंक स्टेटमेंट्स/एमआईएस रिटर्न की प्राप्ति की जाँच भी करते हैं। इसकी परीक्षा तीन चरणों में (प्रीलिम्स, मेन्स और व्यक्तित्व-परीक्षण एवं साक्षात्कार) में आयोजित की जाती है।

**चरण 1 – प्रीलिम्स :** प्रीलिम्स परीक्षा में 2 पेपर आयोजित किए जाते हैं, जिनमें से पहले पेपर (छात्र द्वारा किसी भी क्षेत्रीय भाषा का चयन) में पूछे जाने वाले प्रश्नों का स्वरूप बहुविकल्पीय होता है। साथ ही इन प्रश्नों को 2 घण्टे में हल करना होता है। इस पेपर के कुल अंक 300 हैं। इसी तरह दूसरा पेपर (जनरल इंग्लिश) 300 अंकों का होता है जिसे पूरा करने के लिए आयोग 2 घण्टे का समय देता है।

**चरण 2 – मेन्स :** मेन्स परीक्षा में 7 पेपर आयोजित किए जाते हैं, जिनमें से विद्यार्थियों को 2 वैकल्पिक विषयों को चुनने का मौका दिया जाता है। शेष 5 पेपर आयोग द्वारा निर्धारित विषय पर आयोजित किए जाते हैं। आयोग द्वारा प्रत्येक पेपर के लिए कुल 250 अंक निर्धारित किए गए हैं। इस प्रकार मेन्स परीक्षा में कुल अंक 1750 निर्धारित किए गए हैं।

**चरण 3 – व्यक्तित्व-परीक्षण एवं साक्षात्कार :** इसके लिए आयोग ने कुल 275 अंक निर्धारित किए हैं।

**शैक्षणिक योग्यता:** आवेदक के पास किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से स्नातक की डिग्री होनी चाहिए।

**आयु एवं प्रयासों की संख्या :** UPSC परीक्षा में भाग लेने वाले उम्मीदवारों के लिए आयु सीमा पूर्व निर्धारित है। विभिन्न श्रेणियों में उम्मीदवारों की आयु, आयु में छूट और प्रयासों की अधिकतम संख्या भी निर्धारित की गई है -

| श्रेणी | न्यूनतम आयु | अधिकतम आयु | आयु में छूट | प्रयासों की अधिकतम संख्या |
|---|---|---|---|---|
| सामान्य | 21 वर्ष | 30 वर्ष | | 6 बार |
| ओबीसी | 21 वर्ष | 33 वर्ष | 3 वर्ष | 9 बार |
| एससी/एसटी | 21 वर्ष | 35 वर्ष | 5 वर्ष | कोई सीमा नहीं |
| 'दिव्यांगता अधिकार विधेयक' के मापदंडों के अनुसार दिव्यांग श्रेणी में आने वाले व्यक्ति | - | - | 10 वर्ष | 9 बार |

## संयुक्त रक्षा सेवा (CDS) परीक्षा

संयुक्त रक्षा (सीडीएस) परीक्षा यूपीएससी द्वारा आयोजित की जाती है जिसका उद्देश्य रक्षा सेवाओं के लिए अभ्यार्थियों की भर्ती करना है। साथ ही भारतीय सैन्य अकादमी, भारतीय नौसेना अकादमी, भारतीय वायु सेना और अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी में अपने करियर की तलाश करने वालों को करियर का अवसर प्रदान करना है। राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले उम्मीदवारों को भारतीय सेना, भारतीय वायु सेना, भारतीय नौसेना अकादमी में अधिकारी-प्रशिक्षण अकादमी और सैन्य अकादमी में अधिकारियों के रूप में भर्ती किया जाता है और उन्हें हर महीने 21,000 रूपये का स्टाइपेंड प्रदान किया जाता है।

संयुक्त रक्षा सेवा (सीडीएस) परीक्षा तीन चरणों में पास की जा सकती है। जिसमें लिखित परीक्षा, व्यक्तिगत साक्षात्कार और उसके बाद चिकित्सा परीक्षा शामिल है। इस परीक्षा में केवल अविवाहित स्नातकों को आवेदन करने और परीक्षा देने की अनुमति है।

**शैक्षणिक योग्यता –**

- वायु सेना अकादमी (AFA) के लिए - किसी मान्यता-प्राप्त विश्वविद्यालय या समकक्ष इंजीनियरिंग/प्रौद्योगिकी में स्नातक की डिग्री।
- भारतीय नौसेना अकादमी (INA) के लिए - किसी मान्यता-प्राप्त विश्वविद्यालय या समकक्ष से स्नातक की डिग्री।
- ऑफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी (OTA) के लिए - किसी भी विषय या समकक्ष में मान्यता-प्राप्त विश्वविद्यालय समकक्ष से स्नातक की डिग्री।

**आयु सीमा –**

- वायु सेना अकादमी (AFA) के लिए - 19 से 23 वर्ष (केवल पुरुष)
- भारतीय नौसेना अकादमी (INA) के लिए - 19 से 22 वर्ष (केवल पुरुष)

- भारतीय सैन्य अकादमी (IMA) के लिए - 19 से 24 वर्ष (केवल पुरुष)
- अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी (OTA) के लिए - 19 से 25 वर्ष (पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए अनुमति है।)

  प्रयासों की संख्या - कोई सीमा नहीं।

## भारतीय पुलिस सेवा (IPS)

भारतीय पुलिस सेवा या IPS भारत सरकार की तीन अखिल भारतीय सेवाओं में से एक है। सेवा का गठन वर्ष 1948 में किया गया था। IPS के लिए कैडर नियंत्रण प्राधिकरण गृह मंत्रालय होता है। एक IPS (भारतीय पुलिस सेवा) अधिकारी अपनी जिम्मेदारियों का वहन करते हुए राज्य और केन्द्र के लिए भी कार्य करता है। उनका प्राथमिक कर्तव्य जनता के बीच शांति बनाए रखना है। IPS अधिकारी कानून और व्यवस्था को अधिक महत्व देता है, जिसमें मुख्य तौर पर अपराध का पता लगाना और उसे रोकना, यातायात नियंत्रण, दुर्घटना की रोकथाम, और प्रबन्धन आदि जैसे काम करने के अवसर प्राप्त होते हैं। उनकी मुख्य भूमिका भारतीय खुफिया एजेंसियों जैसे अनुसंधान और विश्लेषण विंग (R & AW), इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) केन्द्रीय जाँच ब्यूरो (CBI), आपराधिक शाखा नेतृत्व और कमान करना है।

**शैक्षणिक योग्यता :** उम्मीदवार को सीएसई पद पर परीक्षा देने के लिए कम से कम स्नातक होना अनिवार्य है।

**आयु एवं प्रयासों की संख्या :** UPSC परीक्षा में भाग लेने वाले उम्मीदवारों के लिए आयु सीमा पूर्व-निर्धारित है। विभिन्न श्रेणियों में उम्मीदवारों की आयु, आयु में छूट, और प्रयासों की अधिकतम संख्या इस प्रकार निर्धारित की गई है -

| श्रेणी | न्यूनतम आयु | अधिकतम आयु | आयु में छूट | प्रयासों की अधिकतम संख्या |
|---|---|---|---|---|
| सामान्य | 21 वर्ष | 30 वर्ष | | 7 बार |
| ओबीसी | 21 वर्ष | 33 वर्ष | 3 वर्ष | 9 बार |
| एससी/एसटी | 21 वर्ष | 35 वर्ष | 5 वर्ष | कोई सीमा नहीं |
| 'दिव्यांगता अधिकार विधेयक' के मापदंडों के अनुसार दिव्यांग श्रेणी में आने वाले व्यक्ति | - | - | 10 वर्ष | |

## नेशनल डिफेन्स एकेडमी (NDA)

| | |
|---|---|
| **कोर्स के आधार पर सीट की उपलब्धता** | 300 (वर्ष में दो बार)<br>सेना में - 195<br>वायु सेना - 66<br>नौसेना - 39 |
| **आयु** | 16 1/2 से 19 वर्ष |
| **शैक्षणिक योग्यता** | सेना हेतु 12वीं कक्षा उत्तीर्ण।<br>वायु सेना व नौसेना हेतु भौतिक विज्ञान व गणित के विषय के साथ 12वीं कक्षा उत्तीर्ण। |
| **वैवाहिक स्थिति** | अविवाहित |
| **प्रशिक्षण प्रारंभ होने के माह** | जनवरी व जुलाई |
| **प्रशिक्षण एकेडमी** | NDA, खड़गवासला , पुणे |
| **प्रशिक्षण अवधि** | NDA में 3 वर्ष तथा Indian Military Academy (IMA) में 1 वर्ष |

### 10+2 तकनीकी भर्ती स्कीम

| | |
|---|---|
| **कोर्स के आधार पर सीट की उपलब्धता** | 85 (वर्ष में 2 बार) |
| **मुख्य समाचार पत्रों में सूचना** | अप्रैल तथा सितम्बर माह में |

### चयन के मापदण्ड

| | |
|---|---|
| **आयु** | 16 1/2 से 19 वर्ष |
| **शैक्षणिक योग्यता** | 10+2 में भौतिक विज्ञान , रसायन विज्ञान, गणित के विषय में कुल (70 प्रतिशत से अधिक अंक अनिवार्य) |
| **वैवाहिक स्थिति** | अविवाहित |
| **प्रशिक्षण प्रारंभ होने के माह** | जनवरी व जुलाई |

| | |
|---|---|
| **प्रशिक्षण एकेडमी** | Indian Military Academy (IMA), देहरादून, उत्तरांचल |
| **प्रशिक्षण अवधि** | 5 वर्ष (1 वर्ष IMA तथा 4 वर्ष Cadet Tranning Wings (CTWS) स्थायी कमीशन 4 वर्ष पश्चात् |

## भर्ती की श्रेणी

| श्रेणी | शैक्षणिक स्तर | आयु |
|---|---|---|
| सैनिक सामान्य ड्यूटी | SSLC/ मैट्रिक में कुल 45% (यदि शैक्षणिक स्तर इससें अधिक है तो % की आवश्यकता नहीं) | 17 1/2 से 23 वर्ष |
| सैनिक तकनीकी में | भौतिक विज्ञान , रसायन विज्ञान, गणित व अंग्रेजी के विषयों में 10+2 इंटरमिडिएट | 17 1/2 से 23 वर्ष |
| सैनिक क्लर्क, स्टोर कीपर तकनीकी | विज्ञान / कामर्स या कला विषय में 10+2 इंटरमिडिएट पास कुल 50% अंक होना आवश्यक। इससें अधिक शैक्षणिक योग्यता होने पर पर प्राथमिकता | 17 1/2 से 23 वर्ष |
| सैनिक नर्सिंग असिस्टेंट | 10+2 में भौतिक विज्ञान , रसायन विज्ञान, अंग्रेजी सहित विज्ञान विषय में कम से कम 50% अंक व प्रत्येक विषय मे 40% अंक होना आवश्यक | 17 1/2 से 23 वर्ष |
| सर्वेक्षक स्वचालित मानचित्रकार | मैट्रिक तथा 12 वी(10+2), गणित तथा विज्ञान में पास करने के पश्चात् BA/BSC गणित विषय सहित | 20 से 25 वर्ष |

# MPPSC द्वारा संचालित परीक्षाएँ

जिस प्रकार राष्ट्रीय स्तर पर UPSC कार्यरत है, उसी प्रकार राज्य स्तर पर उम्मीदवारों की भर्ती हेतु, प्रत्येक राज्य में एक मंडल/संस्था होती है, जिसकी जिम्मेदारी राज्य स्तर परीक्षा संचालित करके उम्मीदवारों की भर्ती करना होती है।

मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग (MPPSC) प्रशासनिक और स्वतंत्र मंडल है जो प्रतियोगी परीक्षा आयोजित करके मध्यप्रदेश के विभिन्न सेवा पदों के लिए उम्मीदवारों की भर्ती के लिए जिम्मेदार है। निम्न प्रकार के पदों की नियुक्ति के लिए MPPSC समय-समय पर परीक्षा संचालित करता है -

1. राज्य सेवा (स्टेट सर्विस)
2. राज्य वन सेवा (स्टेट फारेस्ट सर्विस)
3. राज्य अभियांत्रिकी सेवा
4. ग्रंथपाल (लाइब्रेरियन)
5. क्रीड़ा अधिकारी (स्पोर्ट्स ऑफिसर)
6. पुलिस सेवाएं

इन सभी प्रकार के पदों के लिए अलग-अलग परीक्षाएँ संचालित की जाती हैं। इसके साथ ही MPPSC द्वारा 'स्टेट एलिजिबिलिटी टेस्ट (SET)' भी संचालित की जाती है। इन सभी परीक्षाओं हेतु ग्राह्य जानकारी www.mppsc.nic.in पर उपलब्ध हैं।

## राज्य सेवा

यह परीक्षा 3 चरणों में संचालित होती है। नियुक्त होने के लिए विद्यार्थी को तीनों चरणों में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

1. प्रारंभिक परीक्षा (प्रिलिमिनरी परीक्षा)
   - सभी के लिए अनिवार्य।
   - बहुवैकल्पिक प्रश्न।
   - 2 प्रश्न पत्र।
2. मुख्य परीक्षा (मेन परीक्षा)
   - सेवाओं तथा पदों के विभिन्न प्रवर्गों के लिए उम्मीदवारों के चयन हेतु।
   - इसे लिखने से पहले प्रारंभिक परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य।
   - लिखित वर्णात्मक परीक्षा।
   - छह प्रश्न पत्र।
3. साक्षात्कार

## राज्य वन सेवा

यह परीक्षा 3 चरणों में संचालित होती है। नियुक्त होने के लिए विद्यार्थी को तीनों चरणों में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

1. प्रारंभिक परीक्षा

- सभी के लिए अनिवार्य।
- बहुवैकल्पिक प्रश्न।
- 2 प्रश्न पत्र।

2. राज्य वन सेवा मुख्य परीक्षा

- प्रारंभिक परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य।
- 2 प्रश्न पत्र।
- वस्तुनिष्ट प्रश्न।

3. साक्षात्कार

## राज्य अभियांत्रिकी सेवा

यह परीक्षा 3 चरणों में संचालित होती है। नियुक्त होने के लिए विद्यार्थी को तीनों चरणों में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। इस परीक्षा के माध्यम से निम्न पदों पर नियुक्ति की जाती है-

1. सहायक यंत्री (सिविल), लोक निर्माण विभाग (शैक्षणिक योग्यता- बीई सिविल इंजीनियरिंग )
2. सहायक यंत्री(सिविल), लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग (शैक्षणिक योग्यता- बीई सिविल इंजीनियरिंग)
3. सहायक यंत्री (यांत्रिकी ), लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग (शैक्षणिक योग्यता- बीई मेकैनिकल इंजीनियरिंग)

परीक्षा के 3 चरण निम्नानुसार हैं -

1. प्रारंभिक परीक्षा

- सभी के लिए अनिवार्य।
- ऑनलाइन पद्धति से आयोजित।
- दो प्रश्न पत्र।
- सभी प्रश्न वस्तुनिष्ट प्रकार के।
- परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए जनरल केटेगरी के उम्मीदवार को दोनों प्रश्न पत्रों में 40 प्रतिशत अंक लाना अनिवार्य। मध्यप्रदेश हेतु अधिसूचित अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा निःशक्त श्रेणी के ऐसे अभ्यार्थियों को जो मध्यप्रदेश के निवासी हैं, उत्तीर्णांक में 10 प्रतिशत की छूट दी जाती है।

2. मुख्य परीक्षा

- प्रारंभिक परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य।
- दो प्रश्न पत्र
- सम्बंधित अभियांत्रिकी विषय के विवरणात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं।
- उत्तीर्ण होने के लिए दोनों प्रश्न पत्रों में 40 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य। मध्यप्रदेश हेतु अधिसूचित अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा निःशक्त श्रेणी के ऐसे अभ्यार्थियों को जो मध्यप्रदेश के निवासी हैं, उत्तीर्णांक में 10 प्रतिशत की छूट दी जाती है।

3. साक्षात्कार

## ग्रंथपाल/क्रीड़ा अधिकारी परीक्षा

राज्य द्वारा इन पदों पर नियुक्ति हेतु MPPSC ऑनलाइन परीक्षा संचालित करता है। ग्रंथपाल या क्रीड़ा अधिकारी के रूप में नियुक्ति के लिए आवेदनकर्ता को एक परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य होता है।

इन परीक्षाओं को लिखने के लिए निम्न योग्यताओं का ध्यान रखना जरूरी है -

1. न्यूनतम आयु - 21 वर्ष , अधिकतम आयु - 44 वर्ष

2. शैक्षणिक योग्यता -

- ग्रंथपाल -
  - i लाइब्रेरी साइंस /सूचना विज्ञान /प्रलेखन विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री जिसमें न्यूनतम 55 प्रतिशत अंक हों।
  - ii नेट/स्लेट/सेट परीक्षा में उत्तीर्ण
- क्रीड़ा अधिकारी -
  - i शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विज्ञान में न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों से स्नातकोत्तर डिग्री
  - ii नेट/स्लेट/सेट परीक्षा में उत्तीर्ण

## भारतीय सशस्त्र सेनाएं

भारतीय सशस्त्र बल के अन्तर्गत भारतीय थल सेना, भारतीय वायु सेना, भारतीय नौ सेना एवं भारतीय तटरक्षक आते है। इस क्षेत्र में करियर देश में सबसे प्रतिष्ठित एवं सम्मानित करियर माना जाता है। ऐसे युवा जो उत्साह, साहस एवं चुनौतियों से भरे क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहते हैं, उनके लिए डिफेन्स में जाना एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

भारतीय सशस्त्र सेनाओं में भर्ती के लिए एक तरीका SSB की परीक्षा के माध्यम से है। यह परीक्षा UPSC द्वारा संचालित है। इस हेतु अधिक जानकारी के लिए विद्यार्थी UPSC, भारतीय थलसेना, भारतीय

वायुसेना और भारतीय नौसेना की वेबसाइट से ले सकते हैं। साथ ही आवेदनकर्ता के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को भी परखा जाता है। इसके अलावा, जो विद्यार्थी NCC से जुड़े हैं उनके लिए भी चयन हेतु कुछ प्रावधान उपलब्ध हैं।

## भारतीय थलसेना

भारतीय थलसेना, सेना की भूमि-आधारित शाखा है और यह भारतीय सशस्त्र बल का सबसे बड़ा अंग है। भारतीय सेना की मुख्य जिम्मेदारियों में राष्ट्रीय सुरक्षा और एकता को बनाए रखना, बाहरी और आंतरिक खतरों से भारत की रक्षा करना, भारतीय सीमाओं के भीतर शांति और सुरक्षा बनाए रखना और प्राकृतिक आपदाओं के दौरान बचाव कार्य करना शामिल है।

भारतीय थलसेना में विभिन्न प्रकार के कार्य होते हैं और विभिन्न स्तरों पर करियर बनने के विकल्प उपलब्ध हैं। कुछ संक्षिप्त जानकारी यहाँ उल्लेखित है और ग्राह्य जानकारी भारतीय थलसेना की वेबसाइट www.indianarmy.nic.in पर उल्लेखित है।

## भारतीय नौसेना

भारतीय नौसेना की जिम्मेदारियों की अनेक श्रेणियाँ हैं जिसमें भारतीय छोर/तट की सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा, प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सहायता और मानवीय सहायता आदि शामिल हैं। भारतीय नौसेना में मुख्यतः 2 स्तरों पर भर्ती होती है- अफसर और नौसैनिक। इन दोनों स्तरों पर अनेक विशेषज्ञताएं होती हैं और शैक्षणिक योग्यता भी विशेषज्ञता अनुसार बदलती हैं। इन सभी विशेषज्ञताओं की विस्तृत जानकारी www.indianarmy.nic.in पर उपलब्ध है।

## अफसर

भारतीय नौसेना की विभिन्न शाखाओं में अफसरों को निम्नलिखित विधियों/ योजनाओं में से किसी एक द्वारा भर्ती किया जाता है -

- संघ लोकसेवा आयोग (यू पी एस सी) से भर्ती
- सीधी भर्ती स्थायी कमीशन / शॉर्ट सर्विस कमीशन
- विश्वविद्यालय भर्ती योजना (यू इ एस)

## यूपीएससी से भर्ती

यूपीएससी से भर्ती यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन के तत्वावधान के अधीन हैं और एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रालय (सेना) / एडीजी (भर्ती) नोडल एजेंसी है। इसके अंतर्गत वर्ष में दो बार भर्ती होती है। ये भर्तियाँ- राष्ट्रीय रक्षा अकादमी व नौसेना अकादमी (एनडीएए) संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा (सीडीएसई) और एनसीसी से होती हैं। इन भर्तियों का ब्यौरा निम्नलिखित है -

## राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और नौसेना अकादमी (एनडीए और एनए) परीक्षा

यह भर्ती यूपीएससी द्वारा नियंत्रित की जाती है और एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रालय (सेना/एडीजी भर्ती) इसकी नोडल एजेंसी हैं। इसमें यूपीएससी द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा है और इसके बाद

एसएसबी (SSB) साक्षात्कार होता है। भारतीय नौसेना द्वारा मेडिकल टेस्ट केवल नौसेना अभ्यार्थियों के लिए होती है। इसके बाद मेरिट क्रम सूची को अंतिम रूप से यूपीएससी द्वारा तैयार किया जाता है।

## संयुक्त रक्षासेवा परीक्षा (सीडीएसई)

इस भर्ती में यूपीएससी द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा शामिल है। लिखित परीक्षा के बाद एस एस बी साक्षात्कार होता है। भारतीय नौसेना द्वारा केवल नौसेना उम्मीदवारों के लिए मेडिकल टेस्ट किया जाता है।

## एनसीसी भर्ती

नौसेना विंग के वरिष्ठ डिवीज़न एनसीसी 'सी' प्रमाण पत्र धारकों के लिए रिक्तियों को सीडीएसई विज्ञापन के साथ प्रकाशित किया जाता है। इस भर्ती के लिए कोई लिखित टेस्ट नहीं होता। पात्र अभ्यार्थियों को अपना आवेदन डीजी एनसीसी के द्वारा सीधे एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रालय (एन)/एमओडी (एन) /डीएमपीआर में भेजा जाता है। अभ्यार्थियों को एसएसबी साक्षात्कार के लिए नामित किया जाता है। एसएसबी उत्तीर्ण कर लेने के बाद इन अभ्यार्थियों का मेडिकल परीक्षण किया जाता है और यदि इन्हें फिट पाया जाता है, तो अखिल भारतीय मेरिट के आधार पर भारतीय नौसेना में भर्ती कर लिया जाता है।

## नौसैनिक

लिखित परीक्षा निर्धारित केंद्र में घोषित की गई तारीख और समय पर आयोजित की जाती है। प्रश्न-पत्र द्विभाषी (हिन्दी और अँग्रेजी) और वस्तुनिष्ठ होते हैं। प्रश्न पत्र में चार भाग होंगे अर्थात अँग्रेजी, विज्ञान, गणित और सामान्य-ज्ञान तथा इसकी अवधि 60 मिनट रहती है। इस परीक्षा में अभ्यार्थी को सभी भागों में और कुल योग में भी उत्तीर्ण होना चाहिए। प्रत्येक प्रकार की प्रविष्टि का पाठ्यक्रम भारतीय नौसेना की वेबसाइट पर दिया गया है। इसके साथ ही आवेदनकर्ता का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी परखा जाता है।

## भारतीय वायुसेना

भारतीय वायुसेना की प्रमुख भूमिका भारतीय एयरोस्पेस को हमलों के लिए प्रतिरोधी रखने और संघर्ष के दौरान हवाई युद्ध का प्रबंधन करना है । वायुसेना में मुख्यतः 3 प्रकार की शाखाएं हैं- फ्लाइंग शाखा, ग्राउंड ड्यूटी (टेक्निकल शाखा) और ग्राउंड ड्यूटी (नॉन- टेक्निकल ) शाखा। इन तीनों शाखाओं में 12वीं, स्नातक या स्नातकोत्तर पूर्ण करने के बाद अलग-अलग प्रकार के पदों के लिए आवेदन किया जा सकता है।

## कक्षा 12वीं के बाद

फिजिक्स और मैथ्स विषयों से कक्षा 12वीं में उत्तीर्ण होने के बाद 16 $^{1}/_{2}$ से 19 $^{1}/_{2}$ वर्षीय लड़के NDA (नेशनल डिफेंस अकादमी ) में ट्रेनिंग और एक वर्षीय स्पेशलाइज्ड ट्रेनिंग के माध्यम से वायु सेना में भर्ती हो सकते हैं।

NDA में भर्ती हेतु विद्यार्थी को UPSC द्वारा संचालित प्रवेश परीक्षा, SSB और मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद मेरिट लिस्ट में आना अनिवार्य है।

### स्नातक के बाद

स्नातक के विद्यार्थी तीनों शाखाओं में भर्ती हेतु आवेदन कर सकते हैं।

1. फ्लाइंग शाखा- इस शाखा में कार्यरत व्यक्ति फाइटर पायलट, हेलीकाप्टर पायलट या ट्रांसपोर्ट पायलट के रूप कार्य करते हैं। भर्ती हेतु आवेदनकर्ताओं को 12वीं तक गणित और भौतिक शास्त्र पढ़ने के बाद किसी भी विषय से स्नातक (मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से) में 60 प्रतिशत से उत्तीर्ण होना या B.E/B. Tech डिग्री धारक होना अनिवार्य है।
2. ग्राउंड स्टाफ (टेक्निकल)- इस शाखा में कार्य करने वाले व्यक्ति जमीन पर रहकर यह सुनिश्चित करते हैं कि भारतीय वायुसेना उड़ान योग्य हों। इसमें भी विभिन्न शाखाएं होती हैं जिन्हें आप अपनी स्नातक की डिग्री के अनुसार चुन सकते हैं।
3. ग्राउंड स्टाफ (नॉन- टेक्निकल)- इस शाखा में भी निम्नलिखित प्रकार की शाखाएं हैं।

| शाखा | शैक्षणिक स्तर |
|---|---|
| एडमिनिस्ट्रेशन ब्रांच | स्नातक डिग्री में 60 प्रतिशत या अधिक से उत्तीर्ण |
| एकाउंट्स ब्रांच | बीकॉम में 60 प्रतिशत या अधिक से उत्तीर्ण |
| लोजिस्टिक्स ब्रांच | स्नातक डिग्री में 60 प्रतिशत या अधिक से उत्तीर्ण |

### स्नातकोत्तर के बाद

निम्न दो प्रकार के ग्राउंड स्टाफ (नॉन- टेक्निकल) के पदों के लिए आवेदनकर्ता को स्नातकोत्तर डिग्री धारक होना अनिवार्य है -

1. एजुकेशन ब्रांच - इसमें विभिन्न प्रकार की विशेषज्ञताओं (जैसे मनोविज्ञान, अंग्रेजी, गणित, भौतिक शास्त्र आदि) में स्नातकोत्तर डिग्री धारक आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता को स्नातकोत्तर स्तर पर न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना और स्नातक में न्यूनतम 60 प्रतिशत अंक होना अनिवार्य है।
2. मीटरोलॉजी ब्रांच- विज्ञान/गणित/भूगोल शास्त्र/एनवायर्नमेंटल साइंस/ओशनोग्राफी आदि जैसे विषयों में स्नातकोत्तर धारक ग्राउंड स्टाफ (नॉन-टेक्निकल) की इस ब्रांच के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता को स्नातकोत्तर स्तर पर न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना और स्नातक में न्यूनतम 60 प्रतिशत अंक होना अनिवार्य है।

**कक्षा 12वीं/स्नातक/स्नातकोत्तर के बाद भारतीय वायुसेना में चयन की प्रक्रिया के 4 चरण होते हैं। इन चारों चरणों की जानकारी www.afcat.cdac.in पर उपलब्ध है।**

* * *

# उद्यमिता (एंटरप्रेन्योरशिप)

ऐसे व्यक्ति जो किसी कारणवश स्कूली शिक्षा के बाद या स्कूली शिक्षा के दौरान अपना अध्ययन आगे जारी नहीं रख पा रहे हैं वे चाहे तो आजीविका के लिए अपना स्वयं का उद्यम या व्यवसाय प्रारंभ कर सकते हैं या चाहें तो अपने परिवार के व्यवसाय से भी जुड़ सकते हैं।

स्वयं का उद्यम स्थापित करने के लिए किसी विशेष अध्ययन की आवश्यकता नहीं है। जरूरत है तो बस इस बात की कि अपने अंदर ऐसी तीव्र इच्छा या जूनून हो कि स्वयं का व्यवसाय स्थापित करें और दूसरों को भी रोज़गार के अवसर प्रदान कर सकें। यह एक सृजनात्मक कार्य है। प्रारंभ में स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ करने के लिए धन, समय, तकनीकी ज्ञान, कार्य के प्रति समर्पण की भावना, सामाजिक मेल-मिलाप और जोखिम उठाने सम्बन्धी प्रवृत्ति भी होनी चाहिए। इन सबका लाभ देर-सबेर आर्थिक प्रतिफल के रूप में प्राप्त होता है। स्वरोजगार से जुड़कर वे न केवल अपना व अपने परिवार का पालन-पोषण करते हैं बल्कि अन्य बेरोजगार युवाओं को भी रोजगार देने में समर्थ होते हैं।

स्वयं के लिए व्यवसाय का चयन कैसे करें यह प्रश्न भी प्रायः सभी को परेशान करता है। इसके लिए -

1. उस व्यवसाय सम्बन्धी बाजार की मांग को देखते हुए व्यावसायिक अवसरों की पहचान करें।
2. भूमि, भवन सम्बन्धी आधारभूत सुविधाओं पर विचार करना होगा। लघु उद्यम के लिए किसी शेड का चयन किया जा सकता है जहाँ बिजली, सड़क, पानी आदि की आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध हों।
3. कार्यस्थल ऐसी जगह हो जहाँ कच्चे माल के स्रोतों की निकटता, मूलभूत सुविधाओं एवं कुशल कार्यकर्ताओं की उपलब्धता हो।
4. मशीन एवं उपकरणों की लागत को भी ध्यान में रखना होगा।
5. उद्यम प्रारंभ करने के लिए एक विश्वसनीय टीम जुटाना होगी, जिसमें कुशल (प्रशिक्षित), अकुशल (अप्रशिक्षित) कर्मचारी शामिल होंगे।
6. सबसे महत्वपूर्ण बात है पूंजी की व्यवस्था करना।

मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना में यह लागत अधिकतम 10 लाख निश्चित की गई है एवं मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना में यह सीमा दो करोड़ तक निर्धारित की गई है। इस पूंजी को किसी भी वित्तीय संस्था से ऋण लेकर प्राप्त किया जा सकता है।

वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मध्यप्रदेश सरकार व भारत सरकार द्वारा संचालित विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं की जानकारी आगे दी जा रही है-

# स्वरोजगार योजनाएँ

| योजना का नाम | क्षेत्र | परियोजना लागत | प्रमुख योग्यताएँ |
|---|---|---|---|
| मुख्यमंत्री आर्थिक कल्याण योजना | उद्योग (विनिर्माण)/ सेवा/व्यवसाय | अधिकतम रू. 50 हजार मार्जिन मनी सहायता निम्नानुसार होगी -<br>• परियोजना लागत का 50 प्रतिशत या<br>• अधिकतम रूपये 15000/- | • मध्यप्रदेश का मूल निवासी हो।<br>• आवेदन दिनांक को आयु 18 से 55 वर्ष के मध्य हो।<br>• शैक्षणिक योग्यता का बंधन नहीं।<br>• बीपीएल होना चाहिए। (केश शिल्पी, स्ट्रीट वेण्डर, हाथ ठेला चालक, सायकल रिक्शा चालक, कुम्हार आदि) |
| मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना | उद्योग (विनिर्माण)/ सेवा/व्यवसाय | रूपये 50 हजार से 10 लाख तक। मार्जिन मनी सहायता निम्नानुसार होगी -<br>• सामान्य वर्ग हेतु 15 प्रतिशत (अधिकतम रूपये एक लाख)<br>• बी.पी.एल./अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति/ अन्य पिछड़ा वर्ग (क्रीमीलेयर को छोड़कर)/महिला/अल्प संख्यक / निःशक्तजन हेतु 30 प्रतिशत (अधिकतम रू. 2 लाख)<br>• इस योजना के अन्तर्गत परियोजना लागत पर 5 प्रतिशत की दर से (अधिकतम रू. 2 लाख) ब्याज अनुदान अधिकतम 7 वर्ष तक देय होगा। | • मध्यप्रदेश का मूल निवासी हो।<br>• शिक्षा न्यूनतम 5वीं कक्षा उत्तीर्ण हो।<br>• आवेदन दिनांक को आयु 18 वर्ष से 45 वर्ष के मध्य हो।<br>• किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक/ वित्तीय संस्था/ सहकारी बैंक का चूककर्ता (Defaulter) न हो।<br>• यदि कोई व्यक्ति किसी शासकीय उद्यमी/ स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत सहायता प्राप्त कर रहा हो, तो इस योजना के अन्तर्गत पात्र नहीं होगा।<br>• व्यक्ति सिर्फ एक बार ही इस योजना के अन्तर्गत सहायता के लिए पात्र होगा। |
| मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना | उद्योग एवं सेवा | रूपये 10 लाख से 200 लाख तक<br>• इस योजना के अन्तर्गत परियोजना लागत न्यूनतम रूपये 10 लाख से अधिकतम रूपये एक करोड़ होगी। | • मध्यप्रदेश का मूल निवासी हो।<br>• न्यूनतम 10वीं कक्षा उत्तीर्ण हो।<br>• आवेदन दिनांक को आयु 18 से 40 वर्ष के मध्य हो।<br>• आय का कोई बंधन नहीं परन्तु आवेदक का परिवार पहले से ही उद्योग व व्यापार |

| योजना का नाम | क्षेत्र | परियोजना लागत | प्रमुख योग्यताएँ |
|---|---|---|---|
| | | • इस योजना के अन्तर्गत परियोजना की पूंजीगत लागत पर मार्जिन मनी सहायता 15 प्रतिशत (अधिकतम रूपये 12 लाख) देय होगी।<br>• बीपीएल के लिए परियोजना की पूंजीगत लागत पर मार्जिन मनी सहायता 20 प्रतिशत (अधिकतम रूपये 18 लाख) देय होगी।<br>• इस योजना के अन्तर्गत परियोजना की पूंजीगत लागत पर 5 प्रतिशत की दर से अधिकतम 7 वर्ष तक ब्याज अनुदान देय होगा।<br>• इस योजना के अन्तर्गत गारंटी शुल्क प्रचलित दर पर अधिकतम 7 वर्ष तक देय होगा। | क्षेत्र में स्थापित होकर आयकर दाता न हो।<br>• किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक/ वित्तीय संस्था/ सहकारी बैंक का चूककर्ता/(Defaulter) नहीं होना चाहिए।<br>• यदि कोई व्यक्ति किसी शासकीय उद्यमी/ स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत सहायता प्राप्त कर रहा हो, तो इस योजना के अन्तर्गत पात्र नहीं होगा।<br>• व्यक्ति सिर्फ एक बार ही इस योजना के अन्तर्गत सहायता के लिए पात्र होगा।<br>• योजना केवल उद्योग/ सेवा क्षेत्र के लिए ही होगी।<br>• व्यापारिक गतिविधियों को पात्रता नहीं होगी।<br>• आरंभिक स्थगन (Moratorium) की न्यूनतम अवधि 6 माह होगी। |
| मुख्यमंत्री कृषक उद्यमी योजना | उद्योग, सेवा एवं व्यापार सभी प्रकार की परियोजनाएं पात्र होंगी | रूपये 50 हजार से 200 लाख तक<br>मार्जिन मनी सहायता निम्नानुसार होगी -<br>• इस योजना के अन्तर्गत परियोजना लागत न्यूनतम रूपये 50 हजार से अधिकतम रूपये दो करोड़ होगी।<br>• इस योजना के अन्तर्गत परियोजना की पूंजीगत लागत पर मार्जिन मनी सहायता 15 प्रतिशत (अधिकतम रूपये 12 लाख) देय होगी। | • मध्यप्रदेश का मूल निवासी हो।<br>• न्यूनतम 10वीं कक्षा उत्तीर्ण हो।<br>• आवेदन दिनांक को आयु 18 से 45 वर्ष के मध्य हो।<br>• आय का कोई बंधन नहीं परन्तु आवेदक का परिवार पहले से ही उद्योग व व्यापार क्षेत्र में स्थापित होकर आयकर दाता न हो।<br>• किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक/ वित्तीय संस्था/ सहकारी बैंक का चूककर्ता/(Defaulter) नहीं होना चाहिए। |

| योजना का नाम | क्षेत्र | परियोजना लागत | प्रमुख योग्यताएँ |
|---|---|---|---|
| | | • इस योजना के अन्तर्गत परियोजना की पूंजीगत लागत पर मार्जिन मनी सहायता 15 प्रतिशत (अधिकतम रूपये 12 लाख) देय होगी।<br>• बीपीएल के लिए परियोजना की पूंजीगत लागतपर मार्जिन मनी सहायता 20 प्रतिशत (अधिकतम रूपये 18 लाख) देय होगी।<br>• इस योजना के अन्तर्गत परियोजना की पूंजीगत लागत पर 5 प्रतिशत की दर से अधिकतम 7 वर्ष तक ब्याज अनुदान देय होगा।<br>• इस योजना के अन्तर्गत गारंटी शुल्क प्रचलित दर पर अधिकतम 7 वर्ष तक देय होगा। | • किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक/ वित्तीय संस्था/ सहकारी बैंक का चूककर्ता/(Defaulter) नहीं होना चाहिए।<br>• यदि कोई व्यक्ति किसी शासकीय उद्यमी/ स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत सहायता प्राप्त कर रहा हो, तो इस योजना के अन्तर्गत पात्र नहीं होगा।<br>• व्यक्ति सिर्फ एक बार ही इस योजना के अन्तर्गत सहायता के लिए पात्र होगा।<br>• आरंभिक स्थगन (Moratorium) की न्यूनतम अवधि 6 माह होगी। |

| प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम | उद्योग एवं सेवा | उद्योग – अधिकतम रूपये 25 लाख<br>सेवा – अधिकतम रूपये 10 लाख<br>मार्जिन मनी सहायता निम्नानुसार होगी – | | | | • 18 वर्ष से अधिक<br>• विनिर्माण क्षेत्र में 10 लाख रूपये अधिक लागत की परियोजना और सेवा क्षेत्र में 5 लाख रूपये से अधिक की परियोजना के लिए शैक्षणिक योग्यता के तौर पर लाभार्थी को आठवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।<br>• सोसायटी रजिस्ट्रेशन अधिनियम 1860 के तहत पंजीकृत संस्थान।<br>• उत्पादक कोऑपरेटिव सोसायटी और चैरिटेबल ट्रस्ट |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | पीएमईजीपी के तहत लाभार्थियों की श्रेणी | लाभार्थियों का योगदान (परियोजना की लागत में) | सब्सिडी की दर (परियोजना की लागत के हिसाब से) | | |
| | | क्षेत्र परियोजना (ईकाई का स्थान) | | शहरी | ग्रामीण | |
| | | सामान्य श्रेणी | 10% | 15% | 25% | |
| | | विशेष<br>अनु.ज.जा./अनु. जा/अ.पि.व./ महिलाएं/अल्प संख्यक आदि | 5% | 25% | 35% | |

## मध्यप्रदेश की स्वरोजगार योजना को संचालित करने वाले प्रमुख विभाग

यदि आप अपना स्वयं का उद्यम प्रारंभ करना चाहते हैं तो जिले में निम्न विभागों से सम्पर्क कर सकते हैं। जिस जिले में आप अपना उद्यम स्थापित करना चाहते हैं उस जिले का आपके पास निवास प्रमाण पत्र होना आवश्यक है।

| विभाग का नाम | जिले में पदस्थ अधिकारी |
|---|---|
| सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग | महाप्रबन्धक<br>जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र |
| नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग | परियोजना अधिकारी |
| मध्यप्रदेश के राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन | सीईओ जनपद पंचायत कार्यालय |
| अनुसूचित जाति कल्याण विभाग | सीईओ/क्षेत्राधिकारी<br>अनुसूचित जाति कल्याण विभाग |
| खादी ग्रामोद्योग बोर्ड | सहा.संचालक/ग्रामोद्योग अधिकारी |
| हथकरघा एवं हस्तशिल्प संचालनालय | सहायक संचालक<br>हथकरघा एवं हस्तशिल्प कार्यालय |
| आदिम जाति कल्याण विभाग | जिला संयोजक/सहायक आयुक्त<br>आदिवासी विकास |
| मध्यप्रदेश पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास निगम | सहायक संचालक<br>पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विभाग |
| विमुक्त घुमक्कड़ एवं अर्द्ध घुमक्कड़ जन जातीय कल्याण विभाग | सहायक संचालक |
| किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग | उप संचालक/सहायक संचालक |
| उद्यानिकी विभाग | उप संचालक/सहायक संचालक |
| पशुपालन विभाग | उप संचालक/सहायक संचालक |
| मत्स्य पालन विभाग | उप संचालक/सहायक संचालक |

# परियोजना प्रपत्र (प्रोजेक्ट रिपोर्ट)

कोई भी उद्यम स्थापित करते समय परियोजना प्रपत्र प्रोजेक्ट रिपोर्ट प्रस्तुत करना अनिवार्य है। किसी वित्तीय संस्थान या बैंक से ऋण प्राप्त करने के लिए प्रोजेक्ट रिपोर्ट अनिवार्य है। मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत अधिकतम 10 लाख रूपये तक के ऋण प्रकरण बनाए जाते हैं जिसमें प्रोजेक्ट रिपोर्ट का फॉर्मेट दिया रहता है किन्तु यदि मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना के अन्तर्गत ऋण प्रकरण बनाया जाए तो इसके लिए किसी भी चार्टर्ड अकाउण्टेंट से प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनवाना अनिवार्य है।

इसके बाद प्रोजेक्ट की सारी गतिविधियों तथा आवश्यक संसाधनों का उल्लेख करते हुए एक व्यावहारिक विवरण बनाना होगा। इस व्यावहारिक विवरण में निम्नलिखित बिन्दुओं को शामिल किया जाता है -

- उद्यमी/उद्यमियों की पृष्ठभूमि तथा व्यवसाय का गठन/प्रकृति
- बाजार संभावना तथा विपणन नीति
- स्थान का चयन
- भूमि व भवन की जरूरत का निर्धारण
- उत्पादन प्रक्रिया
- मशीन की जरूरत
- कच्चे माल की आवश्यकता का निर्धारण
- परियोजना की अनुमानित लागत
- उत्पादन की लागत तथा लाभांश वित्तीय व्यवस्था
- सम विच्छेद बिन्दु (ब्रेक इवन पॉइंट)।

उपरोक्त परियोजना प्रपत्र के बाद ही किसी भी वित्तीय संस्थान या बैंक से ऋण प्राप्त होता है। ऋण प्राप्त करने के बाद स्वयं का उद्यम स्थापित किया जा सकता है।

# उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ईडीपी)

युवाओं को उद्यमिता व स्वरोजगार से जोड़ने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अन्तर्गत उद्योग व व्यवसाय की स्थापना, संचालन एवं प्रबन्धन के बारे में संबंधित विषय-विशेषज्ञों द्वारा हितग्राहियों को प्रशिक्षित किया जाता है। मध्यप्रदेश में यह प्रशिक्षण निसबड, इडीआय, सेडमैप, एमपीकॉन, रूडसेटी, क्रिस्प आदि संस्थाओं द्वारा दिया जाता है जो सामान्यतः 6 से 8 सप्ताह का होता है। यह प्रशिक्षण सिडबी, नाबार्ड, स्टेट बैंक, डीएसटी, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित है।

## उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ईडीपी) का महत्व

- रोजगार के अवसरों का सृजन
- उद्यमी बेरोजगारी की समस्या को कम करने में मदद
- पूंजी निर्माण
- जीवन गुणवत्ता में सुधार
- संतुलित क्षेत्रीय विकास
- स्थानीय संसाधनों का उपयोग
- प्रति व्यक्ति आय में सुधार
- सामाजिक संतुलन की स्थापना
- समग्र विकास में सहायता

## उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ईडीपी) में सहयोग संस्थाएँ -

- निसबड, भारत सरकार, नोयडा
- एनएसटीईडीबी, भारत सरकार
- सिडबी, भारत सरकार
- नाबार्ड, भारत सरकार
- ईडीआई, अहमदाबाद
- सेडमैप, भोपाल
- एमपीकॉन, भोपाल
- क्रिस्प, भोपाल
- आरसेटी प्रत्येक जिले में केन्द्र की उपलब्धता
- रूडसेटी, भोपाल
- नव उद्यमी परिसंघ, भोपाल
- जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र, मध्यप्रदेश शासन

## संभावित लघु उद्यम भाग - 01

| क्षेत्र | क्षेत्र |
|---|---|
| फूड प्रोसेसिंग उद्योग | साफ्ट ड्रिंक्स, मिनरल वाटर निर्माण |
| पेपर एवं पल्प | टेक्सटाइल |
| एग्रीकल्चरल मशीनरी | टिम्बर |
| वेजिटेबल ऑयल्स एवं वनस्पति | सीमेंट एवं जिप्सम उत्पाद |
| एग्रीकल्चर प्रोसेसिंग इकाई | लेदर, लेदर उत्पाद एवं पिकर्स |
| प्रेशियस एवं सेमी-प्रेशियस स्टोंस/आभूषण | पी.वी.सी., प्लास्टिक के बैग्स, बॉक्सेस, कंटेनर्स |
| ऑफिस एवं घरेलू उपकरण | इलेक्ट्रिकल उपकरण |
| प्लास्टिक मोल्डेड उत्पादन | पोलीथीलीन पाइप ग्रेन्यूल्स एवं पाउडर |
| इंडस्ट्रियल मशीनरी | मेडिकल एवं सर्जिकल उपकरण |
| व्हीकल उपकरण | अगरबत्ती उत्पादन |
| रीसाइक्लिंग हेतु मशीनरी | वाइट कोल इंडस्ट्री |
| वैक्स उत्पादन | कृत्रिम बालू उत्पादन |
| केमिकल | कॉस्मेटिक्स, साबुन एवं टॉयलेट्स उत्पाद |
| इंडस्ट्रियल उपकरण | रबर उत्पाद |
| सीड निर्माण | बोरी बुनाई |
| मूंगफली के बीज का निर्माण | फ्रेम्स निर्माण |
| कृत्रिम दाँत निर्माण | टी.पाउच पैकिंग |
| डोलोमाइट पावडर निर्माण | फार्गो मशीन निर्माण |
| अलमीरा एवं कूलर उत्पादन | बैग उत्पादन |
| बेकरी | बैटरी निर्माण एवं रिपेयरिंग |
| फ्लाई एश ब्रिक्स | ब्राउन शुगर मिल्स |
| स्टोन क्रेशर | फ्रेब्रिकेशन |
| इलेक्ट्रिकल गुड्स | आटा मिल्स |
| फूड प्रोसेसिंग इकाई | फर्नीचर निर्माण |
| फुटवियर निर्माण | हाईड्रोलिक पाइप्स |
| गिलास कटाई | हार्ड क्रोम प्लेटिंग |
| हर्बल आयल निर्माण | आइसक्रीम उत्पादन |

| क्षेत्र | क्षेत्र |
|---|---|
| आयरन नेल उत्पादन | अगरबत्ती उत्पादन |
| एसेंस उत्पादन | जूट बैग उत्पादन |
| किचन टूल्स एवं क्लोथ्स | पत्तों के प्लेट्स का निर्माण |
| आयल मेकिंग यूनिट | आयल पोलिश उत्पादन |
| आर्गेनिक फर्टिलाइज़र | मार्बल कटाई |
| गद्दों का निर्माण | पैकेज्ड पेय जल |
| पेवर एवं टाइल्स | पैकेजिंग मटेरियल उत्पादन |
| पापड़ उत्पादन | पेट उत्पाद |
| प्लास्टिक उत्पाद | फिनाइल उत्पादन |
| प्लास्टिक ग्रेन्यूल्स निर्माण | पाउडर कोटिंग/फर्नीचर |
| पाइप उत्पादन | दाल मिल |
| आर.सी.सी. पाइप्स उत्पादन | रेडीमेड गारमेंट्स |
| पी.वी.सी. पाइप्स | राइस मिल |
| रबर वॉशर | स्नेक्स उत्पादन |
| रस्सी उत्पादन | जूता निर्माण |
| मसाले निर्माण | स्पोर्ट्स गुड्स निर्माण |

**भाग - 02**

| क्षेत्र | क्षेत्र |
|---|---|
| वेयर हाउसिंग सर्विसेज | कंस्ट्रक्शन मशीनरी एण्ड पार्ट्स |
| लीजिंग एंडरेंटल सर्विसेजस | सिक्यूरिटी गार्ड एंड हाउस कीपिंग सर्विसेज |
| गेमिंग एंड एंटरटेनमेंट जोन | मेंटेनेंस, रिपेयर एंड सर्विसेज |
| होटल एंड रेस्टोरेंट सर्विसेज | एग्रीकल्चर सर्विसेज प्रोसेसेज |
| आर्किटेक्चरल इंजीनियरिंग एंड अदर कंसल्टेशन सर्विसेज | फिल्म, विडियो, एडवरटाइजिंग, डेकोरेटिव इंडस्ट्री सर्विसेज |
| लैटर प्रेस प्रिंटिग | लेथ वर्क्स |
| प्रोसेसिंग ऑफ स्क्रैप | पेपर एंड कार्ड बोर्ड कटाई |
| प्रोसेसिंग एंड ग्रेडिंग ऑफ सैंड | ऑटोमोबाइल वर्कशॉप |

| क्षेत्र | क्षेत्र |
|---|---|
| एग्रीकल्चरल इक्विपमेंट | बोरेवेल ड्रिलिंग मशीन |
| एसी रिपेयर | ब्यूटी पार्लर |
| केबल टीवी | ट्रांसपोर्ट (बस) |
| बुटीक | कॉल सेंटर |
| कम्प्यूटर एजुकेशन | सिविल कंस्ट्रक्शन |
| सीसीमिक्सचर प्लांट | सेंटिंग/शटरिंग सर्विसेज फॉर कंस्ट्रक्शन |
| सीटी स्कैन मशीन | ड्रिलिंग मशीन |
| अर्थ मूविंग यूनिट | इलेक्ट्रिकल गुड्स |
| इवेंट मैनेजमेंट | इलेक्ट्रिकल सर्विसेज |
| गैस एजेंसी | फिटनेस सेंटर (जिम) |
| जनरेटर एंड लाइट्स | ग्रेडिंग प्लांट |
| हार्वेस्टर | हॉस्पिटल |
| होटल | हाईवे ट्रांसपोर्ट |
| आईटी इक्विपमेंट सप्लाई | जेसीबी |
| लांड्री | मैरिज गार्डन |
| मेट्रेस निर्माण | मेडिकल स्टोर |
| मोबाइल शॉप | पेथोलोजी लैब |
| पैकर्स एंड मूवर्स | ड्रेस पेंटिंग/डिजाइनिंग |
| फोटो स्टूडियो | पेस्ट कण्ट्रोल |
| फोटो कॉपी एंड स्टेशनरी | फिजियोथेरेपी सेंटर |
| प्रिंटिंग | पंप इंजेक्टर |
| रेस्टारेंट | रोस्टर मशीन |
| टेंट हाउस | ट्रेक्टर हार्वेस्टर |
| ट्रक ट्रांसपोर्ट | टू व्हीलर शोरूम |
| टायर रिमोल्डिंग | अल्ट्रासाउंड क्लिनिक |
| वेस्ट मैनेजमेंट | वेयरहाउस |
| | |

## भाग - 03 (ग्रामीण उद्यम)

| उद्यम का नाम | संभावित लागत रूपये (लाख में) |
|---|---|
| राखी बनाना | 2.00 |
| आलू चिप्स व सेव बनाना | 5.00 |
| दोना पत्तल निर्माण | 2.00 |
| मसाला निर्माण | 3.00 |
| लहंगा चुनरी | 3.00 |
| हर्बल कलर | 9.00 |
| श्रृंगार प्रसाधन | 5.00 |
| कागज के कप व प्लेट बनाना | 6.00 |
| अगरबत्ती व इसकी काड़ी बनाना | 3.00 |
| दुग्ध उत्पाद | 10.00 |
| मिनी टेंट हाउस | 9.00 |
| ड्रेस मेकिंग | 8.00 |
| बेसन और दलिया निर्माण | 3.00 |
| बांस के सजावटी सामान बनाना | 2.00 |
| पटाखे बनाना | 8.00 |
| ब्यूटी क्लीनिक | 5.00 |
| होजयरी वस्त्र | 5.00 |
| मिनी राइस मिल | 8.00 |
| फ्लोर मिल इकाई | 7.00 |
| हैण्ड मेड पेपर | 9.00 |
| डिस्पोजेबल कप एवं ग्लास | 8.00 |
| मिनी ऑयल मिल | 3.00 |
| पशु आहार निर्माण | 5.00 |
| टमाटर सॉस | 3.00 |
| सीमेंट के ईट निर्माण | 8.00 |
| | |
| | |

## मार्गदर्शन

- डॉ. निलेश देशपांडे, राज्य कार्यक्रम समन्वयक, यू एन एफ पी ए, मध्यप्रदेश
- श्रीमती अंजली अग्रवाल, निदेशक,  भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इन्दौर, मध्यप्रदेश
- श्री जावेद शेख, कन्सलटेंट, जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम, यू एन एफ पी ए, मध्यप्रदेश

## लेखन सहयोग

- डॉ अरुणा शास्त्री, विषय विशेषज्ञ, इन्दौर, मध्यप्रदेश
- सुश्री ज्योति भाटिया, विषय विशेषज्ञ
- श्री संदीप मेहतो, विषय विशेषज्ञ, भारत कोचिंग प्रा.लि., इटारसी, होशंगाबाद, मध्यप्रदेश
- श्री अरविंद कुमार जोशी, विषय विशेषज्ञ, इंदौर, मध्यप्रदेश
- श्री विनय वर्मा, उद्यमिता विशेषज्ञ, म.प्र. राज्य कौशल विकास एवं रोजगार निर्माण बोर्ड, भोपाल, मध्यप्रदेश
- डॉ ज्योति शिपणकर, सीनियर कन्टेंट डेवलपर व ट्रेनिंग फेसिलीटेटर, भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इन्दौर, म.प्र.
- सुश्री शिखा बोहरा, कन्टेंट डेवलपर व ट्रेनिंग फेसिलीटेटर, भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इन्दौर, मध्यप्रदेश
- श्री राहुल पटेल, मानिटरिंग ऑफिसर, भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इंदौर, मध्यप्रदेश

## चित्रांकन

- श्री इंद्रजीत सिन्हा, वे फाउंडेशन, आसाम

संस्करण : प्रथम, 2018

प्रतियाँ : 20,000

प्रकाशन : भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इन्दौर

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष

**यू एन एफ पी ए**
मध्यप्रदेश

**भारतीय ग्रामीण महिला संघ**
इंदौर, मध्यप्रदेश